श्री गणेश सहस्रनाम

श्री गणेश सहस्रनाम

(हिन्दी अनुवाद सहित)

श्री गणेश कौन है ? दीपावली पर लक्ष्मी पूजन से पूर्व गणेश पूजन क्यों ? श्री गणेश के 1000 नामों की गणना अर्थात् गणेश नामावली और सहस्रनाम पाठ विधि, सर्वप्रथम पूजन क्यों ? गणेश तत्व व गणेश चतुर्थी आदि विविध रहस्यों सहित ।

संग्रहकर्ता एवं अनुवादक
पं. गोविन्द दत्त शर्मा

आहूजा प्रकाशन
गांधी नगर, दिल्ली-110031

प्रकाशक :

आहूजा प्रकाशन, दिल्ली-110031

विक्रय केन्द्र :

महाबीर मार्केट, दूसरी मंजिल

1529, नई सड़क, दिल्ली-110006

फोन : 23271214

प्रशासनिक कार्यालय :

623, रघुबरपुरा नं० 1, निकट कार्पोरेशन स्कूल,

गांधी नगर, दिल्ली-110031

फोन : 22079729 फैक्स : 22077351

मूल्य : 25.00

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

फास्ट ट्रेक कम्प्यूटर सिस्टम ✆ 2201299

मुद्रक :

निवेदन,

जो सज्जन धर्म प्रचार हेतु पुस्तकें मन्दिरों तथा उत्सवों में बाँटना चाहें वह प्रकाशक से सम्पर्क करें ! उन्हें पुस्तकें लागत मात्र मूल्य पर दी जायेंगी ।

प्रकाशक

पाठकों का आह्वान

प्रिय पाठकों ! भारतीय संस्कृति आराधना प्रधान है । आस्तिकता यहाँ का आधार है । इस मूल तत्व को 'रुचीनां वैचित्र्यात' अनेक नामों और रूपों में अपने-अपने मन में प्रतिष्ठित करते हुए, क्रमशः अनेक जन्मार्जित अविद्या को मिटाते जाना । अपने मूल तत्व को जान लेना और 'जानत तुमहि तुमहि होइ जाई' की चरम उपलब्धि पा जाना ही जीवन की सफलता है ।

आराधना की ग्रन्थ राशि में गणेश पुराणान्तर्गत गणेश सहस्त्रनाम स्तोत्र हैं । इसके उच्चारण एवं पाठ से कल्याण परम्पराएँ जीवमात्र को प्राप्त होती हैं । इसका एक-एक श्लोक मन्त्र है । प्रत्येक श्लोक का जप होम होता है । सम्पूर्ण भारत इस सहस्त्रनाम द्वारा ओतप्रोत है, विशेषकर उत्तर भारत तथा महाराष्ट्र में यह घर-घर पाठ की वस्तु है । गणेश चतुर्थी व नवरात्रि आदि अर्चनावसरों पर भक्तजनों का यह परम अवलम्ब है ।

विधि-विधान पूर्वक श्री गणेश की आराधना एवं पूजन प्रकार का ज्ञान भलीभांति इस पुस्तक द्वारा हो सकता है ।

यह पुस्तक हिन्दी टीका सहित होने से गणेश आराधना करने वाले साधारण पाठकों, साधकों, गणेश तत्वान्वेषकों, पुरोहितों के लिए उपयोगी है । पूजन प्रयोग में सस्वर होने से सहस्त्र गणेश आदि के वैदिक तथा पौराणिक मन्त्रों का उल्लेख होने से विशिष्ट यज्ञ-यागादि कराने वाले वैदिक

कर्मकाण्डियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है ।

इसका संशोधन-सम्पादन तथा अनुवाद कार्य भी विशेष सावधानी पूर्वक किया है फिर भी मानव-दोष से सम्भावित त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ । यह पुस्तक मैंने विशुद्ध संशोधन-सम्पादन एवं आकर्षक मुद्रण के साथ प्रकाशित की है ।

इसके सम्पादन में मुझे जिन ग्रन्थों से सहायता मिली है उन ग्रन्थ सम्पादकों एवं प्रकाशकों का भी मैं आभारी हूँ इसमें सम्मति प्रदान करने वाले विद्वानों सन्त-महात्माओं का भी मैं आभारी हूं । जिन्होंने इस पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ाने में मुझे पूर्ण सहयोग दिया ।

अन्ततः मैं सभी सहयोगियों एवं बुर्जुगों के आशीर्वाद से यह कार्य पूर्ण कर सका हूँ । मैं यह भेंट समर्पित कर स्वयं को कृतज्ञ मानता हूँ ।

लेखक, संग्रहकर्ता एवं अनुवादक
पं. गोविन्द दत्त शर्मा

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
श्री गणेश पूजन सर्वप्रथम क्यों ?	7
श्री गणेश पूजन का क्या कारण है ?	9
श्री गणेशजी का स्वरूप गजानन के रूप में ही क्यों ?	10
देवों के देव श्री गणेश जी परमात्मा स्वरूप हैं	12
श्री गणेश जी का परिवार परिचय	14
स्वास्तिक का क्या रहस्य है ?	17
दीपावली पर लक्ष्मी पूजन से पहले गणेश पूजन का क्या कारण है ?	19
श्री गणेश-पूजन विधि	20
श्री गणपति सहस्रनाम स्तोत्रम्	42
श्री गणपति सहस्रनामावली	121
गणेश चतुर्थी क्यों मनाई जाती है ?	142
गणेश चतुर्थी व्रत का फल	143
व्रत-उपवास की विधि	144
बारहमासी गणेश चौथ व्रत कथा	146
विघ्ननाशक गणपति स्तोत्र	160
पुत्र प्राप्ति के लिए गणपति स्तोत्र	161
लक्ष्मी प्राप्त करने के लिए गणपति स्तोत्र	162
श्री गणेश चालीसा	164
श्री गणेश जी की आरती	168

श्री गणेश पूजन सर्वप्रथम क्यों ?

श्री गणेश जी देवताओं में सर्वप्रथम पूजनीय हैं । इसके पीछे अनेक पौराणिक कथाएँ मिलती हैं । कहीं शिवजी ने ऐसा वर दिया है तो कहीं विष्णु भगवान ने ।

देवताओं में अग्रगण्य होने का वर उन्हें पिताश्री शंकर भगवान ही ने तो दिया है ।

एक बार देवताओं में परस्पर विचार-विमर्श हो रहा था कि सर्वप्रथम पूजा किसकी होनी चाहिए । सभी ने निश्चय किया कि ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करके जो सबसे पहले लौटेगा उसी को सबसे पहले पूजनीय माना जाएगा । यह निश्चय होते ही सभी देवगण अपने-अपने वाहनों पर सवार होकर चल दिये । कोई भैंसे पर, कोई सिंह पर, कोई अश्व पर, कोई उल्लू पर तो कोई मोर पर । गणेश जी भी अपने चूहे पर सवार होकर चल दिये । उनके माता-पिता शिव-पार्वती कैलाश पर्वत पर विराजमान थे । गणेश जी वहीं पहुंचे और उनकी परिक्रमा करने लगे । जब देवता ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करके लौटे तो गणेश जी को वहीं पर पहले से उपस्थित पाया ।

जब इसका रहस्य पूछा गया तो गणेश जी ने बताया कि मैंने तो महादेव शंकर जी और माँ पार्वती की परिक्रमा को ब्रह्माण्ड की परिक्रमा से बढ़कर माना है । भगवान शंकर ने इस बात का समर्थन किया और देवताओं ने भी इसे स्वीकार

कर लिया कि जब भी पूजा-पाठ या कोई भी अनुष्ठान हो तो गणेश जी की पूजा सर्वप्रथम की जायेगी ।

पुराणों में भी गणेश जी को विघ्न-विनाशक, मंगलदायक माना है । अतः सभी कार्यों व पूजा के समय उन्हीं की सर्वप्रथम पूजा की जाती है जिससे किये जाने वाले कार्य में कोई विघ्न न आ सके । बड़े-बड़े विद्वानों ने भी यह स्वीकार किया है । अतः गणेश पूजन सर्वप्रथम करना फलदायक है ।

श्री गणेश पूजन का क्या कारण है ?

'आद्यौ पूज्यो विनायकः'—इस उक्ति के अनुसार समस्त शुभ कार्यों के प्रारम्भ में गणेश जी की अग्र पूजा विशाल हिन्दू जाति में सुप्रसिद्ध और प्रचलित है। इसका बहुत ही सीधा-सादा संक्षिप्त उत्तर यही है कि भगवान श्री गणेश को प्रसन्न किये बिना कल्याण संभव नहीं। भले ही साधक के इष्टदेव भगवान विष्णु या भगवान शंकर या जगतपिता ब्रह्मा ही क्यों न हो। इन सभी देवी-देवताओं की उपासना की निर्विघ्न सम्पन्नता के लिए भी विघ्न-विनाशक श्री गणेश का पूजन स्मरण आवश्यक है। भगवान श्री गणेश की अद्भुत विशेषता यह है कि उनका स्मरण करते ही सब विघ्न बाधाएँ दूर हो जाती हैं। इसी कारण साधकजन प्रार्थना करते हैं—

वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभाः।
निर्विघ्न कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदाः॥

लोक-परलोक में सर्वत्र सफलता पाने का एकमात्र यही उपाय है। कार्य प्रारम्भ करने से पहले भगवान श्री गणेश का पूजन करना चाहिए।

श्री गणेशजी का स्वरूप गजानन के रूप में ही क्यों ?

श्री गणेश जी का स्वरूप गजानन के रूप में ही अधिकाशंतः प्रतिष्ठित है । हाथी जैसी सूँड, एक दाँत और चार हाथों वाला उनका रूप माना जाता है । भारत में अधिकांश हिन्दू इसी रूप में उनका ध्यान करते हैं । गणेशजी को पार्वती का पुत्र माना जाता है । उनके जन्म के संबंध में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं । जैसे–ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार जब उनका जन्म हुआ था तो शनि की दृष्टि पड़ने से उनका सिर कट गया था, जिस पर भगवान विष्णु ने एक हाथी का सिर काटकर उस बालक के सिर के स्थान पर जोड़ दिया

था । उपरोक्त पुराण में ही उनके एकदन्त हो जाने का वर्णन है । एक बार परशुरामजी शिव-पार्वती के दर्शन हेतु पधारे । कैलाश पार्वत पर शिव-पार्वती सो रहे थे, बाहर गणेश जी विराजमान थे । गणेश जी ने परशुरामजी को अन्दर जाने से रोक दिया । इस पर परशुराम जी को क्रोध आ गया और उन्होंने अपने फरसे से उनका दाँत काट डाला । तभी से वे एकदन्त हैं ।

अनेक देशों और अनेक धर्मों में गणेश जी को प्रथम पूज्य देवता माना जाता है । विवाह, भवन मुहूर्त आदि प्रत्येक मांगलिक कार्य में सर्वप्रथम गणपति पूजन करते हैं चाहे व्यक्ति किसी भी धर्म से सम्बन्धित हो । बौद्ध धर्म में श्वेत हाथी को पवित्र और पूजनीय माना जाता है । शैव, शाक्त, वैष्णव सभी सम्प्रदायों के हिन्दू सर्वप्रथम गणेश वंदना करते हैं । बर्मा, जावा, सुमात्रा, नेपाल, तिब्बत, चीन, भूटान, लंका, मारीशस में भी भगवान श्री गणेश जी की पूजा की जाती है ।

भगवान श्री गणेश की सवारी 'चूहा' माना जाता है । उनका प्रिय भोजन लड्डू है । उनको लड्डू का ही भोग लगाया जाता है ।

गणेश जी ऐसे देवता माने जाते हैं जो सभी कल्पों में उत्पन्न होते रहते हैं । प्रत्येक बार उनका जन्म भिन्न-भिन्न प्रकार से हुआ है । पुराणों में गणेशजी के जन्म के सम्बन्ध में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं । प्रत्येक युग में गणेश जी देवताओं में अग्रगण्य रहे हैं और सबसे पहले पूजा की जाती है ।

देवों के देव श्री गणेश जी परमात्मा स्वरूप हैं

गणेश शब्द का सन्धि विच्छेद करने पर गण-ईश दो शब्द होते हैं ।

गण शब्द का अर्थ है समूह और ईश का अर्थ है स्वामी ! अर्थात् गण का स्वामी । 'गण' है देवगण, देवताओं के सेवक । इसके अतिरिक्त गण के दो अक्षर 'ग' और 'ण' है जिनका विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है–'ग' ज्ञानार्थ वाचक और 'ण' निर्वाण वाचक है अर्थात् गणेश ज्ञान और निर्वाण के स्वामी हैं । यह परब्रह्म परमात्मा का पर्याय होता है ।

गणेश पुराण के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि गणेश परमात्मा स्वरूप हैं । उन्हीं से सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति हुई है । आदि मूल परमेश्वर का ही एक रूप श्री गणेश हैं । श्री गणेश के जन्म कथानकों के आधार पर भी उन्हें देवों का देव गणपति कहा जाता है ।

वेदमन्त्रों में ॐ शब्द महत्वपूर्ण है । ओ३म् का अर्थ है सच्चिदानन्द का विकसित रूप । सभी मन्त्रों में यह आदि अक्षर है । मूल शब्द ब्रह्म रूप है । गणेश की मूर्ति की रचना भी ॐ से हुई है ।

ॐ में प्रथम भाग उदर, मध्य भाग शुण्डाकार दण्ड, अर्धचन्द्र दन्त और बिन्दु मोदक का प्रतीक है । गणेश जी

की मूर्ति में जब ध्यान लगाते हैं तो मूर्ति का आनन हमें ॐ के आकार का लगेगा ।

वेदमन्त्रों में गणेश जी को गणपति कहा गया है । गण हमारी रजोगुणी, तमोगुणी और सतोगुणी वृत्तियों का समूह भी है । इन सबके स्वामी श्री गणेश जी ही हैं ।

इसी प्रकार गणेश जी गुणीश हैं । वे सब गुणों के ईश हैं । ईश्वर अपने गुण, ज्ञान और आनन्द के स्वरूप हैं । इन्हीं गुणों के ईश गणेश हैं । अतः साक्षात् ईश्वर हैं ।

समस्त दृश्य-अदृश्य विश्व का वाचक 'ग' तथा 'ण' अक्षर द्वारा जितना मन, वाणी और तत्व रहित जगत् है, सबका ज्ञान मन और वाणी द्वारा होता है । उसके स्वामी होने से गणेश जी सब देवों के देव हैं । देवों में अग्रगण्य हैं ।

गणेश जी ब्रह्म स्वरूप हैं । इसे निम्न उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है–

श्री गणेश जी की आकृति की जो कल्पना की गई है या उनका जो रूप पुराणों में दिया गया है उसके अनुसार उनका मुख गज के समान है । अतः उन्हें गजानन, गजपति कहते हैं । कंठ के नीचे का भाग मनुष्य जैसा है । इस प्रकार उनके शरीर में हाथी और मानव का सम्मिश्रण है ।

गज साक्षात् ब्रह्मा को कहते हैं योग द्वारा जब मुनि अन्तिम योगांग-समाधि को सिद्ध करते हैं तो उस स्थिति में वे जिसके पास पहुँचते हैं उसे 'ग' कहा जाता है । जिससे यह जगत् उत्पन्न होता है उसे 'ज' कहते हैं । दोनों अक्षरों से 'गज' बनता है । गज का अर्थ विश्व कारण होने से ब्रह्मा होता है । अतः गज ब्रह्म है तथा गणेश जी के कंठ के ऊपर का भाग ब्रह्म स्वरूप ही है ।

श्री गणेश जी का परिवार परिचय

गणेश जी के पिता—गणेश जी के पिता 'शिव' हैं । शिव का अर्थ है कल्याण तथा पुत्र विघ्ननाशक है । इसका रहस्य है कि शिव तत्व की प्राप्ति के लिए अनन्तर साधक के साधन मार्ग की समस्त विघ्न-बाधाएँ स्वतः ही नष्ट हो जाएँगी और विघ्न-बाधाओं के नष्ट होते ही साधक को अनन्त ऋद्धियाँ एवं सिद्धियाँ प्राप्त हो जाएँगी । शिव तत्व प्राप्त होने पर मायिक बन्धन रूपी विघ्नों के महाध्वंस गणेश का प्रादुर्भाव होगा ।

गणेश—विघ्नों का अंत ऋद्धि-सिद्धि—मंगल की प्राप्ति ।

दूसरा रहस्य यह है कि शिव तत्व को प्राप्त किये बिना—

१. माया एवं प्रपंच बन्धन रूपी विघ्नों से मुक्ति ।
२. मंगल प्राप्ति एवं
३. साधना में सिद्धि प्राप्ति । ये असंभव है क्योंकि पिता के बिना पुत्र का जन्म असम्भव है ।

गणेशजी की माता—पार्वती जी गणेश जी की माता हैं । पार्वती का अर्थ 'पर्ववती' है । तीन पर्व होते हैं । ज्ञान, इच्छा और क्रिया (त्रिपर्व) इन पर्वत्रयों में सामरस्य की प्रतिमूर्ति पार्वती जी हैं । पार्वती जी की भांति साधकों के भी

ज्ञान, इच्छा एवं क्रिया रूप पर्वत्रय में सामरस्य की स्थिति आने पर गणेश का जन्म होगा ।

गणेश जी के भ्राता—कार्तिकेय (षडानन) गणेश जी के बड़े भ्राता हैं । शिव के बड़े पुत्र हैं ।

षडानन अर्थात् पाँच इन्द्रियाँ और एक मन । भौतिक जगत् षडानन तक ही सीमित है और उनकी अन्तिम शक्ति सेना एवं सेनापति में प्रतिष्ठित है । देवता भोगी होते हैं, तपस्वी नहीं । अतः 'षडानन' से परे नहीं जा सकते । षडानन (५+१) देवों के सुरक्षा प्रहरी हैं । देवताओं में षडानन से परे जाने की क्षमता नहीं किन्तु गणेश षडानन से परे हैं । आध्यात्मिक शक्ति, आध्यात्म बल, बुद्धि के स्वामी हैं । वे बुद्धि के देवता हैं, देवों के अध्यक्ष हैं । प्रत्युत षडानन के छोटे होने पर भी उनके अग्रगण्य हैं ।

गणेश जी की पत्नियाँ—ऋद्धि, सिद्धि (बुद्धि) गणेश जी की पत्नियाँ हैं । इसका रहस्य यह है कि जब साधना क्षेत्र में शिव तत्व प्राप्ति के अनन्तर विघ्नों के नाशक गणेश बनने की क्षमता आ जाती है और तब सभी ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ साधक के लिए स्वपन्निवत् स्ववश्वर्तिनी हो जाती हैं ।

गणेश जी के पुत्र—गणेश के पुत्रों के नाम शुभ (क्षेम) एवं लाभ है । इसका रहस्य यह है कि साधना क्षेत्र में सनातन 'क्षेम' एवं सनातन 'लाभ' प्राप्त करने के लिए गणेश अर्थात् शिवपुत्र बनना ही पड़ेगा । अन्यथा 'क्षेम' एवं लाभ की प्राप्ति संभव नहीं है ।

पिता पंच आनन है, अग्रज षडानन है ।
स्वयं गज आनन है संकट निवारते ॥
गिरिजा के नन्दन हैं, पूज्य गजवन्दन हैं ।
भक्त उर चन्दन है, ऋद्धि-सिद्धि वारते ॥
मंगल-विधायक है, बुद्धि के प्रदायक हैं ।
महागण-नायक हैं, विघ्न-व्यूह टारते ॥
मोद को बढ़ाते, भक्त मोदक चढ़ाते ।
शुण्ड-दण्ड से उठाते, मुख-मण्डल में धारते ॥

स्वास्तिक का क्या रहस्य है ?

कई जगह अनुष्ठानों में वैदिक कर्मकाण्डियों से गणेश पूजन के समय स्वास्तिक पूजन का रहस्य जानने के लिए पूछा तो उन्होंने एक ही उत्तर दिया कि ऐसी ही परम्परा है। भगवान गणेश इस रूप में विराजमान होते हैं।

विशद अध्ययन के बाद स्वास्तिक का निम्न रहस्य पाया–

१. गणपति जल तत्व के अधिपति हैं। जल के चार गुण होते हैं–शब्द, स्पर्श, रूप तथा रस।

२. सृष्टि चार प्रकार की होती है–स्वेदज, अण्डज, उद्भिज और जरायुज।

३. जीवकोटि के पुरुषार्थ चार होते हैं–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

४. जग संचालक श्री गणेश ने देवता, मानव, नाग और असुर। इन चारों को स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में स्थापित किया। इसका संकेत स्वास्तिक का चतुर्भुज देता है।

५. गीता के अनुसार भगवान के भक्त चार प्रकार के होते हैं–'आर्तो, जिज्ञासुर, थार्थी और ज्ञानीय (७/१६)

भगवत्प्राप्ति भी चार प्रकार के साधन परमगुह्यरूप में गीता में प्रतिपादित है–

'मन्मना भव मद्भक्तों मद्याजी मां नमस्कुरु ।' (गीता १८/६५)

(क) मन से भगवतचिन्तन न करते हुए मन को भगवन्मय बनाना ।

(ख) भगवान में भक्ति रखना ।

(ग) भगवान की अर्चना करना ।

(घ) भगवान को नमस्कार करना ।

उक्त चार प्रकार के साधनों का संकेत स्वास्तिक की चार भुजाओं से मिलता है ।

६. गणेशजी के चार आयुध होते हैं–पाश, अंकुश, वरदहस्त तथा अभयहस्त । कहा जाता है कि पाश राग का, अंकुश क्रोध का संकेत है । अथवा यह भी समझ सकते हैं कि गणेश जी पाश द्वारा भक्तों के पाप समूहों तथा सम्पूर्ण प्रारब्ध का आकर्षण करके अंकुश से उनका नाश कर देते हैं । उनका वरदहस्त भक्तों की कामना पूर्ति का तथा अभयहस्त सम्पूर्ण भयों से रक्षा का सूचक है ।

७. गणेश जी ऐसे देवता हैं जो सभी कल्पों तथा चारों युगों में धनात्मक दृष्टि (बुद्धि विकास) हेतु उत्पन्न होते रहते हैं । इस प्रकार विनायक के चार हाथ, चतुर्विध सृष्टि, चतुर्विध पुरुषार्थ, चतुर्विध भक्त और चतुर्विध आयुध स्वास्तिक के प्रतीक हैं ।

दीपावली पर लक्ष्मी पूजन से पहले गणेश पूजन का क्या कारण है ?

दीपावली पर लक्ष्मी पूजन से पहले गणपति पूजन का विधान क्यों ? लक्ष्मी प्राप्त करने से पहले गणपति के समान गुण सम्पन्न बनना आवश्यक है । उनके कान बड़े हैं अर्थात् वे सबकी सुनते हैं अनके नेत्र छोटे हैं और लम्बी शुण्ड सूक्ष्म दृष्टि और ग्रहण शक्ति की प्रबलता की द्योतक है ।

गणेश जी का उदर विशाल है वे एकदन्त हैं अर्थात् उनके खाने और दिखाने के दाँत अलग-अलग नहीं हैं । वे दो भुजाओं से चार भुजाओं जितना श्रम करते हैं । मूषक उनका वाहन है इस प्रकार श्री गणेश के समान गुणों को धारण करने वाला व्यक्ति ही गणपति अर्थात् जननायक या नेतृत्व करने वाला एवं लक्ष्मी प्राप्त करने का अधिकारी बन सकता है ।

गणनायक गणेश जी के व्यक्तित्व की प्राप्ति हमारा लक्ष्य हो, श्रम तथा कर्मव्यनिष्ठा उसके उपकरण हों, यही दीपमालिका का पावन सन्देश है ।

श्री गणेश-पूजन विधि

उपासक स्नान आदि नित्यकर्म का सम्पादन करके शुद्ध एवं सुखद आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें । पूजक यदि गृहस्थ हो तो पूजन के समय अपनी पत्नी के साथ बैठकर पूजा करें । पूजन आरम्भ करने से पूर्व घी का दीपक जलाकर देवपीठ के दाहिने भाग में अक्षतपुञ्ज पर रखे औं **'ॐ दीपज्योतिषे नमः'** यह मन्त्र बोलकर गन्ध पुष्प से उसकी पूजा करें । फिर उस दीप में इष्टदेव के ज्योतिर्मय रूप की भावना करके इस प्रकार प्रार्थना करें–

भो दीप देवस्वरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्न कृत ।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥

हे दीप ! तुम देवता के रूप हो, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के निवारक हो । जब तक पूजा-कर्म पूर्ण न हो जाय तब तक तुम सुस्थिर भाव से सन्निकट रहो ।

तदन्तर पूर्वाभिमुख बैठा हुआ यजमान पत्नी के साथ निम्नांकित मन्त्रों को पढ़कर तीन बार आचमन करें–

ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः ।
ॐ माधवाय नमः ।

फिर **'ॐ हृषिकेशाय नमः'** कहकर हाथ धो लें और दाहिने हाथ में कुश की पवित्री धारण करें, साथ ही इस मन्त्र का पाठ करें–

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः

प्रसवउत्पुनाभ्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छाकेयम् ॥

इस प्रकार पवित्री धारण करने के बाद तीन बार प्राणायाम करें । तत्पश्चात्–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
'ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॥'

'कोई पवित्र हो, अपवित्र हो या किसी भी अवस्था को प्राप्त क्यों न हो, जो भगवान पुण्डरीकाक्ष का स्मरण करता है, वह बाहर-भीतर से पवित्र हो जाता है ।'

'सच्चिदानन्दघन पुण्डरीकाक्ष पवित्र करें ।' यह मन्त्र पढ़कर अपने ऊपर तथा पूजन-सामग्री पर जल छिड़कें । इसके बाद निम्न मंत्रों का पाठ करें–

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डापाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गुङ्गां भवानी मणिकणिकाम् ॥१॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥२॥
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥३॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥४॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥५॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥६॥
अभीप्सितार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ॥७॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमस्तु ते ॥८॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥९॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥१०॥
लाभस्तेषा जयस्तेषा कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामों हृदयस्थो जनार्दनः ॥११॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥१२॥
अनन्याश्रिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥१३॥
स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥१४॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धि ब्रह्मशानजनार्दना ॥१५॥

उपर्युक्त मांगलिक श्लोकों का भावार्थ इस प्रकार है– विश्वनाथ, माधव, ढुण्ढिराज गणेश, दण्डपाणि, भैरव,

काशी, गुहा, गङ्गा तथा भवानी मणिकर्णिका की मैं वन्दना करता हूँ ॥१॥ कोटि सूर्यों के समान महातेजस्वी, विशालकाय और टेढ़ी सूंडवाले गणपति देव ! आप सदा सब कार्यों में विघ्नों का निवारण करें ॥२॥ सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन—ये गणेश जी के बारह नाम हैं। जो मनुष्य विद्यारम्भ, विवाह, गृहप्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ और श्रवण करता है, उसके कार्यों में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है ॥३-५॥ शुक्लवस्त्र धारण करने वाले, चन्द्रमा के समान गौर, चार भुजाचारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव का ध्यान करें। इससे सम्पूर्ण विघ्नों की शान्ति हो जाती है ॥६॥ देवताओं और असुरों ने भी अभीष्ट मनोरथ की सिद्धि के लिए, जिनका पूजन किया है तथा जो समस्त विघ्नों को हर लेने वाले हैं, उन गणाधिपति को नमस्कार है ॥७॥ नारायणि ! तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलदायी हो, कल्याणदायिनी शिवा हो, सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, त्रिनेत्रधारिणी गौरी हो, तुम्हें नमस्कार है ॥८॥ जिनके हृदय में मंगलधाम भगवान श्रीहरि विराजते हैं अर्थात् जो मन ही मन उनका चिन्तन करते हैं, उनके समस्त कार्यों में सदा ही अमंगल नहीं होने पाता है ॥९॥ लक्ष्मीमते ! मैं जो आपके युगल चरणों का स्मरण करता हूँ, वही चन्द्रबल, वही विद्याबल और वही दैवीबल है ॥१०॥ जिनके हृदय में नीलकमल के समान श्याम कान्तिवाले भगवान जनार्दन विराज रहे हैं, उन्हीं का लाभ है, उन्हीं की विजय

है । उनकी पराजय किससे है ?॥११॥ जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण है, जहाँ धनुर्धर अर्जुन है, वहीं श्री, विजय, भूति तथा ध्रुवा नीति है । ऐसा मेरा विश्वास है ॥१२॥ भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—जो लोग अनन्य भाव से चिन्तन करते हुए मेरी उपासना करते हैं, मुझमें नित्य संयुक्त रहने वाले उन भक्तों के योग-क्षेम का भार मैं स्वयं वहन करता हूँ ॥१३॥ जिनका स्मरण करते ही मनुष्य समस्त कल्याण का भाजन हो जाता है, उस नित्य, अजन्म आदिपुरुष श्रीहरि की मैं शरण लेता हूँ ॥१४॥ त्रिभुवन के स्वामी तीन देव-ब्रह्मा, शिव और विष्णु आरम्भ किये जाने वाले सभी कार्यों में हमें सिद्धि प्रदान करें ॥१५॥

आवाहन

हे हरम्ब त्वमेहोहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज ।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः ॥
नागास्वं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम् ।
भूषितं स्वायुधैर्दिग्यैः एशाङ्कशपरश्वधैः ॥
आवाह्यामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम् कतोः ।
इहा गत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्षमे ॥

अर्थ—'हे माता पार्वती तथा त्रिलोचन महादेव के पुत्र हेरम्ब ! आप आइये, आइये । आप सिद्धि और बुद्धि के पति हैं, तीन नेत्रों से सुशोभित हैं, लाखों का लाभ कराने वाले तथा पिता के भी पिता हैं, यहाँ पधारिये । आप गजानन हैं, नागमय हार धारण करते हैं । आपके चार भुजाएँ हैं । आप गणों के राजा हैं । पाश, अंकुश और परशु आदि दिव्य निजी

आयुध आपके हाथों की शोभा बढ़ाते हैं। मैं पूजन के लिए और अपने इस यज्ञ की रक्षा के लिए भी आपका आवाहन करता हूँ। यहाँ पधारकर आप पूजा ग्रहण करें और योग की रक्षा भी करें।

प्रतिष्ठापन

(क) ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वम् जासि गर्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धि सहिताय। गणपतये नमः गणपति-मावाहयामि स्थापयामि।

(ख) ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति-र्यज्ञमि मं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च अस्यै देवत्व मर्चायै मामहेति च कञ्चन। सिद्धि बुद्धि सहित गणपते सूप्रतिष्ठितो वर दो भव॥

आसन-अर्पण

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर दित्य सिंहासन की भावना से पुष्प अर्पित करें–

विचित्र रत्न खचितं दिव्यास्तरण संयुतम् ।
स्वर्ण सिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुर पूजित ॥

अर्थ—देव पूजित गणेश, यह सुन्दर स्वर्णमय सिंहासन ग्रहण कीजिए। इसमें विचित्र रत्न जड़े हैं तथा इस पर दिव्य आसन (बिछावन) पड़ा हुआ है ।

ॐ पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्चं भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति ॥
ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि ।

पाद्यं

इसके बाद निम्नांकित मन्त्र से गणेश जी के पाद प्रक्षालन के लिए पाद्य अर्पित करें—

ॐ सर्वतीर्थ समुद्भूतं पाद्यं गन्धदिभिर्युतम् ।
विघ्नराज गृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल ॥

अर्थ—भक्तवत्सल भगवान विघ्नराज ! यह सब तीर्थों के जल से तैयार किया गया तथा गन्ध आदि से मिश्रित पाद्य जल आप ग्रहण कीजिए ।

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाश्चं पुरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि । ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामिः ।

अर्घ्यदान

तत्पश्चात् गन्ध आदि से युक्त अर्घ्य अर्थात् जल अर्पित करें और निम्न मन्त्र पढ़ें–

ॐ गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर ।
अर्घ्यं च फल संयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम् ॥

अर्थ–करुणानिधान गणाध्यक्ष ! आपको नमस्कार है । आप गन्ध, पुष्प, अक्षत और फल आदि से युक्त यह अर्घ्य जल स्वीकार करें ।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनीय अर्पण

इसके अनन्तर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए गंगा जल से श्री गणेश को आचमन करायें–

विनायकं नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित ।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो ॥

अर्थ–देवेश्वर ! देववन्दित प्रभो ! विनायक ! आपको नमस्कार है । आप गंगाजल से आचमन करें ।

ॐ ततो विराऽजायत विराजो अधिपुरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः ।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि ।

स्नान-समर्पण

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र बोलकर गंगा जल से स्नान कराने की भावना से स्नानीय जल अर्पित करें–

मन्दाकिन्यास्तु यद्धारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

अर्थ–देव ! मन्दाकिनी (गंगा) का जो जल समस्त पापहारी और शुभ है, वही आपके स्नान के लिए प्रस्तुत किया गया है । आप इसे स्वीकार करें ।

ॐ तस्माद्यत्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पूंस्तांश्च वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः सर्वाङ्गे स्नानं समर्पयामि ।

पंचामृत-स्नान

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु ।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

अर्थ–प्रभो ! दूध, दही, घी, मधु और शर्करा को मिलाकर तैयार किया गया । यह पंचामृत मैं ले आया हूँ । आप इसे स्नान के लिए ग्रहण करें ।

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वती पियन्ति सस्त्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधासो देशेऽभवत्सरित् ॥

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि ।

पुनः जल से स्नान कराकर मांगलिक स्नान करावें ।

मांगलिक स्नान

(सुवासित तैल या इत्र)

चम्पकाशोक बक्रलमालती मोगरादिभिः ।
वासितं स्निग्धता हेतु तैलं चारू प्रगृह्यताम् ॥

अर्थ–प्रभो ! चम्पा, अशोक, मौलसिरी, मालती और मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट का हेतु भूत यह सुन्दर तैल आप ग्रहण करें ।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः सुवासितं तैल समर्पयामि ।

शुद्धोदक स्नान

तदन्तर गंगा जल या तीर्थ जल से शुद्ध स्नान करायें–

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थ प्रतिगृह्यतामा ॥

अर्थ–इस शुद्ध जल के रूप में यहां गंगा, यमुना, गोदावरी सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी उपस्थित है । आप स्नान के लिए यह जल स्वीकार करें ।

ॐ आपो हिण्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

वस्त्र समर्पण

शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाथा रक्षणं परम् ।
देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

अर्थ—प्रभो ! यह वस्त्र सेवा में अर्पित है । यह सर्दी, हवा और गर्मी से बचाने वाला, लज्जा का उत्तम रक्षक तथा शरीर का अलंकार है । आप इसे स्वीकार करके मुझे शान्ति प्रदान करें ।

ॐ युवा सुवासाः परिवीत् आगात् स उश्रेयान् भवति जायमान्ः तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो ३ मनसा देवयन्तः ।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः वस्त्रं समर्पयामि ।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः आचमनं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीत समर्पण

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवताभयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

अर्थ—परमेश्वर ! नौ तन्तुओं से युक्त, त्रिगुण और देवता स्वरूप यह यज्ञोपवीत मैंने समर्पण किया है । आप इसे स्वीकार करें ।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् आयुष्यम ग्रन्थं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं

बलमस्तु तेजः । ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि । ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः आचमनं समर्पयामि ।

गन्ध–अक्षत

॥ गन्धः ॥

श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रति गृह्यताम् ॥

अर्थ–सुरश्रेष्ठ ! यह दिव्य श्रीखण्ड चन्दन, सुगन्ध से पूर्ण एवं मनोहर है । विलेपन स्वरूप यह चन्दन आप स्वीकार करें ।

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्धान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः गन्धं समर्पयामि ।

अक्षतः

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

अर्थ–सुरश्रेष्ठ परमेश्वर ! ये कुंकुम में रंगे हुए सुन्दर अक्षत हैं । मैंने भक्तिभाव से इन्हें आपकी सेवा में अर्पित किया है । आप इन्हें स्वीकार करें ।

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।

अस्तोषत स्वभावनो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी । ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पमाला-पुष्प-दुर्वांकुर, सिन्दूर, अबीर-चूर्ण

॥ मन्दार पुष्पः ॥

वन्दारूजनमन्दार मन्दारप्रिय धीपते ।
मन्दारजानि पुष्पाणि श्वेतार्कादीन्युपेहि भोः ॥

अर्थ–हे वन्दना करने वाले भक्तों के लिए मन्दार (कल्पवृक्ष) के समान कामनापूरक ! मन्दारप्रिय ! बुद्धिपते गणेश ! मन्दार के तथा श्वेत आक आदि के फूल स्वीकार कीजिए ।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः मन्दार पुष्पाणि समर्पयामि ।

॥ पुष्पमालाः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाहतानि पुष्पाणि गृह्यन्तां पूजनाय भोः ॥

अर्थ–प्रभो ! मालती आदि की सुगन्धित मालाएँ और फूल मेरे द्वारा लाए गए हैं । आप इन्हें पूजनार्थ स्वीकार करें ।

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।

अश्वा इव सजित्वरीर्वीरूधः पारयिष्णवः ॥

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः पुष्पमालां समर्पयामि ।

॥ दुर्वांकुरः ॥

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥

अर्थ—गणनायक ! आपकी पूजा के लिए मेरे द्वारा अत्यन्त हरे, अमृतमय तथा मंगलप्रद दुर्वांकुर लाये गए हैं । आप इन्हें ग्रहण करें ।

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती पुरुषः पुरुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्त्रेण शतेन च ॥

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः दूर्वाङ्कुर समर्पयामि ।

॥ सिन्दूरः ॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्य सुखवर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

अर्थ—प्रभो ! सुन्दर, लाल, सौभाग्यस्वरूप, सुखवर्धक, शुभद एवं कामपूरक सिन्दूर सेवा में प्रस्तुत है । इसे स्वीकार करें ।

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्तियह्वाः । घृतस्य धारा अरूणो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः सिन्दूरं, समर्पयामि ।

नाना परिमलद्रव्य, अबीर-चूर्ण

नानापरिमलैद्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् ।
अबीरनामकं चूर्ण गन्धाढयं चारू गृह्यताम् ॥

अर्थ–भांति-भांति के सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित यह गन्ध युक्त अबीर नामक सुन्दर तथा उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिये ।

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधनः । हस्तघ्नो विश्वा वायुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳसं परिपातु विश्वतः । ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

दशांग धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

अर्थ–वनस्पति के रस से प्रकट, सुगन्धित, उत्तम गन्ध रूप और समस्त देवताओं के सूँघने योग्य यह धूप सेवा में अर्पित है । प्रभो ! इसे स्वीकार करें ।

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः । देवानामसि वह्नितम ꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् । ॐ

सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः, धूपमाघ्रापयामि ।

दीप-दर्शन

साज्यं च वर्तिसंयुक्क्तं वहिना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ।
भक्त्यां दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
त्राहि मां निरयाद घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ।

अर्थ—देवेश ! घी में डुबोयी रुई की बत्ती को अग्नि से प्रज्वलित करके दीप आपकी सेवा में अर्पित किया गया है । आप इसे स्वीकार करें । यह त्रिभुवन के अन्धकार को दूर करने वाला है । मैं इष्ट देवता परमात्मा गणपति को दीप देता हूँ । प्रभो ! आप मुझे घोर नरक से बचाइये । दीपज्योतिर्मय देव ! आपको नमस्कार है ।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा । ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्य-निवेदन

दीप-अर्पण के पश्चात् हाथ जोड़कर नैवेद्य अर्पण करें । नैवेद्य में भांति-भांति के मोदक, गुड़ तथा ऋतु के

अनुकूल उपलब्ध नाना प्रकार के उत्तमोत्तम फल प्रस्तुत करें । इसके बाद निम्नांकित मन्त्र को पढ़ें–

नैवेद्यं गृहतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

अर्थ–देव ! आप यह नैवेद्य स्वीकार करें और अपने प्रति मेरी भक्ति को अविचल कीजिए । वांछित वर दीजिए और परलोक में परम गति प्रदान कीजिए । खांड से तैयार किये गए खाद्य पदार्थ, दही, धूप, घी तथा भक्ष्य भोज्य आहार नैवेद्य के रूप में प्रस्तुत है । यह आप कृपापूर्वक ग्रहण करें ।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकांरअकल्पयून ॥

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।

ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः नैवेद्यं मोदकमयं ऋतुफलानि च समर्पयामि ।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः आचमनीयं मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं च समर्पयामि ।

करोद्धर्तन के लिए चन्दन

ॐ चन्दनं मलयाद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् ।
करोद्धर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥

अर्थ—देव ! मलयपर्वत से उत्पन्न चन्दन में कस्तूरी आदि मिलाकर मैंने करोद्धर्तन तैयार किया है । परमेश्वर ! इसे स्वीकार करें ।

अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परूः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः चन्दनेन करोद्धर्तनं समर्पयामि ।

पूगीफलादि सहित ताम्बूल-अर्पण

ॐ पूगीफलं महच्छिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

अर्थ—प्रभो ! महान् दिव्य पूगीफल, इलायची और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा सेवा में प्रस्तुत है । इसे स्वीकार करें ।

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वासन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः, मुखवासार्थमेलापूगीफलादिसहितं ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा-समर्पण

॥ दक्षिणाः ॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छा मे ॥

अर्थ–सुवर्ण हिरण्यगर्भ ब्रह्मा के गर्भ में स्थित अग्नि का बीज है । वह अनन्त पुण्य-फल प्रदान करने वाला है । भगवन् ! आपकी सेवा में अर्पित है । अतः इसे ग्रहण कर मुझे शान्ति प्रदान करें ।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः,
कृताया पूजायाः सादगुण्यार्थं द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ।

नीराजन या आरर्तिक (आरती)

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

अर्थ–प्रभो ! केले के गर्भ से उत्पन्न यह जलाया गया कपूर है । इसी के द्वारा मैं आपकी आरती करता हूँ । आप इसे देखिये और मेरे लिए वरदायक होइये ।

॥ आरतीः ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्न कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
धूप चढ़े बेल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लडुवन का भोग लगे सन्त करे सेवा ॥
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी ।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूषक की सवारी ॥
अन्धन को आंख देत कोढ़ियन को काया ।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥

ॐ इदं हविः प्रजननं मे अस्तु, दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि । अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासु धत्त । आ रात्रि पार्थिवꣳरजः पितुरप्रायि धामभिः । दिवः सदाꣳसि बृहती तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः । ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि ॥

पुष्पांजलि–समर्पण

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ॥

अर्थ—परमेश्वर ! यथासमय उत्पन्न होने वाले नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प मैंने पुष्पाञ्जलि के रूप में अर्पित किये हैं । आप इन्हें स्वीकार करें ।

ॐ यज्ञेन यज्ञंमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

ॐ गणानां त्वां गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वां प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम । ॐ अम्बे अम्बिकेऽबालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील-वासिनीम् ॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । समे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रणवो ददातु ॥

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायां एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आवीक्षितस्य

कामप्रेर्विश्वेदवाः सभासद इति ।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैद्यविभूमी जनयन् देव एकः ॥

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणपतये नमः, मन्त्र पुष्पाञ्जलि समर्पयामि ।

इस प्रकार षोडषोपचार विधि से पूजन कर अग्रलिखित गणेशसहस्त्रनाम का पाठ करें ।

श्री गणपति सहस्रनाम स्तोत्रम्

गणेश पुराण वर्णित गणपति सहस्त्रनाम स्तोत्र हिन्दी अर्थ सहित निम्नानुसार विधि से है–

विनियोगः–

अस्य श्री महागणपति सहस्त्रनाम स्तोत्र मन्त्रस्य महागणपतिर्ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः महागणपतिर्देवता गं बीजम्, हुं शक्तिः, स्वाहा कीलकम्, चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

अर्थ–इस सहस्त्रनाम के श्री महागणपति ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द है, महागणपति देवता है । गम बीज है, हुम् शक्ति है, स्वाहा कीलक है, धर्म-अर्थ-काम एवं मोक्ष–इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि के लिए जपादि में इसका विनियोग है ।

॥ ऋष्यादि न्यासः ॥

ॐ महागणपतये ऋषये नमः शिरसि ।
अनुष्टुप छन्द से नमः मुखे ।
महागणपतिर्देवताये नमः हृदि ।
गं बीजाय नमः गुह्ये ।
हुं शक्तये नमः पादयो ।
स्वाहा कीलकाय नमः नाभौ ।

विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

इस प्रकार इन छः वाक्यों को अलग-अलग बोलकर तत्व मुद्रा (दाहिने हाथ की अंगुलियों और अंगुष्ठ को मिलाकर तत्व मुद्रा बनती है) से क्रमशः मस्तक-मुख-हृदय-गुदाभाग-दोनों चरण तथा नाभि का स्पर्श करना चाहिये ।

।। ध्यानः ।।

गण्डपाली गलछान पूर लाल समानसान् ।
द्विरेफान् कर्णतालाभ्यां वारयन्त महुर्मुहुः ।।
कराग्रधृतमाणिक्य कुम्भवक्त्र विनिर्गतै ।
रत्नवर्षैः प्रीणयन्तं साधकान् मद् विह्वलम् ।।
माणिक्य मुकटो पेतं सर्वाभरण भूषितम् ।।

अर्थ—गणेश जी के गण्डस्थल से मद की धारा बह रही है, उसका आस्वादन करने के लिए भ्रमरों की भीड़ टूट पड़ी है । भ्रमरों को वे अपने ताड़पत्र के समान कानों से बार-बार हटाते हैं । उन्होंने अपने शुण्डदण्ड के अग्रभाग में माणिक्य से निर्मित कलश में रखा है, जिसके मुख भाग से रत्नों की वर्षा हो रही है जिसके द्वारा वे अपने धनार्थी साधकों को तृप्त कर रहे हैं । कपोलों पर झरते मद से वे विह्वल हैं ।

उनके मस्तक पर माणिक्य मुकुट शोभा देता है तथा वे सम्पूर्ण आभूषणों से विभूषित हैं । ऐसे महागणपति का मैं ध्यान करता हूँ ।

श्री गणपति सहस्रनाम स्तोत्रम्

ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो गणनाथो गणाधिपः ।
एक दंष्ट्रो वक्रतुण्डो गजवक्त्रो महोदरः ॥

१. **गणेश्वर**–गणों के ईश्वर ।
२. **गणक्रीड़ः**–गणों के साथ खेलने वाले ।
३. **गणनाथः**–गणों के नाथ (स्वामी) ।
४. **गणाधिपः**–गणों के अधिपति ।
५. **एकदंष्ट्र**–एक दांत वाले ।
६. **वक्रतुण्ड**–टेढ़ी सूण्ड वाले ।
७. **गजवक्त्रः**–हाथी जैसे शरीर वाले ।
८. **महोदरः**–महान् उदर वाले ।

लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्न नायक ।
सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्न राजो गजाननः ॥

९. **लम्बोदरः**–लम्बे पेट वाले (बहुत मोदक जीमने से)
१०. **धूम्रवर्णः**–धुएँ जैसे रंग वाले ।
११. **विकटः**–शत्रुओं के लिए भयंकर ।
१२. **विघ्ननायक**–विघ्नों के नायक ।
१३. **सुमुखः**–सुन्दर मुख वाले ।
१४. **दुर्मुख**–शत्रुओं के लिए अप्रियवादी ।
१५. **बुद्धः**–बुद्ध स्वरूप ।

१६. **विघ्नराजः**–विघ्नों के राजा ।
१७. **गजाननः**–हाथी जैसे मुख वाले ।

भीमः प्रमोद अमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः ।
हेरम्बः शम्बरः शम्भर्लम्बकर्णो महाबलः ॥

१८. **भीमः**–भीम के समान विशाल ।
१९. **प्रमोदः**–विशेषरूपेण प्रसन्न रूप वाले ।
२०. **आमोदः**–आनन्द स्वरूप वाले ।
२१. **सुरानन्दः**–देवताओं को आनन्दित करने वाले ।
२२. **मदोत्कटः**–अत्यधिक मद वाले ।
२३. **हेरम्बः**–हे ! माँ, पुकारने वाले ।
२४. **शम्बरः**–शम्बरासुर का संहार करने से ।
२५. **शम्भः**–शान्ति चाहने वाले ।
२६. **लम्बकर्णोः**–लम्बे कान वाले ।
२७. **महाबलः**–महाबली ।

नन्दनोऽलम्पटोऽभीरूर्मेघनादो गणजयः ।
विनायको विरुपाक्षो धीर शूरो वर प्रदः ॥

२८. **नन्दनः**–आनन्द के सपूत ।
२९. **अलम्पटः**–बुद्धिमान ।
३०. **अभीरूः**–भयरहित अर्थात् किसी से नहीं डरने वाले ।
३१. **मेघनादः**–बादल के समान गर्जना करने वाले ।
३२. **गणजयः**–गणों को जीतने वाले ।
३३. **विनायकः**–नेतृत्व करने वाले ।

३४. **विरूपाक्षः**–शत्रुओं के लिए बिगड़ी आँखों वाले ।
३५. **धीरः**–धीरज रखने वाले ।
३६. **शूरः**–वीर
३७. **वरप्रदः**–वरदान देने वाले ।

महागलपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः ।
रूद्रप्रियो गणाध्यक्षः उमापुत्रोऽघनाशनः ॥

३८. **महागल (ण) पति**–गणों के महान् नायक ।
३९. **बुद्धिप्रियः**–जिसको बुद्धि प्रिय हो ।
४०. **क्षिप्रप्रसादनः**–शीघ्र प्रसन्न होने वाले ।
४१. **रुद्रप्रियः**–रुद्रों के प्रिय ।
४२. **मणाध्यक्षः**–गणों के अध्यक्ष ।
४३. **उमापुत्रः**–गौरी के पुत्र ।
४४. **अघनाशनः**–अघों अर्थात् बुराइयों को नष्ट करने वाले ।

कुमार गुरुरीशान पुत्रों मूषक वाहनः ।
सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धि विनायकः ॥

४५. **कुमार**–कुमार होने से ।
४६. **गुरु**–षडानन के गुरु ।
४७. **ईशानपुत्र**–ईशान के पुत्र ।
४८. **मूषक वाहनः**–मूषक जिसका वाहन है ।
४९. **सिद्धिप्रियः**–सिद्धि के लिए प्रिय ।
५०. **सिद्धिपतिः**–सिद्धि के पति ।

५१. **सिद्धः**–सिद्ध स्वरूप अर्थात् स्वयं सिद्ध ।
५२. **सिद्धि विनायकः**–सिद्धियों के विशिष्ट नायक ।

अविघ्नस्तुम्बुरः सिंहवाहनो मोहिनी प्रियः ।
कंकटो राजपुत्रः शालकः सम्मितोऽमितः ॥

५३. **अविघ्नस्तुम्बुरः**–१. अविघ्नस्वरूप (विघ्नरहित), २. तुम्बु के समान आवाज करने वाले ।
५४. **सिंहवाहनः**–सिंह पर सवार होने वाले ।
५५. **मोहिनी प्रियः**–मोहिनी के लिए प्रिय ।
५६. **कंकटः**–कवच धारण करने वाले ।
५७. **राजपुत्रः**–राज़ा के पुत्र ।
५८. **शालकः**–बुद्धि देने वाले, शिव गण विशेष ।
५९. **सम्मितः**–अच्छे परामर्श देने वाले ।
६०. **अमितः**–अतुलित, सीमारहित ।

कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धुर्जयोजयः ।
भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिर्व्यय ॥

६१. **कूष्माण्डसामसम्भूतिः**–कूष्माण्डया कुम्हड़ के समान पेट वाले ।
६२. **दुर्जयः**–कठिनाई से जीते जाने वाले ।
६३. **धुर्जयः**–धुरंधर (पारगंत) ।
६४. **जयः**–जय हो, जय के लिए नमस्कार ।
६५. **भूपति**–भूमि के पति ।
६६. **भुवनपति**–भुवनों के पति ।
६७. **भूतानांपतिर्व्यय**–प्राणियों के स्वामी ।

विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्घृणि ।
कविः कविनानृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मणस्पतिः ॥

६८. **विश्वकर्ता**–विश्व को बनाने वाले ।
६९. **विश्वमुखो**–विश है जिसके मुख में ।
७०. **विश्वरूपः**–विश्व स्वरूप ।
७१. **निधि**–सम्पति (खजाना) ।
७२. **घृणि**–सूर्यवत तेजवान ।
७३. **कवि**–विद्वान्, कविता बनाने वाले ।
७४. **कविनानृषभोः**–कवियों में श्रेष्ठ ।
७५. **ब्रह्मण्य**–ब्राह्मणों पर कृपा करने वाले ।
७६. **ब्राह्मणस्पतिः**–देवताओं के स्वामी, देवताओं में श्रेष्ठ ।

ज्येष्ठराजो निधिपति निधिप्रियपति प्रियः ।
हिरण्य पुरान्तः स्थः सूर्यमण्डल मध्यमः ॥

७७. **ज्येष्ठराजः**–राजाओं में ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ ।
७८. **निधिपतिः**–सम्पत्ति के स्वामी ।
७९. **निधिप्रियपतिः**–सम्पत्ति प्रिय लगने वालों के स्वामी ।
८०. **प्रियः**–सबको प्रिय लगने वाले ।
८१. **हिरण्यमयः**–सोने के समान चमकने वाले ।
८२. **पुरान्तः**–प्राचीन पुरुष ।
८३. **स्थः**–यज्ञस्वरूप ।
८४. **सूर्यमण्डल मध्यमः**–दुपहरी में चमकने वाले सूर्यमण्डल के समान ।

कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलः पूषदन्तभित् ।
उमाङ्ककेलिकुतकी मुक्तिदः कुल पालनः ॥

८५. **कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलः**–अग्नि जिह्वा के समान सागर जल को सुखाने वाले ।
८६. **पूषदन्तभित्**–गन्धर्वों को भयभीत करने वाले ।
८७. **उमाङ्ककेलिकुतकीः**–पार्वती की गोद में खेलने वाले ।
८८. **मुक्तिदः**–मोक्ष प्रदान करने वाले ।
८९. **कुल पालनः**–कुल (वंश) का पालन करने वाले ।

किरीटी कुण्डलीहारी वनमाली मनोमयः ।
वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतिजितक्षितिः ॥

९०. **किरीटी**–मुकुट धारण करने वाले ।
९१. **कुण्डली**–कानों में कुण्डल धारण करने वाले ।
९२. **वनमाली**–फूलों की माला धारण करने वाले ।
९३. **मनोमयः**–मन को आनन्दित करने वाले, सुन्दर लगने वाले ।
९४. **वैमुख्यहतदैत्यश्रीः**–विमुख दैत्यों की श्री (शोभा-लक्ष्मी) को हरण करने वाले ।
९५. **पादाहतिजितक्षितिः**–पैरों की शक्ति से पृथ्वी को जीतने वाले ।

सद्योजातस्वर्णमुंजमेखली दुर्निमित्तहृत ।
दुःस्वप्नहृत प्रसहनो गुणी नादप्रतिष्ठितः ॥

९६. **सद्योजातस्वर्णमुंजमेखली**–तत्काल उत्पन्न सोने के समान मुंज की मेखला को धारण करने वाले ।
९७. **दुर्निमित्तहृत**–बुराइयों को नष्ट करने वाले ।
९८. **दुःस्वप्नहृत**–बुरे स्वप्नों को नष्ट करने वाले ।
९९. **प्रसहनः**–क्षमा करने वाले ।
१००. **गुणी**–गुणवान, सभी गुणों से युक्त ।
१०१. **नादप्रतिष्ठितः**–नाद (स्वर) को स्थापित करने वाले ।

सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः ।
पीताम्बरः खण्डरदः खण्डेन्दुकृतशेषरः ॥

१०२. **सुरूपः**–सुन्दर रूप वाले ।
१०३. **सर्वनेत्राधिवासः**–सभी के नेत्रों में निवास करने वाले ।
१०४. **वीरासनाश्रयः**–वीरासन का आश्रय लेने वाले या वीरासन पर बैठने वाले ।
१०५. **पीताम्बरः**–पीला वस्त्र धारण करने वाले ।
१०६. **खण्डरदः**–एक दाँत के खण्डित होने से ।
१०७. **खण्डेन्दुकृतशेषरः**–अर्द्धचन्द्र को धारण करने वाले ।

चित्राङ्कश्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुजः ।
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥

१०८. **चित्राङ्कः**–विभिन्न अंग वाले, अंगों पर सर्प धारण करने वाले ।

१०९. **श्यामदशनः**–श्याम दाँत वाले ।
११०. **भालचन्द्रः**–ललाट पर चन्द्रमा वाले ।
१११. **चतुर्भुजः**–चार भुजा वाले ।
११२. **योगाधिपः**–योगियों के स्वामी ।
११३. **तारकस्थ**–भक्तों का उद्धार करने वाले ।
११४. **पुरुषः**–श्रेष्ठ पुरुष ।
११५. **गजकर्णकः**–हाथी के सदृश्य कान वाले अर्थात् सबकी सुनने वाले ।

गणाधिराजो विजयस्थिरो गजपतिध्वजी ।
देवदेवः स्मरप्राणदीपको वायुकीलकः ॥

११६. **गणाधिराजः**–गणों के स्वामी ।
११७. **विजयास्थिरः**–स्थायी विजय देने वाले ।
११८. **गजपतिध्वजी**–गजपति ध्वजा वाले ।
११९. **देवदेवः**–सबसे श्रेष्ठ देवता ।
१२०. **स्मरप्राणदीपकः**–कामदेव के प्राण को प्रकाशित करने वाले ।
१२१. **वायुकीलकः**–वायु को प्रतिबंधित करने वाले ।

विपश्चिदूरदो नादोन्नादभिन्नबलाहकः ।
वराहरदनो मृत्युंजयो व्याघ्राजिनाम्बरः ॥

१२२. **विपश्चिदूरदः**–श्रेष्ठ विद्वान् ।
१२३. **नादोन्नादभिन्नबलाहकः**–बादल के समान भिन्न-भिन्न आवाज करने वाले ।
१२४. **वराहदनः**–वराह सदृश्य दाँत होने से ।

१२५. **मृत्युंजयः**–मृत्यु को जीतने वाले ।
१२६. **व्याघ्रजिनाम्बरः**–बाघाम्बर धारण करने वाले ।

इच्छाशक्तिधरो देवत्राता दैत्यविमर्दनः ।
शम्भुवक्त्रोदभवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः ॥

१२७. **इच्छाशक्तिधरः**–इच्छानुसार शक्ति को धारण करने वाले ।
१२८. **देवत्राता**–देवताओं की रक्षा करने वाले ।
१२९. **दैत्यविमर्दनः**–दैत्यों का नाश करने वाले ।
१३०. **शम्भुवक्त्रोदभवः**–भगवान शंकर के मुख से उत्पन्न होने वाले ।
१३१. **शम्भुकोपहा**–शंकर के क्रोध को नष्ट करने वाले ।
१३२. **शम्भुहास्यभूः**–शंकर भगवान की हँसी से प्रकट होने वाले ।

शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखवहः ।
उमाङ्गमलजो गौरीजोभूः स्वर्धुमीभवः ॥

१३३. **शम्भुतेजाः**–भगवान शंकर के तेजों से मुक्त ।
१३४. **शिवाशोकहारी**–माता पार्वती के शोक का हरण करने वाले ।
१३५. **गौरीसुखवह**–गौरी को सुख देने वाले ।
१३६. **उमाङ्गमलजो**–पार्वती के अंग से निकले मैल से उत्पन्न होने वाले ।
१३७. **गौरीतेजोभूः**–गौरी के तेज से उत्पन्न होने वाले ।
१३८. **स्वर्धुमीभवः**–शब्द रूपी सागर से उत्पन्न होने वाले ।

यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभननः ।
सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्धा ककुपश्रुतिः ॥

१३९. **यज्ञकायः**–यज्ञ के समान शरीर वाले ।
१४०. **महानादः**–उच्च स्वर में बोलने वाले ।
१४१. **गिरिवर्ष्मा**–पर्वत के समान शरीर वाले ।
१४२. **शुभाननः**–सुन्दर मुख वाले ।
१४३. **सर्वात्मा**–सभी की आत्मा में रहने वाले ।
१४४. **सर्वदेवात्मा**–सभी देवताओं की आत्मा ।
१४५. **ब्रह्ममूर्धा**–देवताओं में श्रेष्ठ ।
१४६. **ककुपश्रुतिः**–शास्त्र में जिसको श्रेष्ठ कहा गया है ।

ब्रह्माण्डकुम्भश्रिद्वयोमभालः सत्यशिरोरूहः ।
जगज्जनमलयोन्मेषऽग्न्यर्कसोमदृक् ॥

१४७. **ब्रह्माण्डकुम्भश्रिद्व्योमभालः**–सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर नियन्त्रण रखने वाले ।
१४८. **सत्यशिरोरूहः**–सत्य रूपी बाल को मस्तक पर धारण करने वाले ।
१४९. **जगज्जनमलयोन्मेषऽग्न्यर्कसोमदृक्**–जो सांसारिक मनुष्यों के लिए अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा के समान है ।

गिरिन्द्रैकरदो धर्माधर्मोष्ठः समबृंहितः ।
ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः ॥

१५०. **गिरिन्द्रैकरदो**–गिरियों अर्थात् पर्वतों में श्रेष्ठ तथा एक दन्त वाले ।

१५१. **धर्माधर्मोष्ठः**–धर्म और अधर्म की व्याख्या करने वाले ।

१५२. **समबृंहितः**–सभी भक्तों के प्रति समान व्यवहार करने वाले ।

१५३. **ग्रहर्क्षदशनः**–निन्दनीय व्यक्ति को अपने दाँत से नष्ट करने वाले ।

१५४. **वाणीजिह्वः**–श्री गणेश की जिह्वा पर देवी सरस्वती का वास है ।

१५५. **वासवनासिकः**–इन्द्र के समान श्रेष्ठ नाक वाले ।

कुलाचलांस सोमार्कघण्टो रूद्रशिरोधरः ।
नदीनदभुजः सर्पाङ्गलीकस्तारकानखः ॥

१५६. **कुलाचलांसः**–वंश की आशा ।

१५७. **सोमार्कघण्टः**–चन्द्रमा और सूर्य रूपी घण्टी को धारण करने वाले ।

१५८. **रूद्रशिरोधरः**–शिव को सिर पर धारण करने वाले ।

१५९. **नदीनदभुजः**–जिनकी भुजाएँ नदी के समान लम्बी हैं ।

१६०. **सर्वाङ्गलीकः**–सर्पों को धारण करने वाले ।

१६१. **तारकानखः**–उद्धारक नख वाले ।

भ्रूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोत्कटः ।
व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरूपृष्ठोऽर्णवोदरः ॥

१६२. **भ्रूमध्यसंस्थितकरः**–भगवान सूर्य के परम मित्र

होने से ।

१६३. **ब्रह्मविद्यामदोत्कटः**–ब्रह्मविद्या के मद से मदान्वित ।

१६४. **व्योमनाभि**–आकाश के समान नाभि वाले ।

१६५. **श्रीहृदयः**–हृदय में लक्ष्मी को रखने वाले ।

१६६. **मेरूपृष्ठः**–मेरू पर्वत के समान पीठ वाले ।

१६७. **अर्णवोदरः**–सागर के समान पेट वाले ।

कुक्षिस्थयक्षगन्धर्व रक्षः किंनरमानुषः ।
पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्ग शैलोरूर्दस्त्रजानुकः ॥

१६८. **कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वः**–जिसके पेट में यक्ष गन्धर्व हैं ।

१६९. **किंनरमानुष रक्षः**–किंनर और मनुष्यों की रक्षा करने वाले ।

१७०. **पृथ्वीकटिः**–पृथ्वी के समान कटि अर्थात् कमर वाले ।

१७१. **सृष्टिलिङ्ग**–सृष्टि पर विविध प्रकार के प्राणियों को उत्पन्न करने वाले ।

१७२. **शैलोरूर्दस्त्रजानुकः**–पर्वत के समान जानु अर्थात् घुटने वाले ।

पाताल जङ्घो मुनिपात्कालांगुष्ठस्त्रयी तनुः ।
ज्योतिर्मण्डललाङ्गलो हृदयालाननिश्चलः ॥

१७३. **पातालजङ्घः**–पाताल के समान जङ्घा वाले ।

१७४. **मुनिपात्कालांगुष्ठस्त्रयी तनुः**–सूक्ष्मातिसूक्ष्मरूप में प्रकट होकर शत्रु संहार करने वाले ।

१७५. **ज्योतिर्मण्डललाङ्गलः**–सृष्टिमण्डल में ज्योति जगाने

वाले ।

१७६. **हृदयाालाननिश्चलः**–पाताल सदृश्य निश्चल हृदय वाले ।

हृत्पद्मकर्णिकाशालिवियत्केलि सरोवरः ।
सद्रभक्त ध्यान निगडः पूजा वारी निवारितः ॥

१७७. **हृत्पद्मकर्णिकाशालिवियत्केलि सरोवरः**–अपनी सूण्ड के अग्रभाग से तालाब में से कमल को लेकर चावल के समान आकाश में फेंक कर खेलने वाले ।

१७८. **सद्रभक्त ध्यान निगडः**–जिस प्रकार कोई भी हथकड़ी से बँध जाता है, उसी प्रकार भक्तों के ध्यान में बँध जाने वाले श्री गणेश ।

१७९. **पूजा वारी निवारितः**–पूजा के जल अर्थात् चरणामृत के समान मोक्ष प्रदान करने वाले ।

प्रतापी कश्यप सुतो गणपो विष्टपी बली ।
यश्वी धार्मिकः स्वोजा प्रथमः प्रथमेश्वरः ॥

१८०. **प्रतापी**–प्रतापशाली ।

१८१. **कश्यप सुतः**–कश्यप के पुत्र ।

१८२. **गणपः**–गणों के स्वामी श्री गणेश ।

१८३. **विष्टपी**–भुवनपति ।

१८४. **बली**–शक्तिशाली ।

१८५. **यश्वी**–अत्यन्त यशवाले अर्थात् कीर्तिमान ।

१८६. **धार्मिकः**–धर्मवान् ।

१८७. **स्वोजा**–स्वयं के तेज से ओजस्वी व प्रभावशाली ।
१८८. **प्रथमः**–सर्वप्रथम पूजित होने वाले ।
१८९. **प्रथमेश्वरः**–प्रथम पूजित होने वाले देवता ।

चिन्तामणिदीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः ।
रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः ॥

१९०. **चिन्तामणिदीपपतिः**–इच्छा पूर्ण करने वाले मणि दीपक के स्वामी ।
१९१. **कल्पद्रुम वनालयः**–कल्पवृक्ष के समान भक्तों को फल देने वाले ।
१९२. **रत्नमण्डपमध्यस्थः**–रत्नमण्डप के बीच में विराजने वाले ।
१९३. **रत्नसिंहासनाश्रयः**–रत्नों के सिंहासन पर आश्रय लेने वाले ।

तीव्रशिरोद्रघृतपदो ज्वालिनी मौलि लालितः ।
नन्दानन्दित पीठ श्रीर्भोगदा भूषितासनः ॥

१९४. **तीव्रशिरोद्घृतपदः**–तीव्रता से शत्रुओं के सिर पर पैर रखने वाले ।
१९५. **ज्वालिनी मौलि लालितः**–दैदीप्यमान मस्तक से सुशोभित ।
१९६. **नन्दानन्दित पाठ श्रीर्भोगदा भूषितासनः**–पदम, अंकुश त्रिशूल, गदादि लेकर नन्दिनी के पीठ रूपी आसन पर सुशोभित होने वाले ।

सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः ।
तेजोवतीशिरोरत्न सत्यानित्यावतंसितः ॥

१९७. **सकामदायिनीपीठः**–कामना युक्त फल देने वाले आसन पर विराजमान ।
१९८. **स्फुरदुग्रासनाश्रय**–कम्पायमान आसन के आश्रय ।
१९९. **तेजीवतीशिरोरत्नं**–तेज मस्तक वाले ।
२००. **सत्यानित्यावतंसितः**–सदा सच कहने वाले ।

सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयः ।
लिपिपद्मासनधारो वह्निधामयात्राश्रयः ॥

२०१. **सविघ्नंनाशिनीपीठः**–सभी विघ्न दूर करने वाले ।
२०२. **सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयः**–सर्वशक्तिमान कमल के आश्रय ।
२०३. **लिपिपद्मासनधारो**–लिखने का पद्मासन धारण करने वाले ।
२०४. **वह्निधामत्रायाश्रयः**–तीनों अग्नि देवताओं को आश्रय देने वाले ।

उन्तप्रपदो गूढ़गुल्फः संवृतपार्ष्णिकः ।
पीनजंघेश्लिष्टजानुः स्थूलोरूः प्रोन्नमत्कटिः ॥

२०५. **उन्नतप्रपदो**–पैर के उभरे अगले भाग वाले ।
२०६. **गूढ़गुल्फः**–एड़ी के ऊपर की जटिल गाँठ वाले ।
२०७. **संवृतपार्ष्णिकः**–पैर में गहने पहनने वाले ।

२०८. **पीनजंघे**–मजबूत विशाल जांघों वाले ।
२०९. **श्लिष्टजानुः**–आलिंगित घुटने वाले ।
२१०. **स्थूलोरूः**–बड़े भारी शरीर वाले ।
२११. **प्रोन्नमत्कटिः**–उभरी हुई कमर वाले ।

निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा वृहद्भुजः ।
पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः ॥

२१२. **निम्ननाभिः**–नीची नाभि वाले ।
२१३. **स्थूलकुक्षिः**–बड़ी कोख वाले ।
२१४. **पीनवक्षा**–मजबूत चौड़े सीने वाले ।
२१५. **वृहद्भुजः**–बड़ी भुजाओं वाले ।
२१६. **पीनस्कन्धः**–मजबूत चौड़े कन्धों वाले ।
२१७. **कम्बुकण्ठो**–शंख या हाथी के समान गर्दन वाले ।
२१८. **लम्बोष्ठो**–लम्बे होठ वाले ।
२१९. **लम्बनासिकः**–लम्बी नासिका वाले ।

भग्नवामरदस्तुङ्गसत्यदन्तौ महाहनुः ।
हस्वनेत्रत्रयः शूर्पकर्णो निबिडमस्तकः ॥

२२०. **भग्नवामरदस्तुङ्गसत्यदन्तौ**–अच्छे लगने वाले, बायें खण्डित दाँत वाले ।
२२१. **महाहनुः**–विशाल जबड़े वाले ।
२२२. **हस्वनेत्रत्रयः**–हाथी जैसे नेत्रों वाले ।
२२३. **शूर्पकर्णो**–हाथी जैसे कान वाले ।
२२४. **निबिडमस्तकः**–बँधे हुए मस्तक वाले ।

स्तवकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरंकुशः ।
सर्पाहारकटिसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥

२२५. **स्तवकाकारकुम्भाग्रो**–समूहाकार हाथी के माथे का मध्य भाग ।
२२६. **रत्नमौलिर्निरंकुशः**–रत्नयुक्त निरंकुश मुकुट वाले ।
२२७. **सर्पाहारकटिसूत्रः**–सर्प रूपी हार सदृश्य कमर पर बांधने का सूत्र धारण करने वाले ।
२२८. **सर्पयज्ञोपवीतवान्**–सर्प की यज्ञोपवीत धारण करने वाले ।

सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रैवेयकाङ्गदः ।
सर्पकक्ष्योदारबन्धः सर्पराजोत्तरीयकः ॥

२२९. **सर्पकोटीरकटकः**–सर्प मुकुट मण्डल युक्त ।
२३०. **सर्पग्रैवेयकाङ्गदः**–सर्प की माला पहनने वाले ।
२३१. **सर्पकक्ष्योदारबन्धः**–सर्प के समान निशाना लगाने की गंभीर मुद्रा से शत्रुओं का नाश करने वाले ।
२३२. **सर्पराजोत्तरीयकः**–शेषनाग का उपरना धारण करने वाले ।

रक्तो रक्ताम्बरधरो रक्तमाल्य विभूषणः ।
रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्ततालोष्ठपल्लवः ॥

२३३. **रक्तो**–लाल रंग के समान ।
२३४. **रक्ताम्बरधरो**–लाल वस्त्र धारण करने वाले ।

२३५. **रक्तमाल्य विभूषणः**–लाल रंग की माला से विभूषित ।
२३६. **रक्तेक्षणों**–लाल आँखों वाले ।
२३७. **रक्तकरो**–लाल हाथ या सूंड वाले ।
२३८. **रक्ताल्वोण्ठ पल्लवः**–तालू-ओठ लाल शृंगार युक्त ।

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमाल्यविभूषणः ।
श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेत चामर बीजितः ॥

२३९. **श्वेतः**–गौर वर्ण वाले ।
२४०. **श्वेताम्बरधरः**–श्वेत वस्त्र धारण करने वाले ।
२४१. **श्वेताल्यविभूषणः**–चमेली, की माला से विभूषित होने वाले ।
२४२. **श्वेतातपत्ररुचिरः**–निर्मल मन, छल कपट रहित ।
२४३. **श्वेत चामर बीजितः**–सफेद चँवर विजेता ।

सर्वावयव सम्पूर्ण सर्व लक्षण लक्षितः ।
सर्वाभरणशोभाढ्यः सर्वशोभा समन्वितः ॥

२४४. **सर्वावयव**–सम्पूर्ण अंगों के स्वामी ।
२४५. **सम्पूर्णः**–सभी के स्वामी ।
२४६. **सर्वलक्षण लक्षितः**–सर्वगुण सम्पन्न ।
२४७. **सर्वाभरणशोभाढ्यः**–सबका पालनपोषण करने वाले ।
२४८. **सर्वशोभासमन्वितः**–सभी प्रकार की शोभा युक्त ।

सर्वमङ्गलमङ्गल्य सर्वकारणकारणम् ।
सर्वदैककरः शार्ङ्गी बीजापुरी गदाधरः ॥

२४९. **सर्वमङ्गलमंगल्य**–सम्पूर्ण मंगल करने वाले ।
२५०. **सर्वकारणकारणम्**–सभी साधन देने वाले ।
२५१. **सर्वदैककरः**–सब वस्तुएँ देने वाले ।
२५२. **शार्ङ्गी**–धनुष धारण करने वाले ।
२५३. **बीजापुरी**–शिव का धाम ।
२५४. **गदाधरः**–गदा को धारण करने वाले ।

इक्षूचापधरः शूली चक्रपाणि सरोजभृत् ।
पाशी भृतोत्पलः शालीमञ्जरीस्वदन्तभृत् ॥

२५५. **इक्षूचापधरः**–गन्ने की धनुष धारण करने वाले ।
२५६. **शूली**–त्रिशूल धारी ।
२५७. **चक्रपाणि**–हाथ में चक्र धारण करने वाले ।
२५८. **सरोजभृत्**–कमल पर विराजमान, कमल को पुष्ट करने वाले ।
२५९. **पाशी भृतोत्पलः**–सामूहिक यथार्थ ज्ञान दाता ।
२६०. **शालीमञ्जरीस्वदन्तभृत**–धान, मुक्ता, मोती, लता आदि से स्वयं के दाँतों को पुष्ट करने वाले ।

कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो वशी ।
अक्षमालाधरो ज्ञानमुदावान् मुद्गरायुधः ॥

२६१. **कल्पवल्लीधरो**–रोग निवृत्ति की लता धारण किये हुए ।

२६२. **विश्वाभयदैककरो**–सांसारिक भय दूर करने वाले ।
२६३. **वशी**–अपने वश में करने वाले ।
२६४. **अक्षमालाधरो**–रुद्राक्ष की माला धारण किये हुए ।
२६५. **ज्ञानमुदावान्**–ज्ञान व हर्ष माला ।
२६६. **मुद्गरायुधः**–व्यायाम के साधन से युद्ध करने वाले ।

पूर्णपात्री कम्बूधरो विधृतालिसमुद्रगकः ।
मातुलिङ्गधरश्चूतकलिकाभृत कुठारवान् ॥

२६७. **पूर्णपात्री**–जिसके पास सुयोग्य मनुष्य हो ।
२६८. **कम्बूधरो**–शंख धारण किये हुए ।
२६९. **विधृतालिसमुद्रगकः**–भँवरे के समान चमकीले रूप के मुद्गर वाले ।
२७०. **मातुलिङ्गधरश्चूतकलिकाभूत्**–शिवलिंग को धारण करने वाले आमवृक्ष से पालित ।
२७१. **कुठारवान्**–वज्र धारण किये हुए ।

पुस्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्णकः ।
भारती सुन्दरी नाथो विनायकरति प्रियः ॥

२७२. **पुस्तकरस्थस्वर्णघटी**–हाथी की सूँड के अग्र भाग में सोने का घड़ा धारण करने वाले ।
२७३. **पूर्णरत्नाभिवर्षकः**–सभी प्रकार के रत्नों की वर्षा करने वाले ।
२७४. **भारती सुन्दरी नाथो**–सुन्दर सरस्वती से आशीर्वाद प्राप्त ।

२७५. **विनायकरति प्रियः**–विनय युक्त अनुराग प्रिय ।

महालक्ष्मीप्रियतमः सिद्ध लक्ष्मी मनोरमः ।
रमारमेश पूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः ॥

२७६. **महालक्ष्मीप्रियतमः**–महालक्ष्मी के स्वामी ।

२७७. **सिद्ध लक्ष्मी मनोरमः**–सफलता की लक्ष्मी को प्रिय ।

२७८. **रमारमेश पूर्वाङ्गो**–लक्ष्मी-विष्णु जैसे देव नाभि के आगे या ऊपर के अंग ।

२७९. **दक्षिणोमामहेश्वरः**–शिवजी के दायें भाग में विराजमान रहने वाले ।

महीवराहवामाङ्गो रतिकंदर्पपश्चिमः ।
आमोदमोदजननः सप्रमोद प्रमोदनः ॥

२८०. **महीवराहवामाङ्गो**–विष्णु के बायें अंग ।

२८१. **रतिकंदर्पपश्चिमः**–पीछे से रति के कामदेव जैसे सुन्दर ।

२८२. **आमोदमोदजननः**–आनन्द, सुगन्ध उत्पन्नकर्ता ।

२८३. **सप्रमोद**–आनन्द सहित ।

२८४. **प्रमोदनः**–आनन्दितः ।

समेधितसमृद्धि श्री ऋषि सिद्धि प्रवर्तकः ।
दत्तसौमुख्य सुमुखः कान्तिकंदालिताश्रयः ॥

२८५. **समेधितसमृद्धि**–बढ़ी हुई समृद्धि ।

२८६. **श्री ऋषि**–लक्ष्मी-सरस्वती, तपस्वी या आचार्य ।
२८७. **सिद्धि प्रवर्तकः**–सफलता की ओर ले जाने वाले ।
२८८. **दत्तसौमुख्य**–प्रसन्नता की रक्षा करने वाले ।
२८९. **सुमुखः**–सुन्दर, कृपालु ।
२९०. **कान्तिकंदालिताश्रयः**–चमक, शोभा के आश्रयदाता ।

मदनावत्याश्रिताङ्घ्रिः कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखः ।
विघ्नसम्पल्लवोषघ्नः सेवोन्निमद्रददवः ॥

२९१. **मदनावत्याश्रितङघ्रिः**–कामदेव के समान पैर वाले ।
२९२. **कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखः**–बुरे विचार के अप्रियवादी ।
२९३. **विघ्नसम्पल्लवोषघ्नः**–बाधाओं का उपचार करने वाले ।
२९४. **सेवोन्निद्रमदद्रवः**–सेवा से विकसित कनपटियों से बहने वाले गंधयुक्त द्रव वाले ।

विघ्नकृन्निघ्न चरणो द्राविणी शक्ति सत्कृतः ।
तीव्रा प्रसन्न नयनो ज्वालिनीपालितैकदृक् ॥

२९५. **विघ्नकृन्निघ्न चरणो**–बाधाओं से दूर करने वाले चरण ।
२९६. **द्राविणी**–पिघलाने वाली ।
२९७. **शक्ति सत्कृत्**:–शक्ति से शुभ करने वाले ।
२९८. **तीव्रा प्रसन्न नयनो**–तेज, हर्ष युक्त नयन ।
२९९. **ज्वालिनीपालितैकदृक्**–आभा युक्त दृष्टि वाले ।

मोहिनी मोहिनो भोगदायिनी कान्ति मण्डितः ।
कामिनीकान्तवक्त्र श्रीराधिष्ठितवसुन्धरः ॥

३००. **मोहिनी मोहिनो**–मोहिनी को मोहने वाले ।
३०१. **भोगदायिनी**–आमोद-प्रमोद देने वाले ।
३०२. **कान्ति मण्डितः**–प्रकाश से युक्त ।
३०३. **कामिनीकान्तवक्त्र**–सुन्दर मुख वाले ।
३०४. **श्रीराधिष्ठितवसुन्धरः**–पृथ्वी पर समृद्धि सिद्ध करने वाले ।

वसुन्धरामदोन्नद्ध महाशंख निधि प्रभो ।
नमद्धसुमती मौलि महापद्मनिधि प्रभुः ॥

३०५. **वसुन्धरामदोन्नद्ध**–पृथ्वी पर मतवाले ।
३०६. **महाशंख**–विशाल शंख के समान ।
३०७. **निधि प्रभो**–कुबेर की नौ निधियों के स्वामी ।
३०८. **नमद्धसुमती मौलि**–आदर करने योग्य सुन्दर बुद्धि युक्त मस्तक ।
३०९. **महापद्मनिधि प्रभुः**–कुबेर की नव निधियों के स्वामी ।

सर्वसद्गुरुसंसेव्य शोचिष्केशहृदाश्रयः ।
ईशानमूर्धा देवेन्द्रशिखा पवननन्दनः ॥

३१०. **सर्वसद्गुरुसंसेव्य**–श्रेष्ठ गुरु द्वारा नित्य सेवनीय ।
३११. **शोचिष्केशहृदाश्रयः**–दुखियों के हृदय को शांति प्रदान करने वाले ।

३१२. **ईशानमूर्धा**–महादेव के सबसे प्यारे पुत्र ।
३१३. **देवेन्द्रशिखा**–देवताओं के राजा इन्द्र से भी श्रेष्ठ ।
३१४. **पवननन्दनः**–वायु के पुत्र ।

अग्रप्रत्यग्रनयनो दिव्यास्त्राणां प्रयोगवित् ।
ऐरावतादिसर्वाशावारणा वरणप्रियः ॥

३१५. **अग्रपत्यग्रनयनो**–चारों ओर देखने वाले ।
३१६. **दिव्यास्त्राणां**–दिव्य अस्त्र धारण करने वाले ।
३१७. **प्रयोगवित्**–भक्तों की परीक्षा लेने वाले ।
३१८. **ऐरावतादिसर्वाशावारणा**–ऐरावत हाथी पर अंकुश रखने वाले ।
३१९. **वरणप्रियः**–पूजा, अर्चना व सत्कार चाहने वाले ।

वज्राद्यस्त्रपरीवारो गजचण्डसमाश्रयः ।
जयाजयपरीवारो विजयाविजयावहः ॥

३२०. **वज्राद्यस्त्रपरीवारो**–प्रधान वज्र तलवार धारण करने वाले ।
३२१. **गजचण्डसमाश्रयः**–हाथी सदृश्य आश्रय देने वाले ।
३२२. **जयाजयपरीवारो**–सदैव जीतने वाली तलवार रखने वाले ।
३२३. **विजयाविजयावहः**–दुर्गा को जीतने वाले ।

अजितार्चितापादाब्जो नित्यानित्यावतंसितः ।
विलासिनीकृतोल्लासः शौण्डी सौन्दर्यमण्डितः ॥

३२४. **अजितार्चितापादाब्जो**–अपराजित, पूजनीय, कमल

जैसे चरणों वाले ।

३२५. **नित्यानित्यावतंसितः**–त्रिकालव्यापी (अविनाश) ।

३२६. **विलासिनीकृतोल्लासः**–सिद्धि-बुद्धि के साथ विलास कर आनन्दित होने वाले ।

३२७. **शौण्डी**–दिशा निर्देश देने वाले ।

३२८. **सौन्दर्यमण्डितः**–सौन्दर्य से परिपूर्ण ।

अनन्तानन्तः सुखदः सुमङ्गलसुमङ्गल ।
इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति निषेवितः ॥

३२९. **अनन्तानन्तः**–जिनका न आदि न अन्त है ।

३३०. **सुखदः**–सुख देने वाले ।

३३१. **सुमङ्गलसुमङ्गल**–सभी कार्य में मंगल ही मंगल करने वाले ।

३३२. **इच्छाशक्ति**–अभिलाषा को सामर्थ्य प्रदान करने वाले ।

३३३. **ज्ञानशक्ति**–ज्ञान का बल जागृत करने वाले ।

३३४. **क्रियाशक्ति**–कार्य करने में सामर्थ्य प्रदान करने वाले ।

३३५. **निषेवितः**–प्राणी मात्र को जन्म देने वाले ।

सुभगासश्रितपदो ललिता ललिता श्रयः ।
कामिनी कामनः काममालिनी केलि लालितः ॥

३३६. **सुभगासश्रितपदो**–संकटों को दूर करने वाले ।

३३७. **ललिता ललिता श्रयः**–सुन्दर से भी सुन्दर आश्रयदाता ।

३३८. कमिनी कामनः–सिद्धि-बुद्धि, सुन्दर पत्नियाँ होने से ।

३३९. काममालिनी–इच्छाओं की पूर्ति करने वाले ।

३४०. केलि–माता की गोद में खेलने वाले ।

३४१. लालितः–महादेव व पार्वती के प्यारे ।

सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्री निकेतनः ।
गुरुगुप्तपदो वाचासिद्धो वागीश्वरीपतिः ॥

३४२. सरस्वत्याश्रयो–सरस्वती या विद्या के आश्रयदाता ।

३४३. गौरीनन्दनः–पार्वती के पुत्र ।

३४४. श्री निकेतनः–लक्ष्मी का भण्डार भरने वाले ।

३४५. गुरुगुप्तपदो–गूढ़ बुद्धि देने वाले चरण युक्त ।

३४६. वाचासिद्धा–जिसकी वाणी में सरस्वती का वास हो ।

३४७. वागीश्वरीपतिः–सरस्वती देवी से सम्पन्न ।

नलिनी कामुको वामारामो ज्येष्ठा मनोरमः ।
रौद्रीमुद्रित पादाब्जो हम्बीजस्तुङ्ग शिक्तकः ॥

३४८. नलिनी कामुको–कमल के समान इच्छापूर्ति करने वाले ।

३४९. वामारामो–दुर्गा को मनोहर लगने वाले।

३५०. ज्येष्ठा मनोरमः–श्रेष्ठ या बड़ों को अच्छे लगने वाले ।

३५१. रौद्रीमुद्रित पादाब्जो–चण्डी द्वारा मुद्रित चरण चिन्ह ।

३५२. **हम्बीजस्तङ्ग शिक्तकः**–रम्भाने वाले बैल की रस्सी पकड़ने वाले ।

विश्वादि जनन त्राणः स्वाहा शक्ति सकीलकः ।
अमृताब्धिकृतवासो मदघुर्णितलोचनः ॥

३५३. **विश्वादि जनन त्राणः**–जीवात्मा की जन्म से रक्षा करने वाले ।

३५४. **स्वाहा**–यज्ञ में अग्नि रूप होकर भोजन ग्रहण करने वाले ।

३५५. **शक्ति**–मंत्र शक्ति के अधिष्ठाता ।

३५६. **सकीलकः**–श्रेष्ठ कर्मों का फल देने वाले ।

३५७. **अमृताब्धिकृतवासो**–अमृत जैसे भवन में निवास करने वाले ।

३५८. **मदघुर्णितलोचनः**–मंगलकारक घूमते हुए नेत्रों वाले अर्थात् सभी का ध्यान रखने वाले ।

उच्छिष्टगण उच्छिष्ठगणेशो गणनायकः ।
सार्वकालिक ससिद्धिर्नित्यशैवो दिगम्बरः ॥

३५९. **उच्छिष्टगण**–मधु जैसे मीठे सेवक ।

३६०. **उच्छिष्टगणेशो**–मधु जैसे सेवकों के स्वामी ।

३६१. **गणनायकः**–समूह या सेवकों के नायक ।

३६२. **सार्वकालिक ससिद्धि**–सभी कालों में रहने वाली सिद्धि देने वाले ।

३६३. **नित्यशैवो दिगम्बरः**–नित्य शिव की उपासना

करने वाले ।

अनपायोऽनन्त दृष्टिर प्रमेयोऽजरामरः ।
अनाविलोऽप्रतिरथो ह्यच्युतोऽमृतमक्षरम् ॥

३६४. **अनपायोऽनन्त दृष्टिर**–स्थिर अकल्पनीय अधिक दृष्टि युक्त ।

३६५. **प्रमेयोऽजरामरः**–कभी कष्ट न देने वाले सिद्ध स्वरूप ।

३६६. **अनाविलो**–सत्कर्मों पर चलाने वाले ।

३६७. **अप्रतिरथो**–जिसे कोई न जीत सके ।

३६८. **ह्यच्युतोऽमृतक्षरम्**–हृदय से निकलने वाले अमृत के देहधारी ।

अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजयोऽनाधारोऽनामयोऽमलः ।
अमोघसिद्धिद्वैतमघोरोऽप्रतिताननः ॥

३६९. **अप्रतर्क्यो**–संशय या वादविवाद से ऊपर रहने वाले ।

३७०. **अक्षयो**–नष्ट न होने वाले ।

३७१. **अजयो**–अजय रहने वाले ।

३७२. **अनाधारो**–दूसरों पर आधारित न रहने वाले ।

३७३. **अनामयो**–गुणों की खान है जो ।

३७४. **अमलः**–निर्मल या दोष रहित ।

३७५. **अमोघसिद्धि**–सफल या महान् सिद्धि देने वाले ।

३७६. **द्वैतमघोरो**–सिद्धि व बुद्धि के स्वामी ।

३७७. **अप्रमितानन:**–अपरिमित मुख वाले ।

अनाकारोऽब्धिभूम्यग्निबलाघ्नोऽव्यक्त लक्षण: ।
आधारपीठ: आधार: आधाराधेयवर्जित: ॥

३७८. **आनाकारोऽब्धि**–बिना आकार का सरोवर के समान बढ़ने वाले ।

३७९. **भूम्यग्निबलाघ्नो**–पृथ्वी पर अग्नि की उत्पत्ति करने वाले ।

३८०. **अव्यक्त लक्षण:**–जिसके गुणों का वर्णन न हो सके ।

३८१. **आधारपीठ:**–आश्रय देने वाले ।

३८२. **आधार:**–आश्रयदाता ।

३८३. **आधाराधेयवर्जित:**–आराधना करने वालों को आश्रय देने वाले ।

आखुकेतन आशापूरक आखूमहारथ: ।
इक्षु सागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालस: ॥

३८४. **आखुकेतन**–मूषक को वाहन रूप में काम लेने वाले ।

३८५. **आशापूरक**–आशा पूरी करने वाले ।

३८६. **आखूमहारथ:**–मूषक सवार महायोद्धा ।

३८७. **इक्षु सागरमध्यस्थ**–गन्ने के सागर के मध्य अर्थात् सभी को मीठा करने वाले ।

३८८. **इक्षुभक्षणलालस:**–गन्ने खाने की इच्छा रखने वाले ।

इक्षुचापातिरेक श्रीरिक्षुचाप निषेवित: ।
इन्द्रगोपसमान श्रीरिन्द्रनील समद्युति: ॥

३८९. **इक्षुचापातिरेक**–गन्ने की धनुषकमान की अधिकता वाले ।

३९०. **श्रीरिक्षुचाप**–ऐश्वर्य देने वाले चन्द्रमा सदृश्य धनुष ।

३९१. **निषेवितः**–निरन्तर गतिशील ।

३९२. **इन्द्रगोपसमान**–इन्द्र सदृश्य सम्पत्ति देने वाले ।

३९३. **श्रीरिन्द्रनील**–ऐश्वर्य देने वाली मंगलध्वनि वाले ।

३९४. **समद्युतिः**–आनन्ददाता ।

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डल निर्मलः ।
इध्मप्रिय इडाभाग इराधामेन्दिरा प्रियः ॥

३९५. **इन्दीवरदलश्याम**–नीलकमल की पंखुड़ी जैसे ।

३९६. **इन्दुमण्डल**–चन्द्रमा के मण्डल ।

३९७. **निर्मलः**–स्वच्छता प्रिय ।

३९८. **इध्मप्रिय**–निर्मलता को चाहने वाले ।

३९९. **इडाभाग**–पृथ्वी को बनाने वाले ।

४००. **इराधामेन्दिरा प्रियः**–भूमि पर लक्ष्मी के प्रिय ।

इक्षवाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्त्तव्यतेप्सितः ।
ईशानमोलिरोशान ईशानसुत ईतिहा ॥

४०१. **इक्षवाकुविघ्नविध्वंसी**–प्रथम सूर्यवंशी राजा की कठिनाइयाँ दूर करने वाले ।

४०२. **इतिकर्त्तव्यतेप्सितः**–नियमानुसार करने योग्य धर्म कर्ता ।

४०३. **ईशानमोलिरोशान**–चमकीले मुकुट से प्रकाश देने

वाले ।

४०४. **ईशानसुत**–महादेव के पुत्र ।

४०५. **ईतिहा**–झगड़ा या खेती की आपत्तियां को दूर करने वाले ।

ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः ।
उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरून्डेरकबलिप्रियः ॥

४०६. **ईषणात्रयकल्पान्त**–शीघ्रता से तीन प्रलय करने वाले ।

४०७. **ईहामात्रविवर्जितः**–लोभ मात्र को त्यागा हुआ ।

४०८. **उपेन्द्र**–विष्णु ।

४०९. **उडुभृन्मौलिरून्डेरकबलिप्रियः**–नक्षण के सिर, धड़ के बलिप्रिय ।

उन्नतानन उतुङ्गः उदारत्रिदशाग्रणीः ।
ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः ॥

४१०. **उन्नतानन**–ऊँचे मुख वाले ।

४११. **उतुङ्ग**–शिव, ब्रह्मा, मनुष्य में ऊँचे, प्रचंड ।

४१२. **उदारत्रिदशाग्रणीः**–श्रेष्ठ उदार देवता ।

४१३. **ऊर्जस्वानूष्मलपद**–शक्तिशाली तीव्र पाँव वाले ।

४१४. **ऊहापोहदुरासदः**–तर्क द्वारा दुष्प्राप्य संशय मिटाने वाले ।

ऋग्यजुः सामसम्भूति ऋद्धि सिद्धि प्रवर्तकः ।
ऋजुचितैकसुलभ ऋणत्रय विमोचकः ॥

४१५. **ऋग्यजुः सामसम्भूति**–निन्दक को मधुर भाषण से अपनी ओर मिलाने वाले ।

४१६. **ऋद्धि सिद्धि प्रवर्तकः**–समृद्धि की ओर ले जाने वाले ।

४१७. **ऋजुचितैकसुलभ**–सरल चित्त को सुलभ प्राप्त करने वाले ।

४१८. **ऋणत्रय विमोचकः**–तीन ऋणों से मुक्त करने वाले ।

लुप्त विघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम् ।
लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः ॥

४१९. **लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां**–स्वयं के भक्तों को अदृश्य कठिनाइयों से दूर करने वाले ।

४२०. **लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम्**–देवताओं के विरोधियों हेतु अदृश्य बल प्रयोग करने वाले ।

४२१. **लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां**–खोई हुई सम्पन्नता प्राप्ति हेतु ।

४२२. **लूताविस्फोटनाशनः**–बाधाओं का जाल नष्ट करने वाले ।

एकार पीठ मध्यस्थ एकपादकृतासनः ।
एजिताखिल दैत्य श्रीरेधिताखिलसंश्रयः ॥

४२३. **एकार पीठ मध्यस्थ**–विष्णु धाम के आसनों के बीच में विराजमान ।

४२४. **एकपादकृतासनः**–एक चरण से संपादित आसन पर

विराजमान होने वाले ।

४२५. **एजिताखिल दैत्य**–सभी दैत्यों को जीतने वाले ।

४२६. **श्रीरेधिताखिलसंश्रयः**–सभी निधियों के आश्रयदाता ।

ऐश्वर्य निधिरैश्वर्य मैहिकामुष्मिक प्रदः ।
ऐरम्मदसमोन्मेष ऐरावत निभाननः ॥

४२७. **ऐश्वर्य निधिरैश्वर्य**–धन-सम्पत्ति, सुयश प्रदान करने वाले ।

४२८. **मैहिकामुष्मिक प्रदः**–तेज प्रमेहकर्ता ।

४२९. **ऐरम्मदसमोन्मेष**–महादेव के समान चमक वाले ।

४३०. **ऐरावत**–इन्द्र के हाथी के समान बल वाले ।

४३१. **निभाननः**–पालनकर्ता ।

ओंकारवाच्य ओंकार ओजस्ववानोषधीपतिः ।
औदार्यनिधिरौद्धत्यधुर्यं औन्नत्यनिरस्वनः ॥

४३२. **ओंकारवाच्य**–बहुत अच्छा कहने वाले ।

४३३. **ओंकार**–परब्रह्म या परमात्मा ।

४३४. **ओजस्वानोषधीपतिः**–कुशल औषधि के स्वामी ।

४३५. **औदार्यनिधिः**–उदारता के भण्डार ।

४३६. **औद्धत्यधुर्यं**–सद्विचार स्थापित करने वाले ।

४३७. **औन्नत्यनिरस्वनः**–धृष्टता को शिष्टता में बदलने वाले ।

अंकुशः सुरनागानामंकुशः सुरविद्वषाम् ।
अः समस्तविसर्गान्तपदेषु परिकीर्तितः ॥

४३८. **अंकुशः**–बुराइयों का समूल नाश करने वाले ।
४३९. **सुरनागानामंकुशः**–ऋषि-मुनियों के रक्षक ।
४४०. **सुरविद्वषाम्**–देवताओं में विद्वान् ।
४४१. **अः समस्तविसर्गान्तपदेषु**–समस्त मोक्ष दाता ।
४४२. **परिकीर्तितः**–प्रशंसित ।

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः ।
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्म फलप्रदः ॥

४४३. **कमण्डलुधरः**–शिवजी का कमण्डल धारण करने वाले ।
४४४. **कल्पः**–विधि-विधान के ज्ञाता ।
४४५. **कपर्दी**–शिवजी के पुत्र ।
४४६. **कलभाननः**–हाथी के पुत्र ।
४४७. **कर्मसाक्षी**–कर्म को प्रत्यक्ष करने वाले ।
४४८. **कर्मकर्ता**–कार्य कारक या काम करने वाले ।
४४९. **कर्माकर्म फलप्रदः**–कार्य का फल देने वाले ।

कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्ड गणनायकः ।
कारूण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत् ॥

४५०. **कदम्बगोलकाकारः**–कदम्ब जैसे गोलाकार शरीर वाले ।
४५१. **कूष्माण्ड**–सीताफल के सदृश्य इच्छापूरक ।
४५२. **गणनायकः**–समूह के नेता ।
४५३. **कारूण्यदेहः**–भक्तों पर दया करने वाले ।
४५४. **कपिलः**–भूरे रंग वाले श्रीगणेश ।

४५५. **कथकः**–पौराणिक कथा वाचक ।

४५६. **कटिसूत्रभृत्**–कमर के आभूषण करधनी से पुष्ट होने वाले ।

सर्वे खड्गप्रिय खड्गखान्तान्तस्थः खनिर्मलः ।
खल्वाटशृंगनिलयः खट्वाङ्गो खदुरासदः ॥

४५७. **सर्वे खड्गप्रिय**–सभी तलवार या शस्त्र प्रिय ।

४५८. **खड्गखान्तान्तस्थः**–तलवार से शत्रुओं का नाश करने वाले ।

४५९. **खनिर्मलः**–मोक्षदाता, आकाश जैसे स्वच्छ ।

४६०. **खल्वाटशृंगनिलयः**–जीवमात्र के सिर के बालों की रक्षा करने वाले ।

४६१. **खटवाङ्गो**–गज के शरीर का सम्मिश्रण होने से ।

४६२. **खदुरासदः**–विचित्र शरीर वाले ।

गुणाढ्यो गहनो गस्थो गद्य पद्य सुधार्णवः ।
गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाण पूर्वजः ॥

४६३. **गुणाढ्यो**–गुणयुक्त, गुणवान ।

४६४. **गहनो**–अथाह सम्पत्ति प्रदान करने वाले ।

४६५. **गस्थो**–गाने में लीन ।

४६६. **गद्य पद्य सुधार्णवः**–गद्य-पद्य साहित्य के उत्तम सेवक व रक्षक ।

४६७. **गद्यगानप्रियो**–संगीत में शुद्ध गान व राग के प्रिय ।

४६८. **गर्जो**–हाथी सदृश्य गर्जना करने वाले ।

४६९. **पूर्वजः**–पूर्व पुरुष, पुरखा ।
४७०. **पूर्वजः**–पूर्वपुरुष, पुरखा

गुह्याचारतो गुह्यो गुह्यागम निरूपितः ।
गुहाशयो गुहाऽधिस्थो गुरुगभ्यो गुरोर्गुरूः ॥

४७१. **गुह्याचारतो**–परमात्मा, ब्रह्मा ।
४७२. **गुह्यो**–गोपनीय, गूढ़ ।
४७३. **गुह्यागम**–जिसका अर्थ सहज में स्पष्ट न हो ।
४७४. **निरूपितः**–निर्णय या विचारकर्ता ।
४७५. **गुहाशयो**–परमेश्वर, कार्तिकेय, माया आदि के आश्रयदाता ।
४७६. **गुहाऽधिस्थो**–हृदय में बसे हुए ।
४७७. **गुरुगभ्यो**–गुरु उपभोगकर्ता ।
४७८. **गुरोर्गुरुः**–गुरु के गुरु, सबसे महान् ।

घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः ।
चण्डश्चंडेश्वर सुहृदचण्डीशश्चण्ड विक्रमः ॥

४७९. **घण्टाघर्घरिकामाली**–घंटाघर के समय या काल के रक्षक ।
४८०. **घटकुम्भो**–माथे का मध्य भाग घड़े के आकार जैसे शरीर वाले ।
४८१. **घटोदरः**–जिनका उदर घड़े जैसा है ।
४८२. **चण्डश्चंडेश्वर**–शिव के प्रचण्ड से प्रबल रूप वाले ।
४८३. **सुहच्चण्डीशश्चण्ड विक्रमः**–शिव गणों से अधिक पराक्रमशाली ।

चराचरपतिश्चिन्तामणिचर्वणलालसः ।
छन्दश्छन्दोवपुश्छन्दो दुर्लक्ष्यछन्दविग्रहः ॥

४८४. **चराचरपति**–चर और अचर संसार के स्वामी ।
४८५. **चिन्तामणि**–सब मनोकामना पूर्ण करने वाले ।
४८६. **चर्वणलालसः**–भुने हुए अन्न के इच्छुक देवता ।
४८७. **छन्दश्छन्दो**–वेदों के वेद वाक्य ।
४८८. **वपुश्छन्दो**–शरीर का छन्द या अभिलाषी ।
४८९. **दुर्लक्ष्यछन्दविग्रहः**–अदृश्य या बुरे उद्देश्य दूर करने वाले ।

जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः ।
जपो जपपरो जप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः ॥

४९०. **जगद्योनि**–शिव, ब्रह्मा, विष्णु, पृथ्वी जैसे परमेश्वर ।
४९१. **जगत्साक्षी**–सूर्य ।
४९२. **जगदीशो**–परमेश्वर ।
४९३. **जगन्मयः**–विष्णु जैसे ।
४९४. **जपो जपपरो**–पाठ या बारम्बार उच्चारण करने योग्य ।
४९५. **जप्यो**–जपने योग्य ।
४९६. **जिह्वासिंहासनप्रभुः**–जिह्वा रूपी सिंहासन के प्रभु ।

झलज्झलोल्लसद्यानझङ्कारि भ्रमरा कुलः ।
टंकारस्फारसंरावष्टंकारिमणिनूपुरः ॥

४९७. **झलज्झलोल्लसद्यानझङ्कारि**–उत्कट से उत्कट इच्छा

पूरी करने वाले ।

४९८. **भ्रमरा कुलः**–भँवरों के समूह वाले ।

४९९. **टंकारस्फारसंरावष्टंकारिमणिनूपुरः**–प्रचुर झनकार करने वाली रत्नयुक्त पैजनी पहनने वाले ।

ठद्वयीपल्लवान्तः स्थसर्वमन्त्रैक सिद्धिदः ।
डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिम प्रियः ॥

५००. **ठद्वयीपल्लवान्तः**–शिव रहस्य या लड़ाई समाप्त करने वाले ।

५०१. **स्थसर्वमन्त्रैक**–सभी प्रधान मन्त्रों में उपस्थित ।

५०२. **सिद्धिदः**–सफलता देने वाले ।

५०३. **डिण्डिमुण्डो**–डिमडिमी जैसे माथे वाले ।

५०४. **डाकिनीशो**–भूत, यक्ष आदि को नष्ट करने वाले ।

५०५. **डामरो**–शिवजी का बनाया तंत्री, ठाटबाट, चमत्कार वाला ।

५०६. **डिण्डिम प्रियः**–डिमडिमी को चाहने वाले ।

ढक्कानिनादमुदितौ ढौको ढुण्ढि विनायकः ।
तत्त्वानां परं तत्त्वं तत्त्वं पद निरूपितः ॥

५०७. **ढक्कानिनादमुदितौ**–ढोल की आवाज से प्रसन्न होने वाले ।

५०८. **ढौको**–स्वतन्त्र रूप से विचरण करने वाले ।

५०९. **ढुण्ढि विनायकः**–अन्वेषण कर्ता गण के नायक ।

५१०. **तत्त्वानां परं तत्त्वं**–वस्तु का श्रेष्ठ सार, श्रेष्ठ परमात्मा ।

५११. **तत्त्वं पद निरूपितः**–परमात्मा के चरण बनाने वाले ।

तारकान्तरसंस्थानस्तारकस्तारकान्तकः ।
स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरं जङ्गमं जगत् ॥

५१२. **तारकान्तरसंस्थान**–कुमार कार्तिकेय के पास के नक्षत्र ।
५१३. **तारकः**–तारकासुर का संहार करने वाले ।
५१४. **तारकान्तकः**–कुमार कार्तिकेय के अनुज ।
५१५. **स्थाणुःक स्थाणुप्रियः**–शिव के प्रिय ।
५१६. **स्थाता**–ठहरने वाले ।
५१७. **स्थावरं**–एक जगह स्थापित रहने वाले ।
५१८. **जङ्गमं जगत्**–जगत् में चलने-फिरने वाले ।

दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानवमोहनः ।
दयावान् दिव्यविभवो दण्डभृच्छण्डनायकः ॥

५१९. **दक्षयज्ञप्रमथनो**–दक्ष के यज्ञ से प्रसन्न होने वाले ।
५२०. **दाता**–दानशील, देने वाले ।
५२१. **दानवमोहनः**–राक्षसों में मोह उत्पन्न करने वाले ।
५२२. **दयावान्**–कृपालु, चित्त में दया रखने वाले ।
५२३. **दिव्यविभवो**–अलौकिक ऐश्वर्य युक्त ।
५२४. **दण्डभृच्छण्डनायकः**–दुष्टों, अभक्तों को दण्ड देने का अधिकार रखने वाले ।

दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः ।
दंष्ट्रालग्नद्विपघटो देवार्थनृगजाकृतिः ॥

५२५. **दन्तप्रभिन्नभ्रमालो**–पूर्णभेद युक्त आम की कतार जैसे दांत युक्त ।

५२६. **दैत्यवारणदारणः**–दैत्यों को रोकने व फाड़ने वाले ।

५२७. **दंष्ट्रालग्नद्विपघटो**–हाथी के बड़े दांतों से लगे हुए घड़े वाले ।

५२८. **देवार्थनृगजाकृतिः**–देवताओं के लिए मनुष्य एवं हाथी की आकृति धारण करने वाले ।

धनधान्यपतिर्धन्यो धनदो धरणीधरः ।
ध्यानैक प्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः ॥

५२९. **धनधान्यपतिर्धन्यो**–समृद्धों से भी समृद्ध ।

५३०. **धनदो**–धनदायक ।

५३१. **धरणीधरः**–पृथ्वी को धारण करने वाले ।

५३२. **ध्यानैक प्रकटो**–ध्यान करने से प्रकट होने वाले ।

५३३. **ध्येयो**–ध्यान करने योग्य ।

५३४. **ध्यानं ध्यानपरायणः**–चिंचित का चिन्तन करने वाले ।

नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्य प्रतिष्ठितः ।
निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः ॥

५३५. **नन्द्यो**–आनन्द युक्त ।

५३६. **नन्दिप्रियो**–शिवजी के अनुचर के प्रिय ।

५३७. **नादो**–ऊँची आवाज करने वाले ।

५३८. **नादमध्य प्रतिष्ठितः**–संगीत के मध्य विराजने वाले ।
५३९. **निष्कलो**–ब्रह्मा सदृश्य ।
५४०. **निर्मलो**–पवित्र ।
५४१. **नित्यो**–अविनाशी, समुद्र, सदृश्य ।
५४२. **नित्यानित्यो**–तीनों कालों में सर्वदा रहने वाले ।
५४३. **निरामयः**–निरोगी, स्वस्थ रखने वाले ।

परं व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम् ।
परात्परः पशुपतिः पशुपाश विमोचकः ॥

५४४. **परं व्योम**–श्रेष्ठ आकाश ।
५४५. **परं धाम**–शोभा युक्त, तेजवान श्रेष्ठ शरीर वाले ।
५४६. **परमात्मा**–परब्रह्म, ईश्वर, चिदात्मा ।
५४७. **परंदम्**–श्रेष्ठ चरण वाले ।
५४८. **परात्परः**–परमात्मा ।
५४९. **पशुपतिः**–शिव, औषधि दाता ।
५५०. **पशुपाश विमोचकः**–पशुरूप जीव का बन्धन दूर करने वाले ।

पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः ।
पद्मप्रसन्ननयनः प्रणताज्ञान मोचनः ॥

५५१. **पूर्णानन्दः**–परमेश्वर, पूर्ण आनन्द ।
५५२. **परानन्दः**–श्रेष्ठ आनन्द वाले, उपनिषद से आनन्दित ।
५५३. **पुराणपुरुषोत्तमः**–विष्णु से उत्तम ।
५५४. **पद्मप्रसन्ननयनः**–कमल जैसी प्रसन्न आँखों वाले ।

५५५. **प्रणताज्ञान मोचनः**–नम्रता या चतुराई का ज्ञान देने वाले ।

प्रमाण प्रत्यातीतः प्रणतार्तिनिवारणः ।
फलहस्तः फणिपतिः फेत्कारः फाणित प्रियः ॥

५५६. **प्रमाण प्रत्यातीतः**–विश्वस्त प्रमाण युक्त ।

५५७. **प्रणतार्तिनिवारणः**–प्रतिज्ञा दुःख को दूर करने वाले ।

५५८. **फलहस्तः फणिपतिः**–उद्देश्य सिद्धि हाथ वाले, शेषनाग के समान ।

५५९. **फेत्कारः फाणित प्रियः**–फल लाभ की कृपा करने वाले, गुड़, दही, सत्तु के प्रिय ।

बाणाचिताङ्घ्रियुगलो बालकेलि कुतूहली ।
ब्रह्म ब्रह्मर्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः ॥

५६०. **बाणाचिताङ्घ्रियुगलो**–बाण द्वारा पूजे जाने वाले दो चरणों वाले ।

५६१. **बालकेलि कुतूहली**–अतिसाधारण काम के शौकीन ।

५६२. **ब्रह्म**–ज्ञानमय, परमात्मा, आनन्दस्वरूप आत्मा ।

५६३. **ब्रह्मर्चितपदो**–ब्राह्मण या ज्ञानियों द्वारा पूज्य चरणों वाले ।

५६४. **ब्रह्मचारी**–उपनयन के बाद वेद अध्ययन हेतु गुरु के पास रहने वाले ।

५६५. **बृहस्पति**–देवताओं के गुरु ।

ब्रह्मोत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः ।
ब्रह्मन्नादाग्रयचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः ॥

५६६. **ब्रह्मोत्तमो**–ब्रह्मा, ज्ञानियों में उत्तम ।
५६७. **ब्रह्मपरो**–ब्रह्मा, ज्ञानियों में श्रेष्ठ ।
५६८. **ब्रह्मण्यो**–ब्राह्मणों पर कृपा रखने वाले ।
५६९. **ब्रह्मवित्प्रियः**–ब्रह्म ज्ञाता प्रिय ।
५७०. **ब्रह्मन्नादाग्रय**–ब्रह्म की नाद करने वाले नेता ।
५७१. **चीत्कारो**–तेज ध्वनि से प्रभु चिन्तन करने वाले को बल प्रदान करने वाले ।
५७२. **ब्रह्माण्डावलिमेखलः**–सम्पूर्ण विश्व को खाद्यान्न प्रदान करने वाले ।

भ्रूषेपदत्त लक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः ।
भगवान भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः ॥

५७३. **भ्रूक्षेपदत्त**–भौंहों को तिरछी करके संकेत से रक्षा करने वाले ।
५७४. **लक्ष्मीको**–सम्पत्ति दाता ।
५७५. **भर्गो**–प्राणी मात्र को परिपक्व करने वाले ।
५७६. **भद्रो**–मंगल करने में श्रेष्ठ ।
५७७. **भयापहः**–अभक्तों को डराने वाले ।
५७८. **भगवान**–परमेश्वर, पूज्य, ऐश्वर्य युक्त ।
५७९. **भक्तिसुलभो**–भक्ति द्वारा आसानी से प्राप्त होने वाले ।
५८०. **भूतिदो**–शिव की आठ सिद्धियाँ (अणिमा, महिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य) देने वाले ।

५८१. **भूतिभूषणः**–अथाह धन सम्पदा प्रदान करने वाले ।

भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रूमध्य गोचरः ।
मन्त्रो मन्त्रपतिर्मन्त्री मदमत्तमनोरमः ॥

५८२. **भव्यो**–मंगलसूचक, देखने में भारी, सुन्दर ।
५८३. **भूतालयो**–विष्णु के पास निवास करने वाले ।
५८४. **भोगदाता**–सुख या दुःख का अनुभव देने वाले ।
५८५. **भ्रूमध्य गोचरः**–पृथ्वी के मध्य भ्रमण कर शत्रु का संहार करने वाले ।
५८६. **मन्त्रो**–परामर्श देने वाले ।
५८७. **मन्त्रपतिर्मन्त्री**–परामर्श द्वारा सम्मति देने वाले ।
५८८. **मदमत्तमनोरमः**–मद में मस्त सुन्दरता युक्त ।

मेखलावान् मन्दगतिर्मतिमत्कमलेक्षणः ।
महाबलो महावीर्यो महाप्राणाउे महामनाः ॥

५८९. **मेखलावान्**–सम्पत्ति का सद्कार्यों में उपयोग कराने वाले ।
५९०. **मन्दगति**–कार्य को विवेक एवं शान्ति से पूर्ण करने वाले ।
५९१. **मतिमत्कमलेक्षणः**–बुद्धि एवं सम्मति देने वाले ।
५९२. **महाबलो**–बहुत अधिक बल वाले ।
५९३. **महावीर्यो**–अत्यधिक बलशाली ।
५९४. **महाप्राणो**–विशाल प्राणवायु प्रदान करने वाले ।
५९५. **महामनाः**–विस्तृत अन्तःकरण या मन वाले ।

यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः ।
यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजक प्रियः ॥

५९६. **यज्ञ**–देवताओं की पूजा तथा हवन में भाग लेने वाले ।
५९७. **यज्ञपति**–यज्ञादि कार्यों में सर्वप्रथम पूजे जाने वाले ।
५९८. **यज्ञगोप्ता**–यज्ञ को गोपनीय रखने वाले ।
५९९. **यज्ञफलप्रदः**–यज्ञ का फल देने वाले ।
६००. **यशस्करो**–कीर्ति में वृद्धि करने वाले ।
६०१. **योगगम्यो**–ध्यान योग में बल प्रदान करने वाले ।
६०२. **याज्ञिको**–यज्ञ करने वाले ।
६०३. **याजक प्रियः**–यज्ञ करने वालों के प्रिय ।

रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावाणर्चितः ।
रक्षो रक्षाकरो रत्नगर्भो राजसुखप्रदः ॥

६०४. **रसो**–भक्ति रस में मग्न रहने वाले ।
६०५. **रसप्रियो**–मधुर भोजन ग्रहण करने वाले ।
६०६. **रस्यो**–काव्य के रस को जीतने वाले ।
६०७. **रञ्जको**–भक्ति के रंग में रंगने वाले ।
६०८. **रावाणर्चितः**–दशानन द्वारा पूज्य ।
६०९. **रक्षो**–कष्ट व आपत्ति से बचाने वाले ।
६१०. **रक्षाकरो**–रक्षा करने वाले ।
६११. **रत्नगर्भो**–कुबेर के समान धनदाता ।
६१२. **राजसुखप्रदः**–राजा जैसा सुख प्रदान करने वाले ।

लक्ष्यं लक्ष्यप्रदो लक्ष्यो लक्षस्थो लड्डूकप्रियः ।
लानप्रियो लास्यपरो लाभकृल्लोकविश्रुतः ॥

६१३. **लक्ष्यं**–उद्देश्य पूर्ति करने वाले ।
६१४. **लक्ष्यप्रदो**–उद्देश्य प्रदान करने वाले ।
६१५. **लक्ष्यो**–लक्षणा शक्ति द्वारा समझे जाने वाले ।
६१६. **लक्षस्थो**–लक्ष्य के समीप ले जाने वाले ।
६१७. **लड्डूकप्रियः**–मोदक प्रिय ।
६१८. **लानप्रियो**–अंगूर फल जिसको प्रिय है ।
६१९. **लास्यपरो**–नृत्य साम गान करने वाले ।
६२०. **लाभकृल्लोकविश्रुतः**–लाभ-उपकार कार्य करके भूलने वाले ।

वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः ।
विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः ॥

६२१. **वरेण्यो**–पूजनीय, प्रधान, शिव ।
६२२. **वह्निवदनो**–अग्नि सदृश्य लाल मुख वाले ।
६२३. **वन्द्यो**–वन्दना करने योग्य ।
६२४. **वेदान्त गोचरः**–ब्रह्म विद्या, आध्यातम विद्या के ज्ञाता ।
६२५. **विकर्ता**–अन्नदाता ।
६२६. **विश्वतश्चक्षु**–चारों ओर देखने वाले ।
६२७. **विधाता**–जगत् को रचने वाले, प्रबन्ध करने वाले ।
६२८. **विश्वतोमखः**–परमेश्वर ।

वामदेवो विश्वनेता वज्रिवज्रनिवारणः ।
विश्व बन्धन विष्कम्भाधारो विश्वेश्वर प्रभुः ॥

६२९. **वामदेवो**–शिव स्मरण करने वाले ।
६३०. **विश्वनेता**–संसार के नायक ।
६३१. **वज्रिवज्रनिवारणः**–इन्द्र के प्रकोप को कम करने वाले ।
६३२. **विश्व बन्धन**–सांसारिक बन्धनों से दूर रहने वाले ।
६३३. **विष्कम्भाधारो**–विस्तार, विघ्न, भूत-भविष्य का आधार ।
६३४. **विश्वेश्वर**–सम्पूर्ण विश्व के ईश्वर ।
६३५. **प्रभुः**–ईश्वर, नायक, पालक, शिव, विष्णु ।

शब्दब्रह्म शमप्राप्यः सम्भुशक्ति गणेश्वरः ।
शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शिखरीश्वरः ॥

६३६. **शब्दब्रह्म**–शब्दात्मक ब्रह्म ।
६३७. **शमप्राप्यः**–शान्ति, मोक्ष, क्षमा, उपचार प्राप्त कराने वाले ।
६३८. **सम्भुशक्ति**–शिव की शक्ति प्रदान करने वाले ।
६३९. **गणेश्वरः**–गण समूह के ईश्वर ।
६४०. **शास्ता**–शासन करने वाले, राजा ।
६४१. **शिखाग्रनिलयः**–सबसे ऊपर श्रेष्ठ गृह वाले ।
६४२. **शरण्यः**–शरणागत की रक्षा करने वाले ।
६४३. **शिखरीश्वरः**–वृक्ष, पहाड़ी, दुर्ग, कोट आदि के रक्षक ।

षड्ऋतुकुसुमस्त्रग्वी षडाधारः षडक्षरः ।
संसार वैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम् ॥

६४४. **षड्ऋतुकुसुमस्त्रवी**–छः ऋतु में पुष्पों की वर्षा करने वाले ।

६४५. **षडाधारः**–सृष्टि के आधार ।

६४६. **षडक्षरः**–छः अक्षरों से युक्त ।

६४७. **संसार वैद्यः**–संसार के रोगों का उपचार करने वाले ।

६४८. **सर्वज्ञः**–सब कुछ जानने वाले ।

६४९. **सर्वभेषजभेषजम्**–सभी औषधियों को बनाने वाले ।

सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जर भेदनः ।
सिन्दूरितमहाकुम्भः सदसद्व्यक्तिदायकः ॥

६५०. **सृष्टिस्थितिलयक्रीडः**–जगत् की उत्पत्ति, ठहराव, विनाश कर्ता ।

६५१. **सुरकुञ्जरभेदनः**–गूढ़ रहस्य जानने वाले ।

६५२. **सिन्दूरितमहाकुम्भः**–शरीर पर सिन्दूर ग्रहण करने वाले ।

६५३. **सदसद्व्यक्तिदायकः**–शुभ कार्य पूर्ण करने वाले ।

साक्षी समुद्रमंथनः स्वसंवेद्यः स्वदक्षिणः ।
स्वतन्त्रः सत्यसंकल्पः सामगानरतः सुखी ॥

६५४. **साक्षी समुद्रमंथन**–समुद्र मंथन को देखने वाले ।

६५५. **स्वसंवेद्यः**–स्वयं अनुभव करने योग्य ।

६५६. **स्वदक्षिणः**–सभी कुछ देने में समर्थ ।
६५७. **स्वतन्त्रः**–भक्तों को स्वतन्त्र रखने वाले ।
६५८. **सत्यसंकल्पः**–सदैव सत्य का साथ देने वाले ।
६५९. **सामगानरतः**–सामवेद गाने वाले, मधुर बात से प्रभावित होने वाले ।
६६०. **सुखी**–आनन्द देने वाले ।

हंसो हस्तिपिशाचिशो हवनं हत्यकण्यभुक ।
हव्यो हुतप्रियो हर्षो हल्लेखामन्त्रमध्यगः ॥

६६१. **हंसो**–राजा ।
६६२. **हस्तिपिशाचिशो**–हाथी, भूत-प्रेतों के स्वामी ।
६६३. **हवनं**–हवन में लेकर आहुति ग्रहण करने वाले ।
६६४. **हत्यकण्यभुक**–हवन में पितरों को दी जाने वाली आहुति का आहार करने वाले ।
६६५. **हव्यो**–आहुति ग्रहण कर्ता ।
६६६. **हुतिप्रियो**–हवन की सामग्री के प्रिय ।
६६७. **हर्षो**–आनन्दित करने वाले ।
६६८. **हल्लेखामन्त्रमध्यगः**–उत्सुकता या ज्ञान, तर्क व मन्त्र के बीच रहने वाले ।

क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमापरपरायणः ।
क्षिप्र क्षेमकरः क्षोमानन्दः क्षोणी सुरद्रुमः ॥

६६९. **क्षेत्राधिपः**–भूमि के मालिक ।
६७०. **क्षमाभर्ता**–प्राणी मात्र से हुई भूल या गलती को क्षमा करने वाले ।

६७१. **क्षमापरपरायणः**–प्रार्थना पर क्षमा करने को तत्पर रहने वाले ।

६७२. **क्षिप्र क्षेमकरः**–प्रार्थना पर शीघ्र कुशल-मंगल करने वाले ।

६७३. **क्षोमानन्दः**–रेशमी वस्त्र से आनन्दित होने वाले ।

६७४. **क्षोणी**–पृथ्वी अथवा भूमि के स्वामी ।

६७५. **सुरद्रुमः**–कल्प वृक्ष (सभी कामनाओं को पूरा करने वाले) ।

धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्य वर्द्धनः ।
विद्याप्रदो विभवदो भुक्ति मुक्ति फलप्रदः ॥

६७६. **धर्मप्रदः**–धर्म की रक्षा करने वाले ।

६७७. **अर्थदः**–सम्पत्तिदाता ।

६७८. **कामदाता**–काम देने वाले ।

६७९. **सौभाग्य वर्द्धनः**–सुख-सौभाग्य को बढ़ाने वाले ।

६८०. **विद्याप्रदो**–ऐश्वर्य, मोक्ष आदि देने वाले ।

६८१. **भुक्ति मुक्ति फलप्रदः**–भोजन एवं लौकिक सुख से मोक्ष प्रदान करने वाले ।

६८२. **भुक्ति मुक्ति फलप्रदः**–भोजन एवं लौकिक सुख से मोक्ष दान करने वाले ।

अभिरूप्यकरो वीर श्रीप्रदो विजयप्रदः ।
सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्र पौत्रदः ॥

६८३. **अभिरूप्यकरो**–देह को सुन्दर बनाने वाले ।

६८४. **वीरः**–साहसी और बलवान ।

६८५. **श्रीप्रदः**–पूज्यपाद, पूजने योग्य चरण वाले ।
६८६. **विजयप्रदः**–विजय प्रदान करने वाले ।
६८७. **सर्ववश्यकरो**–सभी को अपनी अच्छा के अधीन करने वाले ।
६८८. **गर्भदोषहा**–गर्भ के विकार को दूर करने वाले ।
६८९. **पुत्र पौत्रदः**–पुत्र-पौत्र देने वाले ।

मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्य नाशनः ।
प्रतिवादी मुखस्तम्भो रूष्टचित्त प्रसादनः ॥

६९०. **मेधादः**–बुद्धि, स्मरण शक्ति देने वाले ।
६९१. **कीर्तिदः**–यश, प्रसिद्धि व पुण्य आदि प्रदान करने वाले ।
६९२. **शोकहारी**–सांसारिक दुःखों को दूर करने वाले ।
६९३. **दौर्भाग्य नाशनः**–दुर्भाग्य का नाश करने वाले ।
६९४. **प्रतिवादी मुखस्तभो**–विरोधी के मुख पर प्रतिबन्ध लगाने वाले ।
६९५. **रुष्टचित्तप्रसादनः**–रोष युक्त मन को प्रसन्नता देने वाले ।

पराभिचारशमनो दुःखभञ्जन कारकः ।
लवस्त्रुटिः कालाकाष्ठा निमेषस्तत्परः क्षणः ॥

६९६. **पराभिचारशमनो**–मन्त्र-तन्त्र से मारण, वशीकरण के प्रभाव को नष्ट करने वाले ।
६९७. **दुःखभञ्जनकारकः**–दुःख दूर करने वाले ।
६९८. **लवस्त्रुटिः**–विनाश से बचाने वाले ।

६९९. **कालाकाष्ठा**–प्रचण्ड उत्कर्ष वाले ।

७००. **निमेषस्तत्परः क्षणः**–प्रार्थना पर, विवाह आदि उत्सव में क्षर भर में प्रकट होने वाले ।

घटी मुहूर्त प्रहरो दिवा नक्तमहर्निशम् ।
पक्षो मासोऽयनं वर्ष युगं कल्पो महालयः ॥

७०१. **घटी मुहूर्त**–घड़ी, काल का एक भाग या निदिष्ट समय में प्रसन्न होने वाले ।

७०२. **प्रहरो**–शत्रुओं से रक्षा करने वाले ।

७०३. **दिवा**–पूजा से दिन में विशेष प्रसन्न रहने वाले ।

७०४. **नक्तमहर्निशम्**–रात्रि में चिन्तन करने वालों के रक्षक ।

७०५. **पक्षो मासोऽयनं**–प्रत्येक पक्ष और मास में पूजित ।

७०६. **वर्ष युगं**–गणेश चतुर्थी पर वर्ष में एक बार उत्सव मनाने वाले या सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, सभी युगों में प्रकट होने वाले ।

७०७. **कल्पो महालयः**–ब्रह्मा के एक दिन या प्रलय के देवता ।

राशिस्तारा तिथिर्योगो वारः करणमंशकम् ।
लग्नं होरा कालचक्रं मेरू सप्तर्षयो ध्रुवः ॥

७०८. **राशिस्तारा**–तारों के समूह की बारह राशियों के स्वामी ।

७०९. **तिथिर्योगो**–चन्द्रमास के भिन्न-भिन्न दिन के विशिष्ट काल ।

७१०. **वारः**–सप्ताह के एक दिन बुधवार को विशेष प्रसन्न रहने वाले ।

७११. **करणमंशकम्**–ज्योतिष के गणित की एक क्रिया में भाग लेने वाले ।

७१२. **लग्नं**–दिन का उतना अंश जितने में एक राशि उदय होती है अथवा शुभ मुहूर्त में स्तुति योग्य ।

७१३. **होरा**–दिन-रात के चौबीसवें भाग में स्तुति योग्य ।

७१४. **कालचक्रं**–समय का उलटफेर करने वाले ।

७१५. **मेरू**–सोने के मेरू पर्वत समान ।

७१६. **सप्तर्षयो**–ब्रह्मा के सात मानस पुत्र के आधार ।

७१७. **ध्रुवः**–भक्त ध्रुव की भक्ति की रक्षा करने वाले ।

राहुर्मन्दः कविर्जीबो बुधो भौमः शशि रविः ।
कालः सृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावर जङ्गमंचयत् ॥

७१८. **राहुर्मन्दः**–राहु ग्रह व शनि ग्रह को शान्त करने वाले ।

७१९. **कविर्जीबो**–कवियों के प्राण ।

७२०. **बुधो**–बुध ग्रह के स्वामी ।

७२१. **भौमः**–मंगल ग्रह के स्वामी ।

७२२. **शशि**–चन्द्रमा सदृश्य सुन्दर ।

७२३. **रविः**–सूर्य सदृश्य तेजवान ।

७२४. **कालः सृष्टिः**–समय को बनाने वाले ।

७२५. **स्थितिर्विश्वं**–स्थिरता युक्त समस्त ब्रह्माण्ड ।

७२६. **स्थावर**–भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों में स्थायी रूप से रहने वाले ।

७२७. **जङ्गमंचयत्**–हिमालय में विराजमान ।

भूरापोऽग्निमरुद्धयोमाहंकृतिः प्रकृतिः पुमान् ।
ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्रः ईशः शक्तिः सदाशिवः ॥

७२८. **भूरापोऽग्नि**–लकड़ी इत्यादि के जलने से उत्पन्न अग्नि के रक्षक ।
७२९. **मरुद्धयो**–धूम्र अग्नि रक्षक ।
७३०. **माहंकृति**–चतुर्थी तिथि के प्रिय ।
७३१. **प्रकृतिः**–संसार का निर्माण करने वाली मूल शक्ति ।
७३२. **पुमान्**–पुरुष रूप में अवतार लेने वाले ।
७३३. **ब्रह्मा**–सृष्टिकर्ता, विधाता ।
७३४. **विष्णुः**–परमेश्वर, व्यापक ।
७३५. **शिवो**–महादेव ।
७३६. **रुद्रः**–महादेव, ईश्वर ।
७३७. **ईश शक्तिः**–अधिकार युक्त या प्रधान बल ।
७३८. **सदाशिवः**–सर्वदा कल्याण करने वाले, सदा दयालु ।

त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षा रक्षासि किंनराः ।
साध्या विद्याधरा भूता मनुष्यः पशवः खगाः ॥

७३९. **त्रिदशाः**–देवता ।
७४०. **पितरः**–पितरों के प्रकोप से रक्षा करने वाले ।
७४१. **सिद्धा**–सिद्धि देने वाले ।
७४२. **यक्षा**–धन रक्षक ।

७४३. **रक्षासि**–आपत्ति से बचाने वाले ।
७४४. **किंनराः**–गाने-बजाने वाले ।
७४५. **साध्या**–साधना करने योग्य ।
७४६. **विद्याधरा**–गन्धर्व, किन्नर आदि देव योनि वाले ।
७४७. **भूता**–मूल द्रव्य वाले जिससे सृष्टि बनी है ।
७४८. **मनुष्यः**–मनुष्य रूप में अवतार लेने वाले ।
७४९. **पशवः**–पशुओं की रक्षा करने वाले ।
७५०. **खगाः**–पक्षियों की रक्षा करने वाले ।

समुद्राः सरितः शैला भूतं भव्यं भवोद्भवः ।
सांख्यं पातञ्जलंयोगः पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः ॥

७५१. **समुद्राः**–समुद्र सदृश्य विशालकाय ।
७५२. **सरितः**–गंगा-यमुना आदि देव नदी में विचरण करने वाले ।
७५३. **शैला**–हिमालय में रहने वाले ।
७५४. **भूतं**–जीव मात्र को जन्म देने वाले ।
७५५. **भव्यं**–सदैव मंगल करने वाले ।
७५६. **भवोद्भवः**–भगवान शिव द्वारा उत्पन्न या विकसित ।
७५७. **सांख्यं**–मित्र तुल्य ।
७५८. **पातञ्जलंयोगः**–पातंजलि ऋषि द्वारा बनाया हुआ योगसूत्र या व्याकरण का महाभाष्य ।
७५९. **पुराणानि**–पौराणिक कथा या १८ पुराणों से प्रसन्न होने वाले ।
७६०. **श्रुतिः**–श्रुतिं द्वारा जानने योग्य ।
७६१. **स्मृतिः**–स्मरण करने पर शीघ्र प्रकट होने वाले ।

वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्याय विस्तरः ।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गन्धर्वं काव्यनाटकम् ॥

७६२. **वेदाङ्गानि**–वेद के छः अंग या शास्त्रों के ज्ञाता ।
७६३. **सदाचारो**–नेक चलने वाले ।
७६४. **मीमांसा**–किसी तत्त्व का विचार, निर्णय या विवेचन करने वाले ।
७६५. **न्याय विस्तरः**–न्याय के आधार ।
७६६. **आयुर्वेदो**–चिकित्सा शास्त्र के जन्मदाता ।
७६७. **धनुर्वेदो**–धनुष विद्या बोधक शास्त्र के जन्मदाता ।
७६८. **गन्धर्वं**–स्वर्ग में रहने वाले गवयै के रक्षक ।
७६९. **काव्यनाटकम्**–कविता और नाटक के उत्पन्नकर्ता ।

वैखनसं भागवतं सात्वतं पाञ्चरात्रकम् ।
शैवं पाशुपतं कालामुखम् भैरवशासनम् ॥

७७०. **वैखनसं**–उच्च स्वर एवं गम्भीर वाणी में कीर्तन से प्रसन्न होने वाले ।
७७१. **भागवतं**–अठारह पुराणों में से एक महापुराण भागवत से साक्षात प्रकट होने वाले ।
७७२. **सात्वतं**–सात्विक भोजन ग्रहण करने वाले ।
७७३. **पाञ्चरात्रकम्**–धनतेरस से भैयादूज पाँच रात्रि में जपने पर प्रसन्न होने वाले ।
७७४. **शैवं**–शिवजी की सेवा करने वाले ।
७७५. **पाशुपतं**–शिवजी के कहे अनुसार तन्त्र शास्त्र का ज्ञान कराने वाले ।

७७६. **कालामुखम्**–समय का आरम्भ करने वाले ।
७७७. **भैरवशासनम्**–शिव और शिव गण का शासन कराने वाले ।

शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसंहिता ।
सदसद्धयक्तम व्यक्तं सचेतनमचेतनम् ॥

७७८. **शाक्तं**–दुर्गा, तारा, काली आदि शक्तियों के उपासक ।
७७९. **वैनायकं**–मंगलकारक ।
७८०. **सौरं**–सूर्य के समान तेजस्वी शरीर वाले ।
७८१. **जैनमार्हतसंहिता**–विष्णु, सूर्य के प्रवर्तित धर्म के ग्रन्थ दाता ।
७८२. **सदसद्धयक्तम**–सत्य असत्य का ज्ञान कराने वाले ।
७८३. **व्यक्तं**–स्पष्टवादी ।
७८४. **सचेतममचेतनम्**–प्राणियों की आत्मा ।

बन्धो मोक्षः सुखं भोगोऽयोगः सत्यमणुर्महान ।
स्वास्ति हुं फट् स्वधा स्वाहा श्रौषड्वौषड्वषण्णमः ॥

७८५. **बन्धो मोक्षः**–बन्धनों से मुक्ति दिलाने वाले ।
७८६. **सुखं**–सुख का अनुभव कराने वाले तथा दुःख दूर करने वाले ।
७८७. **भोगोऽयोगः**–सुख का अनुभव कराने वाले तथा दुःख दूर करने वाले ।
७८८. **सत्यमणुर्महान**–सूक्ष्म सच्चाई को विस्तृत करने वाले ।
७८९. **स्वास्ति हुं फट्**–शत्रुओं का हनन कर मंगल करने वाले ।

७९०. **स्वधा**–यज्ञ कार्य में भाग लेने वाले ।
७९१. **स्वाहा**–यज्ञ में भोजन ग्रहण कर शान्ति प्रदान करने वाले ।
७९२. **श्रौषड्वौषड्वषण्णमः**–यज्ञ में अग्नि उत्पन्न करने वाले ।

ज्ञानंविज्ञानमानन्दो बोधः संविच्छमो यमः ।
एक एकाक्षराधरा एकाक्षरपरायणः ॥

७९३. **ज्ञानं**–जानकारी या बोध कराने वाले ।
७९४. **विज्ञानम्**–किसी विषय का विस्तृत ज्ञान देने वाले ।
७९५. **आनन्द**–प्रसन्नता प्रदान करने वाले ।
७९६. **बोधः**–संतोष व धीरज प्रदान करने वाले ।
७९७. **संविच्छमो**–अच्छी अभिलाषा वाले ।
७९८. **यमः**–मृत्यु के देवता यमराज, दिक्पाल ।
७९९. **एक**–प्रधान देवता ।
८००. **एकाक्षराधरा**–ओंकार के आधार ।
८०१. **एकाक्षरपरायणः**–ओंकार में प्रवृत्त या लगे हुए ।

एकाग्रधीरेकवीर एकानेक स्वरूपधृक् ।
द्विरूपो द्विभुजो दयक्षो द्विरदो दीपरक्षकः ॥

८०२. **एकाग्रधीर**–एक ही ओर मन लगाने वाले ।
८०३. **एकवीर**–सच्चे, बहादुर ।
८०४. **एकानेक स्वरूपधृक्**–अनेक स्वरूप धारण कर्ता ।
८०५. **द्विरूपो**–दो रूपों वाले अर्थात् हाथी व मनुष्य शरीर होने से ।

८०६. **द्विभुजो**–दो भुजाओं वाले ।
८०७. **दयक्षो**–दया व कृपा के आधार ।
८०८. **द्विरदो**–दो वर धन व पुत्र प्रदान करने वाले ।
८०९. **दीपरक्षकः**–जलती हुई बत्ती या दीये की रक्षा करने वाले ।

द्वैमातुरो द्विवदनो द्वंद्वातीतो द्वयातिगः ।
त्रिधामा त्रिकरस्त्रेतात्रिवर्ग फलदायकः ॥

८१०. **द्वैमातुरो**–दो माता वाले (पार्वती व गजमाता) ।
८११. **द्विवदनो**–दो मुख वाले ।
८१२. **द्वंद्वातीतो**–लड़ाई को समाप्त करने वाले ।
८१३. **द्वयातिगः**–शत्रुओं का संहार करने वाले ।
८१४. **त्रिधामा**–तीनों धाम का सुख प्रदान करने वाले ।
८१५. **त्रिकरस्त्रेता**–तीन अग्नियों के उत्पादक ।
८१६. **त्रिवर्ग फलदायकः**–धर्म, अर्थ, काम तीनों का फल देने वाले ।

त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तिस्त्रिलोचनः ।
चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्मुखः ॥

८१७. **त्रिगुणात्मा**–तीन गुणों-सत्य, रजो, तमोगुण के प्राण ।
८१८. **त्रिलोकादि**–स्वर्ग, मृत्यु और पाताल आदि लोकों के स्वामी ।
८१९. **त्रिशक्ति**–काली, तारा और त्रिपुरा तीन देवियों के शक्ति पीठ ।

८२०. **त्रिलोचनः**–शिव ।
८२१. **चतुर्बाहु**–चार भुजाओं वाले ।
८२२. **चतुर्दन्त**–ऐरावत हाथी के समान बलकारी ।
८२३. **चतुरात्मा**–ईश्वर, विष्णु ।
८२४. **चतुर्मुखः**–चार मुख वाले ।

चतुर्विद्योपायमपपायश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ।
चतुर्विधवचोवृत्ति परिवृत्तिप्रवर्तकः ॥

८२५. **चतुर्विधोपायमपपाय**–सब विधियों से प्राप्त कराने वाले ।
८२६. **चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः**–चार वर्णाश्रम के आश्रयदाता ।
८२७. **चतुर्विधवचोवृत्ति**–सभी प्रकार की विधियों से वचन कहने वाले ।
८२८. **परिवृत्तिप्रवर्तकः**–मुक्ति व मोक्ष की ओर ले जाने वाले ।

चतुर्थी पूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथि सम्भवः ।
पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्य पञ्चकृत्यकृत् ॥

८२९. **चतुर्थी पूजनप्रीतश्च**–चतुर्थी पूजन से विशेष प्रसन्न होने वाले ।
८३०. **चतुर्थी तिथि संभवः**–चतुर्थी तिथि को जन्म लेने वाले ।
८३१. **पञ्चाक्षरात्मा**–पाँच अक्षर के मन्त्र की आत्मा ।
८३२. **पञ्चात्मा**–पृथ्वी, जल, आकश, अग्नि, और वायु-इन पाँच तत्वों के प्राण ।

८३३. **पञ्चास्य**–शिव सदृश्य मंगलकारी ।

८३४. **पञ्चकृत्यकृत**–उत्प्रेक्षण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रचरण और गगन-ये पाँच कर्म करने वाले ।

पञ्चाधारः पञ्चवर्णः पञ्चाक्षरपरायणः ।
पञ्चतालः पञ्चकरः पञ्चप्रणवभावितः ॥

८३५. **पञ्चाधारः**–पंच तत्वों के आधार ।

८३६. **पञ्चवर्णः**–ओंकार मन्त्र के प्रणव के पाँच वर्ण-यथा अ, उ, म, नाद और बिन्दू ।

८३७. **पञ्चाक्षरपरायणः**–प्रणव या पाँच अक्षर के मन्त्र में प्रवृत्त ।

८३८. **पञ्चतालः**–शुद्ध सात्विकों से शीघ्र प्रसन्न होने वाले ।

८३९. **पञ्चकरः**–पाँच तत्वों को उत्पन्न करने वाले ।

८४०. **पञ्चप्रणवभावितः**–हृदय में पंचवर्ग को धारित किये हुए ।

पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पञ्चावर्णवारितः ।
पञ्चभक्ष्यप्रियः पञ्चवाणः पञ्चाशिवात्मकः ॥

८४१. **पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तिः**–पाँच ब्रह्म स्वरूपमय कार्य करने की अधिक गति ।

८४२. **पञ्चावर्णवारितः**–पाँच कुरूपताओं को रोकने वाले ।

८४३. **पञ्चभक्ष्यप्रियः**–दूध, दही, घी, शक्कर और शहद से निर्मित पञ्चामृत के प्रिय ।

८४४. **पञ्चवाणः**–कामदेव जिसके पाँच बाण हैं-कमल, अशोक, आम, नवमल्लिका और नीलोत्पल ।

८४५. **पञ्चशिवात्मकः**–पाँच शिवभाव या धर्म, मोक्ष देने वाले ।

षट्कोणपीठः षट्चक्रधामा षड्ग्रन्थिभेदकः ।
षड्ध्वध्वान्तविध्वंसी षड्ङ्गुलमहारदः ॥

८४६. **षड्कोणपीठः**–छः राजमहल या दुर्ग के स्वामी ।

८४७. **षट्चक्रधामा**–कुण्डलिनि के ऊपर छः चक्र के देवता ।

८४८. **षड्ग्रन्थिभेदकः**–छः बन्धन या मायाजाल को मिटाने वाले ।

८४९. **षड्ध्वध्वान्तविध्वंसी**–छः स्थानों को नष्ट करने वाले का विनाशकर्ता ।

८५०. **षड्ङ्गुलमहारदः**–छः अंगुल के होकर मिष्ठान भण्डार में विराजमान होने वाले ।

षण्मुखः षण्मुखभ्राता षट्शक्तिपरिवारितः ।
षड्वैरिवर्गविध्वंसी षड्ऊर्मिभयभञ्जनः ॥

८५१. **षण्मुखः**–षडानन, कार्तिकेय ।

८५२. **षण्मुखभ्राता**–कार्तिकेय के भाई ।

८५३. **षट्शक्तिपरिवारितः**–छः सामर्थ्य के परिवार वाले ।

८५४. **षड्वैरिवर्गविध्वंसी**–छः प्रकार के विरोधियों को नष्ट करने वाले ।

८५५. **षड्भिमभयभञ्जनः**–छः कष्टों के डर को दूर करने वाले ।

षट्तर्कदूरः षट्कर्मनिरतः षड्साश्रयः ।
सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरूमण्डलः ॥

८५६. **षट्तर्कदूरः**–छः विवादों से मुक्त करने वाले ।

८५७. **षट्कर्मनिरतः**–छः प्रकार के कर्म तथा-यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह के लिये तत्पर ।

८५८. **षड्साश्रयः**–सभी के आश्रयदाता, छः प्रकार के आश्रय देने वाले ।

८५९. **सप्तपातालचरणः**–पृथ्वी के नीचे सात लोक-अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल के चरण में भ्रमण करने वाले ।

८६०. **सप्तद्वीपोरूमण्डलः**–सप्तद्वीप-जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौञ्च, शाक और पुष्कर के विशाल मण्डल में भ्रमण करने वाले ।

सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः ।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तर्षिगणमण्डितः ॥

८६१. **सप्तस्वर्लोकमुकुटः**–सात स्वर्लोक-(भूतल, भुवर्लोक, महार्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्यलोक-ये सात स्वर्लोक कहे जाते हैं) के मुकुटमणि ।

८६२. **सप्तसप्तिवरप्रदः**–सात वरदान प्रदान करने वाले ।

८६३. **सप्ताङ्गराज्यसुखदः**–सात अंगों-(राजा, मन्त्री, सामन्त,

देश, कोष, गढ़ और सेना) से युक्त राज्य के लिए सुखदायी ।

८६४. **सप्तर्षिगणमण्डितः**–मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्य, क्रतु, वशिष्ठ और वाल्मिकि-सात ऋषियों द्वारा वन्दित ।

सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोता सप्तस्वराश्रयः ।
सप्ताब्धिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः ॥

८६५. **सप्तछन्दोनिधिः**–सात वैदिक छन्द-(गायत्री, उष्णिक, त्रिष्टुप, अनुष्टुप, वृहत्ति, पंक्ति आदि सात छन्द हैं) के आश्रय ।

८६६. **सप्तहोता**–सोमदेव के सात मन्त्रों के हवन करने वाले ।

८६७. **सप्तस्वराश्रयः**–संगीत के सात स्वरों के स्वामी ।

८६८. **सप्ताब्धिकेलिकासारः**–सात तरह के समुद्रों (क्षारोद, इक्षुरसोद, सुरोद, घृतोद, क्षीरोद, दधिमण्डोद, शुद्धोद) के सार रूप ।

८६९. **सप्तमातृनिषेवितः**–सात माताओं (ब्राह्मी, मातेश्वरी, वैष्णवी, कौमारी, वाराही, इन्द्राणी और चामुण्डा) के द्वारा सेवित ।

सप्तच्छन्दोमदमदः सप्तच्छन्दोमखप्रभुः ।
अष्टमूर्तिध्येयमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् ॥

८७०. **सप्तच्छन्दोमदमदः**–वेद या साहित्य के सात छन्द के सार से मस्त ।

८७१. **सप्तच्छन्दोमखप्रभुः**–सात छन्दों के यज्ञ के स्वामी ।
८७२. **अष्टमूर्ति**–शिव की आठ मूर्तियाँ यथा (सर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान, महादेव) ।
८७३. **ध्येयमूर्ति**–ध्यान करने योग्य स्वरूप ।
८७४. **अष्टप्रकृतिकारणम्**–वैद्यक के अनुसार-(स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, ऐश्वर्य, कम्प, वैवर्ण्य तथा अश्रुपात) शरीर के आठ भावों के कारण ।

अष्टाङ्गयोगफलभूरष्टपत्राम्बुजासनः ।
अष्टशक्तिसमृद्धश्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः ॥

८७५. **अष्टाङ्गयोग**–योग क्रिया के आठ भेद-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ।
८७६. **फलभू**–कर्मों का फल भोगने वाले स्थान ।
८७७. **अष्टपत्राम्बुजासनः**–आठ पत्रों के कमल के आसन वाले ।
८७८. **अष्टशक्ति**–आठ प्रकार की अर्थात् सभी प्रकार की शक्तियों से समृद्ध देवता ।
८७९. **समृद्धश्री**–लक्ष्मी से सम्पन्न ।
८८०. **अष्टऐश्वर्य प्रदायकः**–आठ प्रकार की सिद्धियाँ (अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व) प्रदान करने वाले ।

अष्टपीठोपपीठ श्रीरष्टमातृसवावृतः ।
अष्टभैरवसेत्योऽष्ट वसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत् ॥

८८१. **अष्टपीठोपपीठ**–आठ देव सिंहासनों के ऊपर के सिंहासन पर विराजमान होने वाले ।

८८२. **श्री**–ऐश्वर्यवान सिद्धियुक्त ।

८८३. **अष्टमातृसमावृतः**–भगवती के आठ स्वरूपों (तारा, उग्रा, महोग्रा, वज्रा, काली, सरस्वती, कामेश्वरी, चामुण्डा) से युक्त ।

८८४. **अष्टभैरवसेव्योऽष्ट**–शिव के सभी आठ गणों के पूज्य ।

८८५. **वसुवन्द्यो**–आठ देवता-धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्युष और प्रभास से वन्दना करने योग्य ।

८८६. **अष्टमूर्तिभृत्**–शिव के आठ स्वरूपों द्वारा पाले हुए ।

अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तिष्ट द्रव्य हविः प्रियः ।
नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासिता ॥

८८७. **अष्टचक्रस्फुरन्मूर्ति**–आठ चक्रों की स्फूर्ति से युक्त स्वरूप ।

८८८. **अष्टद्रव्य हविः प्रियः**–हवन सामग्री के आठ पदार्थ-(पीपल, गूलर, पाकर, वट, तिल, सरसों, खीर, घृत) के प्रिय ।

८८९. **नवनागासनाध्यायी**–नये शैव साधुओं के सभापति ।

८९०. **नवनिध्यनुशासिता**–कुबेर के नवरत्न अथवा नौ निधियों यथा-पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खर्व के प्रबन्धकर्ता ।

नवद्वारपुराधारो नवधारनिकेतनः ।
नवनारायण स्तुत्यो नवदुर्गानिषेवितः ॥

८९१. **नवद्वारपुराधारो**–शरीर के नौ द्वारों और छिद्र स्थान के रक्षक ।

८९२. **नवधारनिकेतनः**–नौ आधारों के गृह वाले ।

८९३. **नवनारायण**–परमात्मा में श्रेष्ठ ।

८९४. **स्तुत्यो**–स्तुति या पूजा करने योग्य ।

८९५. **नवदुर्गानिषेवितः**–नौ दुर्गा जिनकी नवरात्री में नौ दिन तक क्रम से पूजा होती है, उनके द्वारा सेवा करने योग्य ।

नवनाथ महानाथो नवनागविभूषणः ।
नवरत्नविचाङ्गो नवशक्तिशिरोधृतः ॥

८९६. **नवनाथ**–नए स्वामी या ईश्वर ।

८९७. **महानाथो**–बड़े स्वामी ।

८९८. **नवनागविभूषणः**–नये सर्पों का गहना पहनने वाले ।

८९९. **नवरत्न विचाङ्गो**–नौ प्रकार के रत्न-मोती, पन्ना, मानिक, गोमेदक, हीरा, मूंगा, लहसुनिया, पद्मराग, नीलम के प्रधान देवता ।

९००. **नव शक्ति**–नौ देवियों-इन्द्राणी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, माहेश्वरी, भैरवी, दुर्गा को ।

९०१. **शिरोधृत**–आदरपूर्वक मानने योग्य ।

दशात्मको दशभुजो दशदिक्पति वन्दितः ।
दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः ॥

९०२. **दशात्मको**–दस प्रकृतियों से सम्बन्ध रखने वाले ।
९०३. **दशभुजो**–दुर्गा के समान भुजाओं वाले ।
९०४. **दशदिक्पति**–दसों दिशाओं के स्वामी ।
९०५. **वन्दितः**–पूजा अर्चना करने योग्य ।
९०६. **दशाध्यायो**–मनुष्य जीवन के दस अवस्थाओं के अध्ययनकर्ता ।
९०७. **दशप्राणो**–दस ब्रह्म या शक्तियों से पूरिपूर्ण ।
९०८. **दशेन्द्रियनियामकः**–दस इन्द्रियों की व्यवस्था करने वाले ।

दशक्षरमहामन्त्रो दशाशत्यापिविग्रहः ।
एकादशादिभीरूदैः स्तुत एकादशाक्षरः ॥

९०९. **दशाक्षरमहामन्त्रो**–पक्ति नामक छन्द का प्रभावशाली या इष्ट मन्त्र ।
९१०. **दशाशात्यापिविग्रहः**–दस आशाओं से युक्त मूर्ति ।
९११. **एकादशादिभीरूदैः**–ग्यारह प्रारम्भिक भयरहित गणदेवता-अज, एकपात्र, अहिध्न, पिनाकी, अपराजित, त्र्यम्बक, महेश्वर, वृषाकपि, शंभु हरण, ईश्वर द्वारा स्तुति किया हुआ ।
९१२. **स्तुतः**–स्तुति योग्य ।
९१३. **एकादशाक्षरः**–ग्यारह अविनाशी या स्थिर देवताओं में गिने जाने वाले ।

द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डो द्वादशान्तनिकेतनः ।
त्रयोदशाभिदाभिन्नविश्वदेवाधिदेवतम् ॥

९१४. **द्वारशोद्दण्डदोर्दण्डो**–बारह प्रचण्ड भुजदण्ड वाले ।
९१५. **द्वादशान्तनिकेतनः**–बारह प्रलय के घर ।
९१६. **त्रयोदशाभिदाभिन्न**–तेरह दृढ़ या अखण्ड वस्तुओं के भेदकर्ता ।
९१७. **विश्वदेवाधिदैवतम्**–विश्व के देवताओं के भी देवता अर्थात् सबसे बड़े देवता ।

चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनु प्रभुः ।
चर्तुदशादिविद्याद्यश्चतुर्दशजगत्प्रभुः ॥

९१८. **चतुर्दशेन्द्रवरद**–चौदह इन्द्रों को वर देने वाले ।
९१९. **चतुर्दशमनु प्रभुः**–ब्रह्म के चौदह पुत्र जो मानव जाति के आदि पुरुष थे, उनके परमेश्वर ।
९२०. **चतुर्दशादिविद्या**–चौदह विद्याओं के विशेष ज्ञान युक्त ।
९२१. **चतुर्दश जगत्प्रभुः**–चौदह विश्व के ईश्वर या स्वामी ।

सामपञ्चदशः पञ्चदशीशीतांशुनिर्मल ।
षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः ॥

९२२. **सामपञ्चदशः**–वेदों के पन्द्रह मन्त्र जो यज्ञ में जाकर पढ़े जाते हैं, उनके ज्ञाता ।
९२३. **पंचदशीशीतांशुनिर्मलः**–पन्द्रह चन्द्रमाओं (चन्द्रमा की १५ कला) से भी स्वच्छ एवं शुद्ध ।

१२४. **षोडशाधारनिलयः**–सोलह आश्रयदाताओं के आश्रयदाता ।

१२५. **षोडशस्वरमातृकः**–स्वर्ग की सोलह देवियों द्वारा पूज्य ।

षोडशान्तपदावासः षोडशेन्दुकलात्मकः ।
कला सप्तदशी सप्तदशः सप्तदशाक्षरः ॥

१२६. **षोडशान्तपदावासः**–सोलहों प्रलयों या मृत्यु से रक्षा करने वाले ।

१२७. **षोडशेन्दुकलात्मकः**–चन्द्रमा की सोलह कलाओं से युक्त ।

१२८. **कला सप्तदशी**–सत्रह कलाओं युक्त ।

१२९. **सप्दशः**–सत्रह प्रकार से भक्तों पर कृपा करने वाले ।

१३०. **सप्तदशाक्षरः**–सत्रह अक्षरों के मन्त्र युक्त ।

अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत् ।
अष्टादशौषधिसृष्टिरष्टादशविधिः स्मृतः ॥

१३१. **अष्टादशद्वीपति**–अठारह द्वीपों के स्वामी ।

१३२. **अष्टादशपुराणकृत्**–अठारह पुराण के रचना करने वाले ।

१३३. **अष्टादशोषधि**–अठारह औषधियों के निर्माता ।

१३४. **सृष्टि**–सम्पूर्ण विश्व या उसकी रचना करने वाले ।

१३५. **अष्टादशविधिः स्मृतः**–अठारह शास्त्रोक्त विधान को जानने वाले ।

अष्टादशलिपिव्याष्टि समष्टिज्ञान कोविदः ।
एकविंशः पुमानेकविंशत्यंगुलि पल्लवः ॥

९३६. **अष्टदशलिपित्याष्टि**–अठारह प्रकार के वर्ण अक्षर को लिखने वाले ।

९३७. **समष्टिज्ञान**–समस्त का ज्ञान रखने वाले ।

९३८. **कोविदः**–पण्डित, विद्वान् वेद को जानने वाले ।

९३९. **एकविंशः**–पुरानेक–इक्कीस पुरुष प्रधान या परमेश्वर ।

९४०. **विंशल्यंगुलि पल्लवः**–बीस अंगुली का कंगन पहनने वाले ।

चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पञ्चविंशाख्य पुरूषः ।
सप्तविशतितारेशः सप्तविंशति योगकृत् ॥

९४१. **चतुर्विंशतितत्वात्मा**–चौबीस तत्त्वों के प्राण ।

९४२. **पञ्चविशाख्य**–प्रकृति महातत्व बुद्धि, अहंकार, चक्षु, श्रोत्र, रसना, त्वक्, वाक्, पाणि, पायु, पाद, उपस्थ, मन, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश, इन चौबीस जड़ तत्वों सहित पच्चीसवें चेतन तत्व पुरुष में व्याप्त ।

९४३. **पुरूषः**–जीवात्मा के रक्षक ।

९४४. **सप्तविशातितारेशः**–सत्ताइस उच्च स्वरों के स्वामी ।

९४५. **सप्तविंशति योगकृत्**–सत्ताइस संयोग या सूर्य चन्द्रमा की विशेष सत्ताइस स्थितियों द्वारा निर्मित ।

द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः ।
षट्त्रिंशतत्त्वसम्भूतिरष्टत्रिंशत्कलातनुः ॥

९४६. **द्वात्रिंशद्भैरवाधीश**–बत्तीस भैरवों के स्वामी ।
९४७. **चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः**–चौंतीस बड़े हृदय युक्त ।
९४८. **षट्त्रिंशतत्वसम्भूति**–छत्तीस तत्वों की क्षमता से युक्त ।
९४९. **अष्टात्रिंशत्कलातनुः**–अड़तीस कला युक्त शरीर वाले ।

नमदेकोनपञ्चाशन्मरूद्धर्गनिरर्गलः ।
पञ्चाशदक्षरश्रेणी पञ्चाशद्रुद्रविग्रहः ॥

९५०. **नमदेकोनपञ्चाशन्म**–देवता व देवियों के पचास कोण ।
९५१. **मरुद्धर्गनिरर्गलः**–निर्जल प्रदेश या एक दैत्य की बाधाओं को दूर करने वाले ।
९५२. **पञ्चाशदक्षरश्रेणी**–पचास धर्म या तपस्या की पंक्ति ।
९५३. **पञ्चाशद्रुद्रविग्रह**–शीघ्रता से पचास शक्तियों जैसे ।

पञ्चाशद्विष्णुशक्तिशः पञ्चाशन्मातृकालयः ।
द्विपञ्चाशद्वपुःश्रेणी त्रिषष्टयक्षर संश्रयः ॥

९५४. **पञ्चाशद्विष्णुशक्तिशः**–विष्णु की पचास शक्तियों जैसी ।
९५५. **पञ्चाशन्मातृकालयः**–पचास देवियों के आश्रयदाता ।

९५६. **द्विपञ्चाशद्धपुःश्रेणी**–बावन देहों की मण्डली या समूह ।

९५७. **त्रिषष्टयक्षर संश्रयः**–तिरेसठ अक्षर मंत्र के आश्रयदाता ।

चतुःषष्टयर्णनिर्णेता चतुः सष्विकलानिधिः ।
चतुः षष्टिमहासिद्धियोगिनीवृन्दवन्दितः ॥

९५८. **चतुः षष्टयर्णनिर्णेता**–चौंसठ अक्षर या जल के निर्णयकर्ता ।

९५९. **चतुः सष्टिकलानिधिः**–चौंसठ कलाओं के भण्डार ।

९६०. **चतुः षष्टिमहासिद्धि**–चौंसठ महासिद्धियों से परिपूर्ण ।

९६१. **योगिनी वृन्दवन्दितः**–पुराण की चौंसठ योगाभ्यासिनी के समूह द्वारा पूज्य ।

अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्र भैरव भावनः ।
चतुर्नवतिमन्त्रात्मा षण्णवत्यधिक प्रभुः ॥

९६२. **अष्टपष्टि**–अड़सठ देवताओं द्वारा वन्दनीय ।

९६३. **महातीर्थ**–बड़े पवित्र या पूज्य ।

९६४. **क्षेत्र**–स्थान विशेष गढ़ रणतभँवर (राज०) आदि में शीघ्र प्रकट होने वाले ।

९६५. **भैरव**–शिव या शिव के गण ।

९६६. **भावन**–अच्छे लगने वाले ।

९६७. **चतुर्नवति**–चौगुनी हाथी की झूल धारण करने वाले ।

९६८. **मन्त्रात्मा**–मन्त्रों की आत्मा ।

९६९. **पण्णवत्यधिक प्रभुः**–दान देने के संकल्प के स्वामी ।

शतानन्दः शतधृति, शतपत्रायतेक्षणः ।
शतनीकः शतमुखः शतधाराधरायुधः ॥

९७०. **शतानन्दः**–सौ प्रकार से आनन्द देने वाले ।

९७१. **शतधृति**–सौ वर्णन करने की शैली या व्याख्याकार ।

९७२. **शतपत्रायतेक्षणः**–सौ पत्र प्रत्येक क्षण में लिखने वाले ।

९७३. **शतनीकः**–सौ सिद्धियाँ प्राप्त कराने वाले ।

९७४. **शतमुखः**–इन्द्र जैसे ।

९७५. **शतधाराधरायुधः**–संसार में सौ यशदाता ।

सहस्रपत्रनिलयः सहस्रफणभूषणः ।
सहस्रशीर्षापुरूष, सहस्राक्ष, सहस्रपात् ॥

९७६. **सहस्रपत्रनिलयः**–कमल के आसन वाले ।

९७७. **सहस्रफणभूषणः**–शेषनाग का आभूषण पहनने वाले ।

९७८. **सहस्रशीर्षापुरुष**–विष्णु जैसे पुरुष ।

९७९. **सहस्राक्ष**–इन्द्र या विष्णु जैसे ।

९८०. **सहस्रपात्**–हजारों बार बचाने वाले ।

सहस्रनामसंस्तुस्यः सहस्राक्षबलापहः ।
दशसाहस्रफणभृतफणिराजकृतासनः ॥

९८१. **सहस्रनामसंस्तुस्यः**–हजार नाम स्तुति योग्य ।

९८२. **सहस्राक्षबलापहः**–इन्द्र या विष्णु ।

९८३. **दशसाहस्रफणभृतफणिराजकृतासनः**–दस हजार नागों के नाग देवता द्वारा निर्मित आसनाधीश ।

अष्टाशीतसहस्राद्यमहर्षिस्तोत्रयन्त्रितः ।
लक्षाधीशप्रियाधारी लक्षाधारमनोमयः ॥

९८४. **अष्टशीतसहस्राद्य**–अठ्ठासी हजार आरम्भ के प्रधान ।

९८५. **महर्षिस्तोत्रयन्त्रितः**–अतिश्रेष्ठ ऋषि के स्तुति द्वारा स्थापित ।

९८६. **लक्षाधीशप्रियाधारो**–लाखों बुद्धि प्रिय का आधार ।

९८७. **लक्षाधारमनोमयः**–लाखों आधार के मनोरूप या मानसिक आधार ।

चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशितः ।
चतुरशीतिलक्षाणां जीवानां देहसंस्थितः ॥

९८८. **चतुर्लक्षजपप्रीतश्च**–चार लाख जप के प्रिय होने से ।

९८९. **चर्तुलक्षप्रकाशितः**–चार लाख प्रकटकर्ता या शोभितः ।

९९०. **चतुरशीतिलक्षाणां**–चौरासी लाख योनियों से

बचाने वाले ।

९९१. **जीवानां**–जीवों के लिए हितकारी ।

९९२. **देहसंस्थितः**–भक्तों के हृदय में विराजमान रहने वाले ।

कोटिसूर्यप्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः ।
शिवाभवाध्युष्टकोटि विनायकधुरंधरः ॥

९९३. **कोटिसूर्यप्रतीकाशः**–करोड़ों सूर्यों के बराबर ।

९९४. **कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः**–करोड़ों चन्द्रमाओं से शुद्ध-स्वच्छ ।

९९५. **शिवाभवाध्युष्टकोटि**–जन्म और मोक्ष के पूज्य परमात्मा ।

९९६. **विनायकधुरंधरः**–प्रधान गणनायक ।

सप्तकोटि महामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः ।
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणी प्रणतं पादुकः ॥

९९७. **सप्तकोटि महामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः**–सात करोड़ महामन्त्रों से मन्त्रित चमकयुक्त अंगों की देहयुक्त ।

९९८. **त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणी**–तैंतीस करोड़ देवताओं के समूह ।

९९९. **प्रणतं**–भक्तों द्वारा प्रणाम करने वाले ।

१०००. **पादुकः**–गमनशील या चलने वाले ।

अनन्तनामानन्त श्रीरनन्तानन्तसौख्यदः ।
ॐ इतिवैयानकं नामनां सहस्रमिदमीरितम् ॥

१००१. **अनन्तनामनन्तश्रीरत्नन्तानन्तसौख्यदः**–अनन्त नामों वाले, अनन्त ऐश्वर्य मुक्त, अनन्त सुख देने वाले ।

१००२. **ॐ इतिवैयानकं नामनां सहस्रमिदमीरितम्**–गणेश जी के अत्यधिक अमृत बरसाने वाले हजार नाम ।

(इति श्रीगणेश सहस्रनाम स्तोत्र भाषा टीका)

श्री गणपति सहस्रनामावली

१. गणेश्वर
२. गणक्रीड़ः
३. गणनाथः
४. गणाधिपः
५. एकदंष्ट्र
६. वक्रतुण्ड
७. गजवक्त्रः
८. महोदरः
९. लम्बोदरः
१०. धूम्रवर्णः
११. विकटः
१२. विघ्ननायक
१३. सुमुखः
१४. दुर्मुख
१५. बुद्धः
१६. विघ्नराजः
१७. गजाननः
१८. भीमः
१९. प्रमोदः
२०. आमोदः
२१. सुरानन्दः
२२. मदोत्कटः
२३. हेरम्बः
२४. शम्बरः
२५. शम्भः
२६. लम्बकर्णोः
२७. महाबलः
२८. नन्दनः
२९. अलम्पटः
३०. अभीरूः
३१. मेघनादः
३२. गणंजयः
३३. विनायकः
३४. विरूपाक्षः
३५. धीरः
३६. शूरः
३७. वरप्रदः
३८. महागल (ण) पति
३९. बुद्धिप्रियः
४०. क्षिप्रप्रसादनः
४१. रुद्रप्रियः
४२. गणाध्यक्षः
४३. उमापुत्रः
४४. अघनाशनः

४५. कुमार
४६. गुरु
४७. ईशान पुत्र
४८. मूषक वाहनः
४९. सिद्धिप्रियः
५०. सिद्धिपतिः
५१. सिद्धः
५२. सिद्धि विनायकः
५३. अविघ्न स्तुम्बुरः
५४. सिंह वाहनः
५५. मोहिनी प्रियः
५६. कंकटः
५७. राजपुत्रः
५८. शालकः
५९. सम्मितः
६०. अमितः
६१. कूष्माण्डसामसम्भूतिः
६२. दुर्जयः
६३. धुर्जयः
६४. जयः
६५. भूपति
६६. भुवनपति
६७. भूतानांपतिर्व्यय
६८. विश्वकर्ता
६९. विश्वमुखो
७०. विश्वरूपः
७१. निधि
७२. घृणि
७३. कवि
७४. कविनानृषभोः
७५. ब्रह्मण्य
७६. ब्राह्मणस्पतिः
७७. ज्येष्ठराजः
७८. निधिपतिः
७९. निधिप्रियपतिः
८०. प्रियः
८१. हिरण्यमयः
८२. पुरान्तः
८३. स्थः
८४. सूर्यमण्डल मध्यमः
८५. कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलः
८६. पूषदन्तभित्
८७. उमाङ्ककेलिकुतकीः
८८. मुक्तिदः
८९. कुल पालनः
९०. किरीटी
९१. कुण्डली
९२. वनमाली
९३. मनोमयः
९४. वैमुख्यहतदैत्य श्रीः

९५. पादाहतिजितक्षितिः
९६. सद्योजातस्वर्णमुंजमेखली
९७. दुर्निमित्तहृत
९८. दुःस्वप्नहृत
९९. प्रसहनः
१००. गुणी
१०१. नादप्रतिष्ठितः
१०२. सुरूपः
१०३. सर्वनेत्राधिवासः
१०४. वीरासनाश्रयः
१०५. पीताम्बरः
१०६. खण्डरदः
१०७. खण्डेन्दुकृतशेषरः
१०८. चित्राङ्गः
१०९. श्यामदशनः
११०. भालचन्द्रः
१११. चतुर्भुजः
११२. योगाधिपः
११३. तारकस्थ
११४. पुरुषः
११५. गजकर्णकः
११६. गणाधिराजः
११७. विजयास्थिरः
११८. गजपतिध्वजी
११९. देवदेवः
१२०. स्मरप्राणदीपकः
१२१. वायुकीलकः
१२२. विपश्चिदूरदः
१२३. नादोन्नादभिन्नबलाहकः
१२४. वराहदनः
१२५. मृत्युंजयः
१२६. व्याघ्रजिनाम्बरः
१२७. इच्छाशक्तिधरः
१२८. देवत्राता
१२९. दैत्यविमर्दनः
१३०. शम्भुवक्त्रोदभवः
१३१. शम्भुकोपहा
१३२. शम्भुहास्यभूः
१३३. शम्भुतेजाः
१३४. शिवाशोकहारी
१३५. गौरी सुखवह
१३६. उमाङ्गमलजो
१३७. गौरीतेजोभूः
१३८. स्वर्धुमीभवः
१३९. यज्ञकायः
१४०. महानादः
१४१. गिरिवर्ष्मा
१४२. शुभाननः
१४३. सर्वात्मा
१४४. सर्वदेवात्मा

१४५. ब्रह्ममूर्धा
१४६. ककुपश्रुतिः
१४७. ब्रह्माण्डकुम्भश्रिद्धयोमभालः
१४८. सत्यशिरोरूहः
१४९. जगज्जनमलयोन्मे-
षऽग्न्यर्कसोमदृक्
१५०. गिरिन्द्रैकरदो
१५१. धर्माधर्मोष्ठः
१५२. समबृंहितः
१५३. ग्रहर्क्षदशनः
१५४. वाणीजिह्वः
१५५. वासवनासिकः
१५६. कुलाचलांसः
१५७. सोमार्कघण्टः
१५८. रूद्रशिरोधरः
१५९. नदीनदभुजः
१६०. सर्वाङ्गलीकः
१६१. तारकानखः
१६२. भ्रूमध्यसंस्थितकरः
१६३. ब्रह्मविद्यामदोत्कटः
१६४. व्योमनाभि
१६५. श्रीहृदयः
१६६. मेरूपृष्ठः
१६७. अर्णवोदरः
१६८. कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वः
१६९. किंनरमानुष रक्षः
१७०. पृथ्वीकटिः
१७१. सृष्टिलिङ्ग
१७२. शैलोरूर्दस्त्रजानुकः
१७३. पातालजङ्घः
१७४. मुनिपात्कालांगुष्ठ-
स्त्रयी तनुः
१७५. ज्योतिर्मण्डललाङ्गलः
१७६. हृदयालाननिश्चलः
१७७. हृत्पद्मकर्णिकाशा-
लिवियत्केलि सरोवरः
१७८. सद्भक्त ध्यान निगडः
१७९. पूजा वारी निवारितः
१८०. प्रतापी
१८१. कश्यप सुतः
१८२. गणपः
१८३. विष्टपी
१८४. बली
१८५. यश्वी
१८६. धार्मिकः
१८७. स्वोजा
१८८. प्रथमः
१८९. प्रथमेश्वरः
१९०. चिन्तामणिदीपपतिः
१९१. कल्पद्रुम वनालयः

१९२. रत्नमण्डपमध्यस्थः
१९३. रत्नसिंहासनाश्रयः
१९४. तीव्रशिरोद्धृतपदः
१९५. ज्वालिनी मौलि लालितः
१९६. नन्दानन्दित पाठ श्रीर्भोगदा भूषितासनः
१९७. सकामदायिनीपीठः
१९८. स्फुरदुग्रासनाश्रय
१९९. तेजोवतीशिरोरत्नं
२००. सत्यानित्यावतंसितः
२०१. सविघ्नंनाशिनीपीठः
२०२. सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयः
२०३. लिपिपद्मासनधारो
२०४. वह्निधामत्रायाश्रयः
२०५. उन्नतप्रपदो
२०६. गूढ़गुल्फः
२०७. संवृतपार्ष्णिकः
२०८. पीनजंघे
२०९. श्लिष्टजानुः
२१०. स्थूलोरूः
२११. प्रोन्नमत्कटिः
२१२. निम्ननाभिः
२१३. स्थूलकुक्षिः
२१४. पीनवक्षा
२१५. वृहद्भुजः
२१६. पीनस्कन्धः
२१७. कम्बुकण्ठो
२१८. लम्बोष्ठो
२१९. लम्बनासिकः
२२०. भग्नवामरदस्तुङ्ग-सत्यदन्तौ
२२१. महाहनुः
२२२. हस्वनेत्रत्रयः
२२३. शूर्पकर्णो
२२४. निबिडमस्तकः
२२५. स्तवकाकारकुम्भाग्रो
२२६. रत्नमौलिर्निरंकुशः
२२७. सर्पाहारकटिसूत्रः
२२८. सर्पयज्ञोपवीतवान्
२२९. सर्पकोटीरकटकः
२३०. सर्पग्रैवेयकाङ्गदः
२३१. सर्पकक्ष्योदारबन्धः
२३२. सर्पराजोत्तरीयकः
२३३. रक्तो
२३४. रक्ताम्बरधरो
२३५. रक्तमाल्य विभूषणः
२३६. रक्तेक्षणों
२३७. रक्तकरो
२३८. रक्ताल्वोण्ठ पल्लवः

२३९. श्वेतः
२४०. श्वेताम्बरधरः
२४१. श्वेताल्यविभूषणः
२४२. श्वेतातपत्ररुचिरः
२४३. श्वेत चामर बीजितः
२४४. सर्वावयव
२४५. सम्पूर्णः
२४६. सर्वलक्षण लक्षितः
२४७. सर्वाभरणशोभाढ्यः
२४८. सर्वशोभासमन्वितः
२४९. सर्वमङ्गलमंगल्य
२५०. सर्वकारणकारणम्
२५१. सर्वदैककरः
२५२. शार्ङ्गी
२५३. बीजापुरी
२५४. गदाधरः
२५५. इक्षूचापधरः
२५६. शूली
२५७. चक्रपाणि
२५८. सरोजभृत्
२५९. पाशी भृतोत्पलः
२६०. शालीमञ्जरीस्व-
दन्तभृत
२६१. कल्पवल्लीधरो
२६२. विश्वाभयदैककरो
२६३. वशी
२६४. अक्षमालाधरो
२६५. ज्ञानमुदावान्
२६६. मुद्गरायुधः
२६७. पूर्णपात्री
२६८. कम्बूधरो
२६९. विधृतालिसमुद्गगकः
२७०. मातुलिङ्ग-
रश्चूतकलिकाभूत्
२७१. कुठारवान्
२७२. पुस्तकरस्थस्वर्णघटी
२७३. पूर्णरत्नाभिवर्षकः
२७४. भारती सुन्दरी नाथो
२७५. विनायकरति प्रियः
२७६. महालक्ष्मीप्रियतमः
२७७. सिद्ध लक्ष्मी मनोरमः
२७८. रमारमेश पूर्वाङ्गो
२७९. दक्षिणोमामहेश्वरः
२८०. महीवराहवामाङ्गो
२८१. रतिकंदर्पपश्चिमः
२८२. आमोदमोदजननः
२८३. सप्रमोद
२८४. प्रमोदनः
२८५. समेधितसमृद्धि
२८६. श्री ऋषि

२८७. सिद्धि प्रवर्तकः
२८८. दत्तसौमुख्य
२८९. सुमुखः
२९०. कान्तिकंदालिताश्रयः
२९१. मदनावत्याश्रितङघ्रिः
२९२. कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखः
२९३. विघ्नसम्पल्लवोषघ्नः
२९४. सेवोन्निद्रमदद्रवः
२९५. विघ्नकृन्निघ्न चरणे
२९६. द्राविणी
२९७. शक्ति सत्कृत्ः
२९८. तीव्रा प्रसन्न नयनो
२९९. ज्वालिनीपालितैकद्रुक्
३००. मोहिनी मोहिनो
३०१. भोगदायिनी
३०२. कान्ति मण्डितः
३०३. कामिनीकान्तवक्त्र
३०४. श्रीराधिष्ठितवसुन्धरः
३०५. वसुन्धरामदोन्नद्ध
३०६. महाशंख
३०७. निधि प्रभो
३०८. नमद्धसुमती मौलि
३०९. महापद्मनिधि प्रभुः
३१०. सर्वसद्गुरुसंसेव्य
३११. शोचिष्केशहृदाश्रयः
३१२. ईशानमूर्धा
३१३. देवेन्द्रशिखा
३१४. पवननन्दनः
३१५. अग्रपत्यग्रनयनो
३१६. दिव्यास्त्राणां
३१७. प्रयोगवित्
३१८. ऐरावतादिसर्वा-
शावारणा
३१९. वरणप्रियः
३२०. वज्राद्यस्त्रपरीवारो
३२१. गजचण्डसमाश्रयः
३२२. जयाजयपरीवारो
३२३. विजयाविजयावहः
३२४. अजितार्चितापादाब्जो
३२५. नित्यानित्यावतंसितः
३२६. विलासिनी-
कृतोल्लासः
३२७. शौण्डी
३२८. सौन्दर्यमण्डितः
३२९. अनन्तानन्तः
३३०. सुखदः
३३१. सुमङ्गलसुमङ्गल
३३२. इच्छाशक्ति
३३३. ज्ञानशक्ति
३३४. क्रियाशक्ति

३३५. निषेवितः
३३६. सुभगासश्रितपदो
३३७. ललिता ललिता श्रयः
३३८. कमिनी कामनः
३३९. काममालिनी
३४०. केलि
३४१. लालितः
३४२. सरस्वत्याश्रयो
३४३. गौरीनन्दनः
३४४. श्री निकेतनः
३४५. गुरुगुप्तपदो
३४६. वाचासिद्धा
३४७. वागीश्वरीपतिः
३४८. नलिनी कामुको
३४९. वामारामो
३५०. ज्येष्ठा मनोरमः
३५१. रौद्रीमुद्रित पादाब्जो
३५२. हम्बीजस्तङ्ग शिक्तकः
३५३. विश्वादि जनन त्राणः
३५४. स्वाहा
३५५. शक्ति
३५६. सकीलकः
३५७. अमृताब्धिकृतवासो
३५८. मदघुर्णितलोचनः
३५९. उच्छिष्टगण
३६०. उच्छिष्टगणेशो
३६१. गणनायकः
३६२. सार्वकालिक ससिद्धि
३६३. नित्यशैवो दिगम्बरः
३६४. अनपायोऽनन्त दृष्टिर
३६५. प्रमेयोऽजरामरः
३६६. अनाविलो
३६७. अप्रतिरथो
३६८. ह्यच्युतोऽमृतक्षरम्
३६९. अप्रतर्क्यो
३७०. अक्षयो
३७१. अजयो
३७२. अनाधारो
३७३. अनामयो
३७४. अमलः
३७५. अमोघसिद्धि
३७६. द्वैतमघोरो
३७७. अप्रमितानन:
३७८. आनाकारोऽब्धि
३७९. भूम्यग्निबलाघ्नो
३८०. अव्यक्त लक्षणः
३८१. आधारपीठः
३८२. आधारः
३८३. आधाराधेयवर्जितः
३८४. आखुकेतन

३८५. आशापूरक
३८६. आखूमहारथः
३८७. इक्षु सागरमध्यस्थ
३८८. इक्षुभक्षणलालसः
३८९. इक्षुचापातिरेक
३९०. श्रीरिक्षुचाप
३९१. निषेवितः
३९२. इन्द्रगोपसमान
३९३. श्रीरिन्द्रनील
३९४. समद्युतिः
३९५. इन्दीवरदलश्याम
३९६. इन्दुमण्डल
३९७. निर्मलः
३९८. इध्मप्रिय
३९९. इडाभाग
४००. इराधामेन्दिरा प्रियः
४०१. इक्षवाकुविघ्नविध्वंसी
४०२. इतिकर्त्तव्यतेप्सितः
४०३. ईशानमोलिरोशान
४०४. ईशानसुत
४०५. ईतिहा
४०६. ईषणात्रयकल्पान्त
४०७. ईहामात्रविवर्जितः
४०८. उपेन्द्र
४०९. उडुभृन्मौलिरूण्डेर-कबलिप्रियः
४१०. उन्नतानन
४११. उतुङ्ग
४१२. उदारत्रिदशाग्रणीः
४१३. ऊर्जस्वानूष्मलपद
४१४. ऊहापोहदुरासदः
४१५. ऋग्यजुः सामसम्भूति
४१६. ऋद्धि सिद्धि प्रवर्तकः
४१७. ऋजुचितैकसुलभ
४१८. ऋणत्रय विमोचकः
४१९. लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां
४२०. लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम्
४२१. लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां
४२२. लूताविस्फोटनाशनः
४२३. एकार पीठ मध्यस्थ
४२४. एकपादकृतासनः
४२५. एजिताखिल दैत्य
४२६. श्रीरेधिताखिलसंश्रयः
४२७. ऐश्वर्य निधिरैश्वर्य
४२८. मैहिकामुष्मिक प्रदः
४२९. ऐरम्मदसमोन्मेष
४३०. ऐरावत
४३१. निभाननः
४३२. ओंकारवाच्य
४३३. ओंकार

४३४. ओजस्वानोषधीपतिः
४३५. औदार्यनिधिः
४३६. औद्धत्यधुर्यं
४३७. औन्नत्यनिरस्वनः
४३८. अंकुशः
४३९. सुरनागानामंकुशः
४४०. सुरविद्वषाम्
४४१. अः समस्त-
विसर्गान्तपदेषु
४४२. परिकीर्तितः
४४३. कमण्डलुधरः
४४४. कल्पः
४४५. कपर्दी
४४६. कलभाननः
४४७. कर्मसाक्षी
४४८. कर्मकर्ता
४४९. कर्माकर्म फलप्रदः
४५०. कदम्बगोलकाकारः
४५१. कूष्माण्ड
४५२. गणनायकः
४५३. कारूण्यदेहः
४५४. कपिलः
४५५. कथकः
४५६. कटिसूत्रभृत्
४५७. सर्वे खड्गप्रिय
४५८. खड्गखान्तान्तस्थः
४५९. खनिर्मलः
४६०. खल्वाटशृंगनिलयः
४६१. खटवाङ्गो
४६२. खदुरासदः
४६३. गुणाढ्यो
४६४. गहनो
४६५. गस्थो
४६६. गद्य पद्य सुधार्णवः
४६७. गद्यगानप्रियो
४६८. गर्जो
४६९. गीतगीर्वाण
४७०. पूर्वजः
४७१. गुह्याचारतो
४७२. गुह्यो
४७३. गुह्यागम
४७४. निरूपितः
४७५. गुहाशयो
४७६. गुहाऽधिस्था
४७७. गुरुगम्यो
४७८. गुरोर्गुरुः
४७९. घण्टाघर्घरिकामाली
४८०. घटकुम्भो
४८१. घटोदरः
४८२. चण्डश्चंडेश्वर

४८३. सुहृच्चण्डीशश्चण्ड विक्रमः
४८४. चराचरपति
४८५. चिन्तामणि
४८६. चर्वणलालसः
४८७. छन्दश्छन्दो
४८८. वपुश्छन्दो
४८९. दुर्लक्ष्यछन्दविग्रहः
४९०. जगद्योनि
४९१. जगत्साक्षी
४९२. जगदीशो
४९३. जगन्मयः
४९४. जपो जपपरो
४९५. जप्यो
४९६. जिह्वासिंहासनप्रभुः
४९७. झलज्झलोल्लसद्या-नझङ्कारि
४९८. भ्रमरा कुलः
४९९. टंकारस्फारसंराव-ष्टंकारिमणिनूपुरः
५००. ठद्वयीपल्लवान्तः
५०१. स्थसर्वमन्त्रैक
५०२. सिद्धिदः
५०३. डिण्डिमुण्डो
५०४. डाकिनीशो
५०५. डामरो
५०६. डिण्डिम प्रियः
५०७. ढक्कानिनादमुदितौ
५०८. ढौको
५०९. ढुण्ढि विनायकः
५१०. तत्त्वानां परं तत्त्वं
५११. तत्त्वं पद निरूपितः
५१२. तारकान्तरसंस्थान
५१३. तारकः
५१४. तारकान्तकः
५१५. स्थाणुः स्थाणुप्रियः
५१६. स्थाता
५१७. स्थावरं
५१८. जङ्गमं जगत्
५१९. दक्षयज्ञ प्रमथनो
५२०. दाता
५२१. दानवमोहनः
५२२. दयावान्
५२३. दिव्यविभवो
५२४. दण्डभृच्छण्डनायकः
५२५. दन्तप्रभिन्नभ्रमालो
५२६. दैत्यवारणदारणः
५२७. दंष्ट्रालग्नद्विपघटो
५२८. देवार्थनृगजाकृतिः
५२९. धनधान्यपतिर्धन्यो

५३०. धनदो
५३१. धरणीधरः
५३२. ध्यानैक प्रकटो
५३३. ध्येयो
५३४. ध्यानंध्यान परायणः
५३५. नन्द्यो
५३६. नन्दिप्रियो
५३७. नादो
५३८. नादमध्य प्रतिष्ठितः
५३९. निष्कलो
५४०. निर्मलो
५४१. नित्यो
५४२. नित्यानित्यो
५४३. निरामयः
५४४. परं व्योम
५४५. परं धाम
५४६. परमात्मा
५४७. परंदम्
५४८. परात्परः
५४९. पशुपतिः
५५०. पशुपाश विमोचकः
५५१. पूर्णानन्दः
५५२. परानन्दः
५५३. पुराणपुरुषोत्तमः
५५४. पद्मप्रसन्ननयनः
५५५. प्रणताज्ञान मोचनः
५५६. प्रमाण प्रत्यातीतः
५५७. प्रणतार्तिनिवारणः
५५८. फलहस्तः फणिपतिः
५५९. फेत्कारः फाणित प्रियः
५६०. बाणाचिताङ्घ्रि-युगलो
५६१. बालकेलि कुतूहली
५६२. ब्रह्म
५६३. ब्रह्मर्चितपदो
५६४. ब्रह्मचारी
५६५. बृहस्पति
५६६. ब्रह्मोत्तमो
५६७. ब्रह्मपरो
५६८. ब्रह्मण्यो
५६९. ब्रह्मवित्प्रियः
५७०. ब्रह्मन्नादाग्रय
५७१. चीत्कारो
५७२. ब्रह्माण्डावलिमेखलः
५७३. भूक्षेपदत्त
५७४. लक्ष्मीको
५७५. भर्गो
५७६. भद्रो
५७७. भयापहः
५७८. भगवान

५७९. भक्तिसुलभो
५८०. भूतिदो
५८१. भूतिभूषणः
५८२. भव्यो
५८३. भूतालयो
५८४. भोगदाता
५८५. भ्रूमध्य गोचरः
५८६. मन्त्रो
५८७. मन्त्रपतिर्मंत्री
५८८. मदमत्तमनोरमः
५८९. मेखलावान्
५९०. मन्दगति
५९१. मतिमत्कमलेक्षणः
५९२. महाबलो
५९३. महावीर्यो
५९४. महाप्राणों
५९५. महामनाः
५९६. यज्ञ
५९७. यज्ञपति
५९८. यज्ञगोप्ता
५९९. यज्ञफलप्रदः
६००. यशस्करो
६०१. योगगम्यो
६०२. याज्ञिको
६०३. याजक प्रियः
६०४. रसो
६०५. रसप्रियो
६०६. रस्यो
६०७. रज्जको
६०८. रावाणर्चितः
६०९. रक्षो
६१०. रक्षाकरो
६११. रत्नगर्भो
६१२. राजसुखप्रदः
६१३. लक्ष्यं
६१४. लक्ष्यप्रदो
६१५. लक्ष्यो
६१६. लक्षस्थो
६१७. लड्डूकप्रियः
६१८. लानप्रियो
६१९. लास्यपरो
६२०. लाभकृल्लोकविश्रुतः
६२१. वरेण्यो
६२२. वह्निवदनो
६२३. वन्द्यो
६२४. वेदान्त गोचरः
६२५. विकर्ता
६२६. विश्वतश्चक्षु
६२७. विधाता
६२८. विश्वतोमखः

६२९. वामदेवो
६३०. विश्वनेता
६३१. वज्रिवज्रनिवारणः
६३२. विश्व बन्धन
६३३. विष्कम्भाधारो
६३४. विश्वेश्वर
६३५. प्रभुः
६३६. शब्दब्रह्म
६३७. शमप्राप्यः
६३८. सम्भुशक्ति
६३९. गणेश्वरः
६४०. शास्ता
६४१. शिखाग्रनिलयः
६४२. शरण्यः
६४३. शिखरीश्वरः
६४४. षड्ऋतुकुसुमस्त्रवी
६४५. षडाधारः
६४६. षडक्षरः
६४७. संसार वैद्यः
६४८. सर्वज्ञः
६४९. सर्वभेषजभेषजम्
६५०. सृष्टिस्थितिलयक्रीडः
६५१. सुरकुञ्जर भेदनः
६५२. सिन्दूरित महाकुम्भः
६५३. सदसद्वयक्तिदायकः
६५४. साक्षी समुद्रमंथन
६५५. स्वसंवेद्यः
६५६. स्वदक्षिणः
६५७. स्वतन्त्रः
६५८. सत्यसंकल्पः
६५९. सामगानरतः
६६०. सुखी
६६१. हंसो
६६२. हस्तिपिशाचिशो
६६३. हवनं
६६४. हव्यकण्यभुक
६६५. हव्यो
६६६. हुतिप्रियो
६६७. हर्षो
६६८. हल्लेखामन्त्रमध्यगः
६६९. क्षेत्राधिपः
६७०. क्षमाभर्ता
६७१. क्षमापरपरायणः
६७२. क्षिप्र क्षेमकरः
६७३. क्षोमानन्दः
६७४. क्षोणी
६७५. सुरद्रुमः
६७६. धर्मप्रदः
६७७. अर्थदः
६७८. कामदाता

६७९. सौभाग्य वर्द्धनः
६८०. विद्याप्रदो
६८२. विभवदो
६८२. भुक्ति मुक्ति फलप्रदः
६८३. अभिरूप्यकरो
६८४. वीरः
६८५. श्रीप्रदः
६८६. विजयप्रदः
६८७. सर्ववश्यकरो
६८८. गर्भदोषहा
६८९. पुत्र पौत्रदः
६९०. मेघादः
६९१. कीर्तिदः
६९२. शोकहारी
६९३. दौर्भाग्य नाशनः
६९४. प्रतिवादी मुखस्तभो
६९५. रुष्टचित्तप्रसादनः
६९६. पराभिचारशमनो
६९७. दुःखभञ्जनकारकः
६९८. लवस्त्रुटिः
६९९. कालाकाष्ठा
७००. निमेषस्तत्परः क्षणः
७०१. घटी मुहूर्त
७०२. प्रहरो
७०३. दिवा
७०४. नक्तमहर्निशम्
७०५. पक्षो मासोऽयनं
७०६. वर्ष युगं
७०७. कल्पोमहालयः
७०८. राशिस्तारा
७०९. तिथिर्योगो
७१०. वारः
७११. करणमंशकम्
७१२. लग्नं
७१३. होरा
७१४. कालचक्रं
७१५. मेरू
७१६. सप्तर्षयो
७१७. ध्रुवः
७१८. राहुर्मन्दः
७१९. कविर्जीबो
७२०. बुद्धो
७२१. भौमः
७२२. शशि
७२३. रविः
७२४. कालःसृष्टिः
७२५. स्थितिर्विश्वं
७२६. स्थावर
७२७. जङ्गमंचयत्
७२८. भूरापोऽग्नि

७२९. मरुद्भयो
७३०. माहंकृति
७३१. प्रकृतिः
७३२. पुमान्
७३३. ब्रह्मा
७३४. विष्णुः
७३५. शिवो
७३६. रुद्रः
७३७. ईश शक्तिः
७३८. सदाशिवः
७३९. त्रिदशाः
७४०. पितरः
७४१. सिद्धा
७४२. यक्षा
७४३. रक्षासि
७४४. किंनराः
७४५. साध्या
७४६. विद्याधरा
७४७. भूता
७४८. मनुष्यः
७४९. पशवः
७५०. खगाः
७५१. समुद्राः
७५२. सरितः
७५३. शैला
७५४. भूतं
७५५. भव्यं
७५६. भवोद्भवः
७५७. सांख्यं
७५८. पातञ्जलंयोगः
७५९. पुराणानि
७६०. श्रुतिः
७६१. स्मृतिः
७६२. वेदाङ्गानि
७६३. सदाचारो
७६४. मीमांसा
७६५. न्याय विस्तरः
७६६. आयुर्वेदो
७६७. धनुर्वेदो
७६८. गन्धर्वं
७६९. काव्यनाटकम्
७७०. वैखनसं
७७१. भागवतं
७७२. सात्वतं
७७३. पाञ्चरात्रकम्
७७४. शैवं
७७५. पाशुपतं
७७६. कालामुखम्
७७७. भैरवशासनम्
७७८. शाक्तं

७७९. वैनायकं
७८०. सौरं
७८१. जैनमार्हतसंहिता
७८२. सदसद्धयक्तम
७८३. व्यक्तं
७८४. सचेतममचेतनम्
७८५. बन्धो मोक्षः
७८६. सुखं
७८७. भोगोऽयोग
७८८. सत्यमणुर्महान
७८९. स्वास्ति हुं फट्
७९०. स्वधा
७९१. स्वाहा
७९२. श्रोषड् वौषड्वषणामः
७९३. ज्ञानं
७९४. विज्ञानम्
७९५. आनन्द
७९६. बोधः
७९७. संविच्छमो
७९८. यमः
७९९. एक
८००. एकाक्षराधरा
८०१. एकाक्षरापरायणः
८०२. एकाग्रधीर
८०३. एकवीर
८०४. एकानेक स्वरूपधृक्
८०५. द्विरूपो
८०६. द्विभुजो
८०७. दयक्षो
८०८. द्विरदो
८०९. दीपरक्षकः
८१०. द्वेमातुरो
८११. द्विवदनो
८१२. द्वंद्वातीतो
८१३. द्वयातिग
८१४. त्रिधामा
८१५. त्रिकरस्त्रेता
८१६. त्रिवर्ग फलदायकः
८१७. त्रिगुणात्मा
८१८. त्रिलोकादि
८१९. त्रिशक्ति
८२०. त्रिलोचन
८२१. चतुर्बाहु
८२२. चतुर्दन्त
८२३. चतुरात्मा
८२४. चतुर्मुखः
८२५. चतुर्विधोपायमपपाय
८२६. चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः
८२७. चतुर्विधवचोवृत्ति
८२८. परिवृत्तिप्रवर्तकः

८२९. चतुर्थी पूजनप्रीतश्च
८३०. चतुर्थी तिथि संभवः
८३१. पञ्चाक्षरात्मा
८३२. पञ्चात्मा
८३३. पञ्चास्य
८३४. पञ्चकृत्यकृत
८३५. पञ्चाधारः
८३६. पञ्चवर्णः
८३७. पञ्चाक्षरपरायणः
८३८. पञ्चतालः
८३९. पञ्चकरः
८४०. पञ्चप्रणवभावितः
८४१. पञ्चब्रह्ममयस्मूर्तिः
८४२. पञ्चावर्णवारितः
८४३. पञ्चभक्ष्यप्रियः
८४४. पञ्चवाणः
८४५. पञ्चशिवात्मकः
८४६. षड्कोणपीठः
८४७. षट्चक्रधामा
८४८. षड्ग्रन्थिभेदकः
८४९. षड्ध्वध्वान्त विध्वंसी
८५०. षड्ङ्गुलमहारदः
८५१. षण्मुखः
८५२. षण्मुखभ्राता
८५३. षट्शक्तिपरिवारितः
८५४. षड्वैरिवर्गविध्वंसी
८५५. षड्भूमिभयभञ्जनः
८५६. षट्तर्कदूरः
८५७. षट्कर्मनिरतः
८५८. षड्साश्रयः
८५९. सप्तपातालचरणः
८६०. सप्तद्वीपोरूमण्डलः
८६१. सप्तस्वर्लोकमुकुटः
८६२. सप्तसप्तिवरप्रदः
८६३. सप्ताङ्गराज्यसुखदः
८६४. सप्तर्षिगणमण्डितः
८६५. सप्तछन्दोनिधिः
८६६. सप्तहोता
८६७. सप्तस्वराश्रयः
८६८. सप्ताब्धिकेलिकासारः
८६९. सप्तमातृनिषेवितः
८७०. सप्तच्छन्दोमदमदः
८७१. सप्तच्छन्दोमखप्रभुः
८७२. अष्टमूर्ति
८७३. ध्येयमूर्ति
८७४. अष्टप्रकृतिकारणम्
८७५. अष्टाङ्गयोग
८७६. फलभू
८७७. अष्टपत्राम्बुजासनः
८७८. अष्टशक्ति

८७९. समृद्धश्री
८८०. अष्टऐश्वर्य प्रदायकः
८८१. अष्टपीठोपपीठ
८८२. श्री
८८३. अष्टमातृसमावृतः
८८४. अष्टभैरवसेव्योऽष्ट
८८५. वसुवन्द्यो
८८६. अष्टमूर्तिभृत्
८८७. अष्टचक्रस्फुरन्मूर्ति
८८८. अष्टद्रव्य हविः प्रियः
८८९. नवनागासनाध्यायी
८९०. नवनिध्यनुशासिता
८९१. नवद्वारपुराधारो
८९२. नवधारनिकेतनः
८९३. नवनारायण
८९४. स्तुत्यो
८९५. नवदुर्गानिषेवितः
८९६. नवनाथ
८९७. महानाथो
८९८. नवनागविभूषणः
८९९. नवरत्न विचाङ्को
९००. नव शक्ति
९०१. शिरोधृत
९०२. दशात्मको
९०३. दशभुजो
९०४. दशदिक्पति
९०५. वन्दितः
९०६. दशाध्यायो
९०७. दशप्राणो
९०८. दशेन्द्रियनियामकः
९०९. दशाक्षरमहामन्त्रो
९१०. दशाशात्यापिविग्रहः
९११. एकादशादिभीरूदैः
९१२. स्तुतः
९१३. एकादशाक्षरः
९१४. द्वारशोद्दण्डदोर्दण्डो
९१५. द्वादशान्तनिकेतनः
९१६. त्रयोदशाभिदाभिन्न
९१७. विश्वदेवाधिदैवतम्
९१८. चतुर्दशेन्द्रवरद
९१९. चतुर्दशमनु प्रभुः
९२०. चतुर्दशादिविद्या
९२१. चतुर्दश जगत्प्रभुः
९२२. सामपञ्चदशः
९२३. पंचदशीशीतांशु-निर्मलः
९२४. षोडशाधारनिलयः
९२५. षोडशस्वरमातृकः
९२६. षोडशान्तपदावासः
९२७. षोडशेन्दुकलात्मकः

९२८. कला सप्तदशी
९२९. सप्दशः
९३०. सप्तदशाक्षरः
९३१. अष्टादशद्वीपति
९३२. अष्टादशपुराणकृत्
९३३. अष्टादशौषधि
९३४. सृष्टि
९३५. अष्टादशविधिः स्मृतः
९३६. अष्टदशलिपित्याष्टि
९३७. समष्टिज्ञान
९३८. कोविदः
९३९. एकविंशः
९४०. विंशल्यंगुलि पल्लवः
९४१. चतुर्विंशतितत्वात्मा
९४२. पञ्चविंशाख्य
९४३. पुरूषः
९४४. सप्तविशातितारेशः
९४५. सप्तविंशति योगकृत्
९४६. द्वात्रिंशद्भैरवाधीश
९४७. चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः
९४८. षट्त्रिंशतत्वसम्भूति
९४९. अष्टात्रिंशत्कलातनुः
९५०. नमदेकोनपञ्चाशन्म
९५१. मरुद्धर्गनिरर्गलः
९५२. पञ्चाशदक्षरश्रेणी
९५३. पञ्चाशद्रुद्रविग्रह
९५४. पञ्चाशद्विष्णु-
शक्तिशः
९५५. पञ्चाशन्मातृकालयः
९५६. द्विपञ्चाशद्धपुःश्रेणी
९५७. त्रिषष्टयक्षर संश्रयः
९५८. चतुः षष्टयर्णनिर्णेता
९५९. चतुः सष्टिकलानिधिः
९६०. चतुः षष्टिमहासिद्धि
९६१. योगिनी वृन्दवन्दितः
९६२. अष्टपष्टि
९६३. महातीर्थ
९६४. क्षेत्र
९६५. भैरव
९६६. भावन
९६७. चतुर्नवति
९६८. मन्त्रात्मा
९६९. षण्णवत्यधिक प्रभुः
९७०. शतानन्दः
९७१. शतधृति
९७२. शतपत्रायतेक्षणः
९७३. शतनीकः
९७४. शतमुखः
९७५. शतधाराधरायुधः
९७६. सहस्रपत्रनिलयः

९७७. सहस्रफणभूषणः
९७८. सहस्रशीर्षापुरुष
९७९. सहस्राक्ष
९८०. सहस्रपात्
९८१. सहस्रनामसंस्तुस्यः
९८२. सहस्राक्षबलापहः
९८३. दशसाहस्रफणभृत-
फणिराजकृतासनः
९८४. अष्टशीतसहस्राद्य
९८५. महर्षिस्तोत्रयन्त्रितः
९८६. लक्षाधीशप्रियाधारो
९८७. लक्षाधारमनोमयः
९८८. चतुर्लक्षजपप्रीतश्च
९८९. चर्तुलक्षप्रकाशितः
९९०. चतुरशीतिलक्षाणां
९९१. जीवानां
९९२. देहसंस्थितः
९९३. कोटिसूर्यप्रतीकाशः
९९४. कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः
९९५. शिवाभवाध्युष्टकोटि
९९६. विनायकधुरंधरः
९९७. सप्तकोटि महामन्त्र-
मन्त्रितावयवद्युतिः
९९८. त्रयस्त्रिंशत्कोटि-
सुरश्रेणी
९९९. प्रणतं
१०००.पादुकः
१००१.अनन्तनामनन्तश्री-
रत्नन्तानन्तसौख्यदः
१००२.ॐ इतिवैयानकं -
नामनां सहस्रमिदमीरितम्

(इति श्रीवैनायकनाम्नां सहस्रमिदमीरितम्)

गणेश चतुर्थी क्यों मनाई जाती है ?

जय गणपति, गणनायक जय है ! जन-मन मंगल त्राता,
एक रदन, गजवदन, विनायक, चतुर्थी के दिन आता ॥

भगवान श्री गणेश का जन्म शिव पुराण के अनुसार भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष चतुर्थी को रात्रि के प्रथम प्रहर में हुआ था जो गणेश चतुर्थी कहलाती है । भगवान शिव ने जब त्रिशूल से बाल गणेश का सिर छेदन कर दिया था तब पार्वती द्वारा उत्पन्न शक्तियों ने प्रलय मचा दिया था । किन्तु उसी समय भगवान विष्णु ने हाथी के शिशु का सिर जोड़कर गणेश को जीवित कर दिया था तो पार्वती जी प्रसन्न हो गई थीं । शिवजी ने गणेशजी को अनेक वर दिये थे जिनके अनुसार वे देवों के देव, सर्वप्रथम पूज्य, विघ्न विनाशक और मंगल व सिद्धि प्रदाता बने ।

तभी शिवजी ने गणेश जी को यह वर भी दिया था कि जो व्यक्ति तुम्हारी जन्मतिथि अर्थात् गणेश चतुर्थी से व्रत प्रारम्भ करके प्रत्येक मास की इस तिथि को तुम्हारा पूजन और व्रत करेगा, उसे सभी सिद्धियाँ प्राप्त होंगी । शिव कहते हैं कि जो मानव गणेश चतुर्थी के दिन श्रद्धा, विश्वास और भक्ति से श्री गणेश को प्रसन्न करने के लिए व्रत-उपवास करेगा, सहस्त्रनाम से विधिपूर्वक पूजा करेगा, उसके सभी विघ्न सदा के लिए नाश हो जायेंगे । उसके कार्य सिद्ध होते रहेंगे ।

गणेश चतुर्थी व्रत का फल

उपवास के फल बताते हुए स्वयं भगवान शिव आगे कहते हैं कि सभी के लिए यह फलदायक है। इस व्रत को करने वाले की इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

गणेश जी के पूजन का दिन गणेश चतुर्थी बताया गया है जो कि भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष में आती है।

गणेश जी को पुत्ररूप में पाने के लिए पार्वती जी ने ब्रह्मा का ध्यान किया था और कठोर तप किया था। वे बारह वर्ष तक एकाक्षरी गणपति मन्त्र का जाप करती रही थीं। उसी से प्रसन्न होकर गणेश जी प्रकट हुए और पुत्र रूप में प्राप्त हुए।

गणेश चतुर्थी गणपति की तिथि है। इस दिन गणपति की मूर्ति की श्रद्धा व भक्ति के साथ पूजा और सहस्त्रनाम जप करते हुए उनकी साधना करें, आराधना करें। ऐसा करने से गणेश चतुर्थी फलदायिनी सिद्ध होगी।

सभी पुराणों में सभी तिथियों के वर्णन मिलते हैं। जैसे एकादशी व्रत, पूर्णमासी व्रत, सप्तमी व्रत, अष्टमी व्रत आदि। किन्तु सर्वाधिक फलदायिनी पवित्र तिथि चतुर्थी है। इस तिथि को वरदान दिया था कि जो कोई निराहार रहकर इस दिन व्रत करेगा उसके सब कार्य सिद्ध होंगे। अतः प्रत्येक मास की कृष्ण और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को व्रत रखकर गणपति गणेश जी की पूजा-अर्चना करनी चाहिए।

स्त्रियों को प्रत्येक चतुर्थी का व्रत या कम से कम भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी, कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, माघ कृष्ण चतुर्थी का व्रत अवश्य करना चाहिये जिन्हें क्रमशः वहुला चौथ, करवा चौथ और तिल चौथ या संकट चौथ कहते हैं। इस दिन पूजा कर गणेश सहस्त्रनाम के पाठ से स्त्रियों को अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

व्रत-उपवास की विधि

(बहुला चौथ, करवा चौथ, तिल चौथ)

१. गणेश चतुर्थी या बहुला चौथ–भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी।
२. करवा चौथ–कार्तिक कृष्ण चतुर्थी।
३. तिल चौथ या संकट चौथ–माघ कृष्ण चतुर्थी।

उपरोक्त तीनों चतुर्थी के व्रत-विधान एक समान हैं। व्रत उपवास करने वाले स्त्री या पुरुष प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में नित्यकर्म से निवृत्त हो पुस्तक में अग्रर्णित विधि से श्रीगणेश का पूजन कर दिन भर गणेश सहस्त्रनाम का पाठ करें तथा गणेश जी के समक्ष निम्नानुसार प्रसाद रखें।

१. गणेश चतुर्थी के दिन–चूरमे के लड्डू (आटे, घृत व शक्कर से निर्मित)
२. करवा चौथ–दस दीपक (करवे) पकवान से भरें।
३. तिल चौथ–गुड़ व तिल्ली से निर्मित लड्डू।

फिर गणेश जी को अर्घ्य दें, चतुर्थी तिथि को अर्घ्य दें,

बाद में चन्द्रमा को अर्घ्य दें। चन्द्रमा को सात बार अर्घ्य दिया जाता है। अर्घ्य के बाद गणेश जी को प्रणाम कर अपने पति की मंगल कामना कर पति के दर्शन करें। फिर ब्राह्मणों को भोजन कराएँ एवं दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। यही चतुर्थी व्रत की विधि है।

उपरोक्तानुसार व्रत करने से स्त्रियों को निम्नलिखित फल की प्राप्ति होती है।

१. पति के सुख-सौभाग्य में वृद्धि होती है।
२. धन चाहने वालों को धन की प्राप्ति होती है।
३. पुत्र की मनोकामना पूर्ण होती है।
४. रोगी रोगमुक्त हो जाते हैं।
५. कुँवारी कन्या को सुयोग्य पति की प्राप्ति होती है।
६. सुख चाहने वालों को सुख मिलता है और सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

बारहमासी गणेश चौथ व्रत कथा

श्री गणेश चौथ के व्रत कामनाओं की सिद्धि तथा विनाशक होते हैं । यह व्रत हर माह की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को होता है । इन व्रतों में भादों कृष्ण पक्ष की चौथ (डंडा चौथ) कार्तिक मास की करवा चौथ तथा माघ मास की माघी चौथ तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । इन व्रतों में चन्द्र दर्शन के बाद ही आहार किया जाता है ।

१. चैत्र मास गणेश चौथ व्रत कथा

पार्वतीजी ने गणेशजी से प्रश्न किया कि चैत्र मास की चौथ को किस गणेश का पूजन करना चाहिये । गणेशजी बोले–मातेश्वरी ! इस दिन विकट नामक गणेश का पूजन करना चाहिये । व्रत करके पंचगव्य (गोदुग्ध, गोमूत्र, गोबर, गोघृत, गोदधि) लेवें । गणेशजी का पूजन करें, घी तथा बिजौरा की हवन में आहुति देवें । ऐसा करने से संकटों का नाश होता है तथा बाँझ स्त्री को भी पुत्र हो जाता है । सतयुग में कमरध्वज नामक एक राजा था । वह अपनी प्रजा का पुत्र के समान पालन करता था । उसके राज्य में कोई दुःखी नहीं था । महर्षि याज्ञवल्क्य के आशीर्वाद से उस राजा के एक सुन्दर लड़का पैदा हुआ ।

राजा ने राज्य का कार्य अपने मंत्री को सौंप कर बच्चे का पालन-पोषण स्वयं प्रारम्भ कर दिया । मंत्री के पाँच पुत्र थे, उसने सबका विवाह कर दिया । पाँचों बहुओं में सबसे छोटी बहू धर्मात्मा और श्रद्धालु थी । उसने चैत्र की चौथ को गणेश का पूजन और व्रत किया । उसकी सास ने उसे मना किया तो भी उसने पूजन और व्रत को त्यागा नहीं । तब सास ने कहा कि दुष्टा हमारे घर का नाश करने आई है । सास ने उसे मारा-पीटा । इस पर भी बहू ने अपना पूजन बन्द नहीं किया । तब सास ने अपने छोटे बेटे से कहा कि यह तेरी बहू मेरा कहा नहीं मानती है तथा पाखण्ड और ढोंग मचा रही है । यह कौन सा गणेश है जिसकी यह पूजा करती है । माता के बहकाने से बेटे ने अपनी बहू को बहुत मारा-पीटा किन्तु बहू ने सारे कष्ट और

दुःख सहकर श्री गणेश का व्रत और पूजन नहीं छोड़ा । बहू ने व्रत पूजन के बाद बड़ी श्रद्धा के साथ गणेश भगवान से प्रार्थना की कि मेरे पति सास और श्वसुर के हृदय में अपनी भक्ति भावना उत्पन्न कर दो, जिससे वह मुझे सताना छोड़ दें । दूसरे ही दिन श्री गणेशजी ने अपनी माया से राजा के पुत्र को धर्मपाल के घर में छिपा दिया और राजकुमार के कपड़े और आभूषण राजभवन में डाल दिये । राजकुमार के खो जाने पर राजा बड़ा व्याकुल हुआ । राजा ने मंत्री तथा अन्य सारे राज्य कर्मचारियों को बुलाकर राजकुमार को ढूँढने और उसका पता लगाने का आदेश दिया । सारे नगरों, गाँवों, जंगलों और उद्यानों में उसे ढूंढा लेकिन राजकुमार का कहीं भी पता नहीं लगा । मंत्री एवं दूतों ने निराश हो राजा से कहा–कि सब जगह ढूँढने पर कहीं भी राजकुमार का पता नहीं लग सका है । इस पर राजा ने मंत्री धर्मपाल से कहा कि अगर राजकुमार का पता नहीं लगा तो तुम्हारे सारे परिवार को मौत के घाट उतार दिया जावेगा । राजा के वचन सुनकर मंत्री बड़ा दुःखित हुआ । उसने घर जाकर परिवार को एकत्रित कर कहा कि राजकुमार के न मिलने से हम सबका वध कर दिया जायेगा । अब हमारी रक्षा का कोई उपाय नहीं है ।

सबको दुःखी देखकर छोटी बहू ने कहा पिताजी आप लोगों ने गणेश पूजन में विध्न डाला था इसलिये यह उन्हीं का कोप हआ है । यदि आप और हम सब मिलकर विधि विधान सहित गणेशी का व्रत और पूजन करें तो गणेशजी का कोप शान्त हो जायेगा और राजकुमार भी मिल जायेगा । धर्मपाल ने बहू से कहा कि तू ही धन्य है तू ही हमारे वंश की रक्षा करने वाली है । तू जैसे कहे वैसे करने को उद्यत हैं । बहू के कहने पर सबने बड़ी श्रद्धा और लगन के साथ कष्ट नाशिनी चौथ का व्रत और पूजन किया व्रत और पूजन के प्रभाव से गणेशजी प्रसन्न हो गये और उनका कोप भी शाँत हो गया । जिससे राजकुमार प्रकट हो गये । इसलिए इस व्रत से बढ़कर और कोई दूसरा व्रत नहीं है ।

२. वैशाख मास गणेश चौथ व्रत कथा

पार्वतीजी नै अपने पुत्र गणेशजी से कहा कि हे वत्स ! वैशाख

महीने की चौथ को किसका व्रत और पूजन करना चाहिये गणेशजी ने कहा–हे जननी ! वैशाख मास की चतुर्थी को वक्रतुण्ड गणेश का व्रत और पूजन करना चाहिये और कमल गट्टे से बनी भोजन सामग्री प्रयोग में लानी चाहिये । इस तिथि के व्रत की एक कथा मैं सुनाता हूं । पहले समय में राजा रन्तिदेव के राज्य में धर्मकेतु नामक एक ब्राह्मण रहता था । उसके सुशीला और चंचला दो स्त्रियां थीं धार्मिक विचारों वाली सुशीला सदा व्रत और उपवास किया करती थी किन्तु चंचला कभी व्रत, उपवास नहीं करती थी । सदा शृंगार कर सुन्दर बनी रहती थी । उसके एक पुत्र हुआ और सुशीला के सुन्दर कन्या हुई । चंचला ने पुत्र की खुशी में प्रसन्न हो सुशीला से कहा तू सदा व्रत उपवास करती रहती है फिर भी तेरे कन्या उत्पन्न हुई और मैं कभी भी व्रत उपवास नहीं करती फिर भी मेरे सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ है । अपनी सौतन के मुख से यह बात सुनकर सुशीला बहुत दुःखी हुई और बड़ी श्रद्धा और भक्ति से गणेश जी की स्तुति करने लगी उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर गणेशजी ने उसे स्वप्न में दर्शन दिये और कहा–कि तेरी कन्या के मुंह से मोती आदि रत्न निकला करेंगे और बहुत शीघ्र तेरे सुन्दर पुत्र उत्पन्न होगा । थोड़े समय बाद सुशीला के पुत्र उत्पन्न हुआ और कन्या के मुंह से रत्न निकलने लगे । इस प्रकार सुशीला धनवान बन गई । धर्मकेतु कुछ समय बाद मृत्यु को प्राप्त हुआ । ब्राह्मण की मृत्यु के बाद चंचला घर की सब सम्पत्ति लेकर अलग हो गई । अपनी सौत सुशीला के घर में अपार धन देखकर चंचला ईर्ष्या करने लगी ।

चंचला ने अवसर पाकर सुशीला की कन्या को कुएँ में गिरा दिया । गणेशजी की कृपा से वह कुएँ से बाहर आकर अपने घर पर आ गई । कन्या को घर पर आई हुई देखकर चंचला को बड़ा कौतुहल हुआ । गणेशजी की कृपा से यह फल जानकर वह सुशीला के चरणों में गिर पड़ी और अपने किये पापों के लिये उससे कहा–हे बहन ! मुझे क्षमा करो, मैंने पाप किये हैं तू दयालु है । दोनों कुलों का उद्धार करने वाली है । तुम्हारे ऊपर गणेशजी की पूर्ण कृपा है अतः तुम्हें कोई कष्ट नहीं पहुँचा सकता । हे जननी ! प्राचीनकाल की कथा मैंने

तुम्हें सुना दी है, सो यह व्रत बहुत पुण्य देने वाला है ।

३. ज्येष्ठ मास गणेश चौथ व्रत कथा

श्री पार्वती ने अपने पुत्र गणेशजी से पूछा कि हे वत्स ! ज्येष्ठ के महीने में चतुर्थी को किसका व्रत और पूजन करना चाहिये ? श्री गणेशजी ने कहा कि ज्येष्ठ मास की चतुर्थी को मुषदन्त गणेश की पूजा और व्रत करना चाहिये यह चतुर्थी का व्रत और पूजा सौभाग्य को बढ़ाने वाला है । इस दिन घी से बने सामान का भोग लगाना चाहिये । प्राचीनकाल की इस व्रत की कथा को कहता हूं सो सुनो । बहुत समय पहले पृथु राजा के शासन काल में एक ब्राह्मण रहता था उसका नाम जयदेव था । उसके चार बेटे थे उन चारों की चार बहुएं थीं बड़ी बहू बचपन से ही यह व्रत करती थी । जब ज्येष्ठ का महीना आया तो बड़ी बहू ने अपनी सास से कहा कि मैं सदा से यह व्रत करती हूं इसलिये मुझे यह व्रत करने की आज्ञा देवें । बहू की इस बात को उसके श्वसुर ने सुन लिया । श्वसुर बोला कि बहू यह उम्र खाने पीने की है, इस उम्र में व्रत नहीं करना चाहिये, श्वसुर के कहने से बहू ने व्रत नहीं किया । कुछ समय बाद उस बहू के पुत्र हुआ । पुत्र के विवाह योग्य होने पर उसके माता पिता ने उसका विवाह रचाया । व्रत के टूट जाने से गणेशजी रुष्ट हो गये थे और विवाह के बाद पुत्र का अपहरण हो गया । पुत्र को न पाकर सब ओर हाहाकार मच गया । पुत्र की माता भी विलाप करके अपने श्वसुर से बोली कि आप ने मेरा व्रत छुड़ा दिया इससे कुपित होकर गणेशजी ने मेरे पुत्र का हरण कर लिया है । यह सुनकर उसका श्वसुर भी बहुत दुःखी हुआ । अब तो हर मास की चौथ को गणेशजी का व्रत सब लोगों ने करना आरम्भ कर दिया, कछ समय बाद गणेशजी एक गरीब ब्राह्मण के रूप में भिक्षा मांगने घर पर आये । भिक्षा मांगने पर जयदेव की बहू ने ब्राह्मण का पूजन सत्कार कर पेट भर उसे भोजन कराया, उसकी श्रद्धापूर्वक सेवा भावना से गणेशजी प्रसन्न हो गये और बोले मैं तुम्हारे पर बहुत प्रसन्न हूं । इच्छित वर मांगो जयदेव की पौत्र बहू ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि यदि हमारे ऊपर आप प्रसन्न हैं तो विवाह के तत्काल बाद खोये हुए मेरे पति को दिलाकर मुझे सौभाग्य प्रदान

करें । ब्राह्मण ने कहा कि तुझ पतिव्रता नारी की इच्छा शीघ्र पूर्ण होगी । कुछ दिनों बाद उसका पति घर पर आ गया । जयदेव की पौत्र बहू ने अपने पति को पाकर प्रसन्नता के साथ व्रत पूजन तथा माँगलिक कार्य सम्पन्न किए दोनों लोकों को कल्याण तथा सुख समृद्धि और सौभाग्य चाहने वालों को यह व्रत अवश्य करना चाहिए ।

४. आषाढ़मास गणेश चौथ व्रत कथा

पार्वतीजी ने अपने पुत्र से पूछा–कि हे वत्स ! आषाढ़ महीने की चतुर्थी को किसका व्रत पूजन करना चाहिये । श्री गणेशजी ने कहा कि आषाढ़ मास की चतुर्थी को लम्बोदर गणेश का पूजन करना चाहिये । इस व्रत की पूर्व-काल की कथा सुनाता हूँ, सो सुनो । प्राचीन समय में महिष्मती नामक नगरी में महीतीज नाम का राजा धर्मपूर्वक प्रजा पर शासन करता था । उसके एक भी सन्तान नहीं थी । सन्तान प्राप्ति के लिए उसने अनेक जप तप दान पुण्य किये किन्तु वृद्धावस्था तक पुत्र नहीं हुआ । तब राजा ने अपने राज्य के विद्वान् ब्राह्मणों तथा प्रजा लोगों को बुलाकर कहा कि हे विद्वानों तथा प्रजाजनों ! मैंने न्यायपूर्वक धर्माचरण के साथ निष्पक्ष भाव से प्रजा का पालन किया है किसी के साथ अन्याय न करते हुए पृथ्वी का ठीक प्रकार शासन किया है किन्तु मेरे सन्तान नहीं है, सन्तान प्राप्ति के लिए क्या करूं ।

लोमश ऋषि के कहने पर आषाढ़ मास की चौथ के व्रत के बाद रानी सुदक्षिणा के गर्भ धारण हुआ और दसवें मास उनके सुन्दर पुत्र रत्न हुआ । राजा ने पुत्र की खुशी से राज्य में बड़ा उत्सव मनाया निर्धन, दीन, हीनों को बहुत धन दिया गया । विद्वान् ब्राह्मणों को सत्कार पूर्वक द्रव्य भेंट किया गया । इस प्रकार सारे राज्य में राजा और प्रजा दोनों प्रसन्न हुए ।

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक श्री गणेश का चौथ का व्रत करता है, वह संकट से छूटकर अत्यन्त सुख प्राप्त करता है ।

५. श्रावण मास गणेश चौथ व्रत कथा

ऋषि ने स्वामी कार्तिकेय से पूछा कि समस्त दुःखों से छुड़ाने

वाला सुख सम्पत्ति और सौभाग्य बढ़ाने वाला कौन सा व्रत है । स्वामी कार्तिकेय ने कहा कि अनन्त पुण्य को देने वाला दुःख दरिद्रता को दूर करने वाला संतान और भाग्य को बढ़ाने वाला श्रावण मास की चतुर्थी का व्रत है । पहले समय में युधिष्ठर के पूछने पर श्री कृष्णजी ने जिस व्रत के लिए कहा उसका वर्णन करता हूँ सो सुनो । पुरातन समय में पार्वती ने पति की कामना से तप किया किन्तु शिवजी पर उनके तप का कोई प्रभाव नहीं हुआ । तब पार्वती ने श्री गणेश का ध्यान करके विनय की श्री गणेशजी ने आकर दर्शन दिये । श्री पार्वतीजी ने कहा कि मैंने शिवजी को पति के रूप में प्राप्त करने के लिये भयंकर तपस्या की किन्तु शिवजी मेरी तपस्या से प्रसन्न नहीं हुए । हे विध्न नाशक ! मुझे ऐसे व्रत का विधान कहिए जिसके करने से श्री शिवजी पति के रूप में मुझे प्राप्त होवें । श्री गणेशजी बोले हे मातेश्वरी ! श्रावण मास की चतुर्थी के दिन निराहर रहें और मेरा व्रत करके उदय होते हुए चन्द्रमा की पूजा करें । षोडशोपचार के पश्चात् १५ लड्डू गणेशजी को अर्पित करें । शेष लड्डू में से पाँच लड्डू दक्षिणा ब्राह्मण को अर्पित करें । पाँच लड्डू अर्ध चन्द्रमा को अर्पित करें और पाँच लड्डुओं को स्वयं खावें । अधिक खर्च न करना चाहें तो वही भोग लगाकर दही के साथ भोजन करें । श्रद्धा भक्ति के साथ प्रार्थना कर गणेशजी का विसर्जन करें । पण्डित विद्वान् ब्राह्मण को अन्न वस्त्र दक्षिणा आदि देकर अभिवादन कर उन्हें विदा करें । यह व्रत सदा ही अथवा कम से कम वर्ष भर अवश्य करें । एक वर्ष पूरा होने के बाद श्रावण कृष्ण चतुर्थी को व्रत का उद्यापन करें । जिसमें १०८ लड्डू रखें । कदलीफल आदि के द्वारा सुन्दर युक्त मंडप का निर्माण करें । पुरोहित ब्राह्मण की पत्नी को बुलाकर यथा शक्ति दक्षिणा देवें । इस प्रकार लोमश ऋषि ने विद्वानों को सम्बोधित कर कहा यदि राजा आषाढ़ मास की चौथ को लम्बोदर संकटहर्ता श्री गणेशजी का विधिपूर्वक पूजन और व्रत करें तो उनके निश्चयपूर्वक सन्तान होगी, लोमश ऋषि के वचन सुनकर राजा ने विद्वानों तथा प्रजाजनों का यथोचित सत्कार कर विनीत भाव से विदा दी । राजा ने बड़ी भक्ति भाव से चौथ का व्रत करना आरम्भ कर दिया । कुछ दिनों पत्नी

पृथक्-पृथक् वस्त्र अन्न पात्र आदि दक्षिणा के साथ देवें । पार्वती ने श्री गणेशजी द्वारा बताये हुए व्रत का विधि विधान के साथ बड़ी श्रद्धा के साथ वर्ष भर व्रत किया । इससे उन्हें पति के रूप में श्री शंकरजी प्राप्त हुए । हे राजन् ! यह व्रत संकटहर्ता है । इस व्रत को श्री युधिष्ठिर जी ने श्रीकृष्णजी के कहने से किया था जिससे उन्हें अखण्ड चक्रवर्ती राज्य प्राप्त हुआ ।

यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का देने वाला है । जो इस व्रत को करता है, उसकी समस्त कामनाएँ पूर्ण होकर वह अत्यन्त सुख भोगता है ।

६. भाद्रपदमास गणेश चौथ व्रत कथा

श्री पार्वती ने कहा–हे वत्स ! भाद्रपद मास की चतुर्थी को कौन-सा व्रत करना चाहिए सो कहिए ! श्री गणेशजी ने कहा हे माता ! भादों मास की चतुर्थी को व्रत महान् पुण्य को देने वाला है । यह सब प्रकार के दुःखों से रक्षा करने वाला है । इसे पूर्व विधि से करना चाहिए । मेरे इन विनायक, एकदन्त, कृष्णपिंग, गजानन्द, लम्बोदर, मालचंद, हेरम्ब, विकट, वक्रतुण्ड, आखुरथ, विघ्नराज, गणाधिप बारह नामों से बारह मास तक चन्द्रमा के उदय होने पर पूजा करें । इस व्रत की कथा का वर्णन करता हूँ सो सुनो ! पुरातन काल में अत्यन्त श्रेष्ठ नल नामक राजा था । उसके दमयन्ती नाम की रानी थी । भाग्यवशात् राजा और रानी राज्यभ्रष्ट हो गये और अनेकों दुःखों से पीड़ित होकर जंगल में विचरण करने लगे । दुःख के कारण एक दिन राजा नल अपनी रानी दमयन्ती को अकेले में सोती छोड़ कर चले गये । तब दमयन्ती ने इस व्रत को किया, जिससे उसे पुनः राजा नल प्राप्त हो गये । पार्वतीजी ने कहा–कि हे पुत्र ! रानी दमयन्ती ने इस व्रत को किस विधि से किया सो कहें । श्री गणेशजी ने कहा–माता, राजा नल पर जब विपत्ति आई तो सारा राज्य का खजाना खाली हो गया । राजा ने जुए में सब खो दिया । हाथी-घोड़े सब छिन गये । तब राजा नल और दमयन्ती असहाय अवस्था को प्राप्त होकर जंगल को चले गये । वहां पर दैव वश राजा और रानी भी बिछुड़ गये । राजा रानी अलग-अलग घूमने लगे । विचरण करते हुए एक समय

दमयन्ती को ऋषि शरभंग के दर्शन हुए। ऋषि शरभंग को दमयन्ती ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और विनम्र भाव से प्रार्थना की कि हे महर्षि ! मेरे पति को मुझसे वियोग हो गया है। मैं अपने पति से पुनः किस प्रकार मिल सकूं, ऐसा कोई उपाय बतायें। महर्षि शरभंग बोले–देवी तुम बड़ी श्रद्धा और भक्ति से भादों मास की चतुर्थी का व्रत किया करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे पति तुम्हें वापिस मिल जायेगा। गणेशजी बोले–हे माता ! महर्षि शरभंग के कहने पर दमयन्ती ने भादों मास की चतुर्थी को व्रत आरम्भ कर दिया। व्रत के प्रभाव से रानी का पति प्राप्त हो गये। राजा नल और उनकी रानी दमयन्ती पुनः अपना राज्य प्राप्त कर सुखपूर्वक रहने लगे। श्रीकृष्णजी ने कहा धर्मराज ! तुम भी यह व्रत करके गणेशजी की कृपा से अपना राज्य प्राप्त कर सुखपूर्वक रहो। यह व्रत संकट तथा दुःखों को दूर कर समस्त सुख देने वाला है।

७. आश्विनमास गणेश चौथ व्रत कथा

धर्मराज श्री युधिष्ठिरजी ने कृष्णजी से पूछा कि हे भगवान ! क्वार के महीने में चतुर्थी को कौन-सा व्रत करना चाहिए और उसकी क्या विधि है। श्रीकृष्णजी ने कहा कि धर्मराज ! पूर्वकाल में इसी प्रश्न के उत्तर में पार्वतीजी को श्री गणेशजी ने कहा था कि हे माता ! इस व्रत के दिन कृष्ण नामक गणेशजी का ध्यान व पूजन करना चाहिये। व्रतधारी को कम से कम उस दिन राग, द्वेष, काम, क्रोध आदि दोषों का त्याग कर देना चाहिए। इस दिन दूब और हल्दी मिले साकल्य से यज्ञ करना चाहिये। इस सम्बन्ध में जो कथा है वह सुनो। प्राचीनकाल में दैत्य-बाणासुर की पुत्री उषा ने स्वप्न में सुन्दर और बलिष्ठ अनिरुद्ध युवक को देखा और उस पर मोहित हो गई। नींद खुलने पर अनिरुद्ध को न पाकर वह बहुत दुःखी हुई। उसके दुःखी होने का कारण जानकर उसकी सहेली चित्रलेखा ने अनेक प्रसिद्ध मानवों के चित्र बनाये। तब अनिरुद्ध का चित्र देखकर उसने कहा कि मैंने इन्हीं को स्वप्न में देखा है। चित्रलेखा ने बताया ये तो अनिरुद्ध है जो श्रीकृष्णजी के पौत्र हैं। तब सहेली चित्रलेखा द्वारिका जाकर सायंकाल के समय अनिरुद्ध का अपहरण करके ले गई।

अनिरुद्ध के खो जाने से द्वारिका नगरी में शोक छा गया । पिता प्रद्युम्न और रुक्मिणी विलाप करने लगे । रुक्मिणी ने रोते हुए श्रीकृष्णजी से कहा कि हे नाथ अनिरुद्ध को ढूंढकर लाओ, अन्यथा मैं अपने प्राण त्याग दूंगी । रुक्मिणी के ऐसा कहने पर श्रीकृष्णजी ने उसे सांत्वना दी तथा स्वयं राजसभा में आकर महर्षि लोमश से सब वृत्तान्त कहा । महर्षि ने कहा–महाराज ! आप क्वार मास की चतुर्थी को श्री गणेशजी का व्रत करें तो आपका नाती पौत्रवधू सहित आपको प्राप्त हो जायेगा । श्रीकृष्णजी बोले–हे धर्मराज मैंने यह व्रत करके अपने पौत्र एवं पौत्रवधू को प्राप्त किया था । तुम भी विधिपूर्वक व्रत करके शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके अखण्ड चक्रवर्ती राज्य का सुखपूर्वक उपभोग कर सकोगे । युधिष्ठिर ने ऐसा ही किया तथा कौरवों पर विजय प्राप्त की ।

८. कार्तिक मास गणेश चौथ व्रत कथा

श्री पार्वतीजी ने कहा कि हे वत्स ! उत्तम मास कार्तिक में चतुर्थी को कौन-सा व्रत करना चाहिए ? श्री गणेशजी ने कहा हे जननी ! इस दिन विकट नामक गणेशजी का पूजन करना चाहिए । इस दिन उदय होते हुए चन्द्रमा को श्रद्धापूर्वक अर्घ्य देकर भोजन करना चाहिए इस व्रत के फल की एक कथा कहता हूँ सो सुनिये । प्राचीनकाल में अगस्त्य नाम के एक तपस्वी ऋषि थे । वे समुद्र के किनारे पर कठिन तप कर रहे थे । उस स्थान से कुछ दूर पर एक पक्षी अपने अण्डों को सेह रहा था इतने में ही समुद्र में ज्वार आया और उस पक्षी के अण्डे समुद्र के बहाव में बह गये । पक्षी को समुद्र पर बड़ा क्रोध आया और उसने समुद्र को सुखाने की प्रतिज्ञा कर ली । वह अपनी चोंच से समुद्र का जल भर-भर कर बाहर डालने लगा वर्षों तक ऐसा करने पर भी जब जल नहीं सूखा तो उसने दुःखी मन से अगस्त्य ऋषि से पास जाकर प्रार्थना की कि आप अपने तपोबल से इस समुद्र को सुखा देवें क्योंकि इसने मेरे अण्डों को नष्ट किया है । महर्षि ने जल को सुखाने का वचन दे दिया । समुद्र को सुखाने की चिन्ता करते हुए उन्होंने श्री गणेशजी का स्मरण करके कार्तिक मास संकट चतुर्थी का व्रत श्रद्धा के साथ तीन महीने तक किया, महर्षि अगस्त्य के व्रत से

श्री गणेशजी प्रसन्न हो गये और वर दिया कि तुम्हारे तीन आचमन करते ही समुद्र सुख जायेगा । महर्षि अगस्त्य ने ऐसा ही किया और समुद्र सूख गया । इस व्रत के प्रभाव से अर्जुन ने भी अपने शत्रुओं पर विजय पाई थी । श्रीगणेशजी से यह कथा सुनकर श्री पार्वतीजी बड़ी आनन्दित हुईं । श्री कृष्णजी बोले–हे धर्मराज ! तुम भी इस उत्तम व्रत को करो जिससे तुम्हारे मनोरथ पूरे हों । श्रीकृष्णजी की इस प्रकार आज्ञा पाकर धर्मराज ने कार्तिक मास की संकट चतुर्थी का व्रत किया जिसके प्रभाव से उन्हें अपना खोया राज्य पुनः प्राप्त हुआ ।

९. अगहन मास गणेश चौथ व्रत कथा

श्री पार्वतीजी बोलीं–हे वत्स ! मार्गशीर्ष की चतुर्थी को कौन-सा व्रत करना चाहिये । गणेशजी ने कहा हे मातेश्वरी ! मार्गशीर्ष मास में गजानन्द नामक गणेश का व्रत करना चाहिए उस दिन निराहार रहकर चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमा को अर्घ्य प्रदान करें । दिन में जौ, तिल, चावल के साकल्य से हवन करें और अर्घ्य देने के बाद भोजन करें । इस व्रत में कथा को पढ़ें अथवा सुनानी चाहिए । त्रेतायुग में महाराज दशरथ को श्रवणकुमार के पिता ने श्राप दिया था कि जैसे तुमने मेरे पुत्र को मारकर पुत्र वियोग से दुखी किया है वैसे ही तुम भी पुत्र के वियोग में तड़पकर करोगे महाराज दशरथ को पुत्र न होने से उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ किया जिससे चार पुत्र उत्पन्न हुए । सबसे बड़े का नाम राम था उनका विवाह सीताजी से हुआ था पिता की आज्ञा से राम को चौदह वर्ष का वनवास हुआ । उसके साथ सीता और लक्ष्मण भी गये । एक दिन रावण सीता का हरण कर ले गया । सीता के वियोग में दुखी होकर राम ढूंढ़ते हुए हुए ऋष्यमूक नामक पर्वत पर पहुंच गये वहां के राजा सुग्रीव से उन्होंने मित्रता की जिसने वानरों के साथ हनुमानजी को सीता को ढूंढने के कार्य में लगा दिया । सब वानर चारों ओर सीताजी की खोजन करने लगे । वन में घूमते हुए वानरों को सम्पाती मिला । सम्पाती से पूछा कि तुम कौन हो और इधर क्यों आये हो सब वानरों ने रावण द्वारा सीता का अपहरण और सीता की रक्षा में जटायु द्वारा अपने प्राण त्याग की घटना सुनाई । सम्पाती ने कहा कि मुझे दिव्य दृष्टि प्राप्त है । मुझे समुद्र के पार

राक्षसों की लंका नगरी में अशोक वृक्ष के नीचे बैठी हुई सीताजी दिखलाई पड़ रही हैं । हनुमान राम की कृपा से सीता को वहाँ से ला सकता है । श्री हनुमानजी से कहा कि तुम मार्गशीष मास की चतुर्थी को संकट नाशक श्री गणेशजी का व्रत करो । इस व्रत के प्रभाव से आप क्षणभर में समुद्र लांघकर सीताजी को खोजकर उन्हें ला सकोगे । हनुमानजी ने श्री गणेशजी का व्रत किया और समुद्र को लांघ कर राक्षसों से युद्ध कर सीताजी को ले आए । श्रीकृष्णजी ने धर्मराज से कहा कि तुम भी इसी प्रकार श्री गणेशजी का व्रत मार्गशीष की चतुर्थी को करो जिससे शत्रुओं से अपने राज्य को प्राप्त कर सको । श्री धर्मराज ने वैसा ही किया और शत्रुओं को हराकर अपना राज्य पुनः प्राप्त कर लिया ।

१०. पौष मास गणेश चौथ व्रत कथा

पार्वतीजी ने कहा–हे पुत्र ! यह बताओ कि पौष के महीने में चतुर्थी को कौन सा व्रत करना चाहिए । श्री गणेशजी ने कहा कि हे माँ पौष की चतुर्थी को लम्बोदार नामक गणेश का व्रत करना चाहिए । इस दिन निराहार रहें और केवल गोमूत्र पीएं व खीर से हवन करें । पुरातनकाल में त्रेतायुग में रावण ने स्वर्ग के देवताओं को अपने वश में कर लिया । बालि नामक राजा को भी संध्या करते समय पीछे से पकड़ लिया । बालि ने अपने बल से रावण को अपनी काँख में दबा लिया और किष्किन्धा नामक अपनी नगरी में ले आया । वहां बालि ने अपने बलवान पुत्र अंगद को खेलने के लिए खिलौने के समान रावण को दे दिया । अंगद उसे खिलौना समझ पशु की भांति उसके गले में रस्सी बाधंकर खेलने लगा । कभी रावण को इधर कभी उधर घुमाने लगा । रावण की इस दशा को देखकर किष्किन्धा की प्रजा खूब हंसी करती थी । रावण ने इस दुःख से छुटकारा पाने के लिए अपने पितामह पुलस्त्य का स्मरण किया । पुलस्त्य ने रावण के पास पहुंच कर कहा कि तुमने मुझको क्यों याद किया है । रावण बोला–मैं बहुत दुखी हूं, मुझे सारी प्रजा धिक्कारती है । अब आप ही मेरी रक्षा करें । पुलस्त्य ने कहा–कि रावण तुझे अभिमान हो गया था । अभिमानी व्यक्ति की यही दशा होती है तूने इस बालि पर भी

अभिमान के कारण आक्रमण किया था किन्तु यह बालि देवराज इन्द्र की कृपा से उत्पन्न है । श्रीराम द्वारा इसकी मृत्यु होगी । हे दानवराज ! तुम अपने बन्धन से छुटने के लिए पौष मास की चतुर्थी को विघ्नहर्ता श्री गणेशजी का पूजन और व्रत करो । प्राचीन काल में वृषासुर वध के पाप से मुक्त होने के लिए इन्द्र ने भी इसी व्रत को किया था । हे दानवराज ! यह व्रत सबसे श्रेष्ठ व्रत है । समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला है । इस प्रकार रावण को समझा कर पुलस्त्य बन को चले गये । रावण ने श्रद्धा और भक्ति के साथ गणेशजी का व्रत किया । फलस्वरूप बालि के बंधन से छूटकर अपने राज्य को प्राप्त किया और अखंड सुख का भोग किया । श्रीकृष्णजी ने कहा कि हे धर्मराज ! तुम भी इस व्रत का अनुष्ठान करो और अपने राज्य को प्राप्त करो । धर्मराज ने ऐसा ही किया जिससे राज्य को पुनः प्राप्त किया ।

११. माघ मास गणेश चौथ व्रत कथा

पार्वतीजी ने कहा कि हे वत्स माघ की चतुर्थी को किसका व्रत और पूजन करना चाहिए सो बताइये । श्री गणेशजी ने कहा कि हे जननी ! माघ मास की चतुर्थी को भालचन्द्र की षोडशोपचार करके पूजा करें पूजा के बाद तिल के लड्डू बनाकर श्री गणेशजी को भोग लगावें । प्रसाद वितरण कर इन्हीं लड्डुओं को खावें । इस व्रत की एक कथा सुनाता हूँ तो सुनो । सतयुग में महान् धर्मात्मा सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र राज्य करते थे । उनके राज्य में ऋषिशर्मा नामक एक ब्राह्मण रहता था । उनके एक छोटी आयु का बालक था । कुछ समय बाद ऋषिशर्मा का देहान्त हो गया । विधवा ब्राह्मणी अपने सुख के दिनों को जैसे तैसे बिताकर अपने बालक का पालन करने लगी । वह ब्राह्मणी गणेश चतुर्थी का सदा व्रत करती थी । एक दिन ब्राह्मणी का पुत्र गणेश की प्रतिमा को लेकर खेलने चला गया एक पापी कुम्हार ने किसी के कहने पर उस ब्राह्मणी के पुत्र को आवां में बंद कर आग लगा दी । बालक जब घर नहीं पहुँचा तो ब्राह्मणी विलाप करती हुई गणेशजी से प्रार्थना करने लगी–हे संकटरक्षक भक्तों की पुकार सुनने वाले गणेश मुझे मेरा पुत्र प्राप्त कराओ । मैं आपकी शरण में हूं ।

यदि मुझे पुत्र नहीं मिला तो मैं प्राण त्याग दूंगी । सवेरा होने पर जब कुम्हार ने अपना आवां देखा तो उसमें कटि पर्यन्त जल में बालक को खेलते हुए देखा तो कुम्हार को बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने राजा हरिश्चन्द्र के पास जाकर कहा कि राजन् ! मैंने घोर पाप कर्म किया है मेरा वध किया जावे । मैंने आवां पकाने के लिए आग लगाई थी किन्तु बर्तन पके नहीं तब किसी दुष्ट ने कहा कि आवें में किसी बालक की बलि दोगे तब तुम्हारा आवां पकेगा । मैंने एक बालक को आवें में दबाकर आग लगा दी किन्तु जब आवें को खोलकर देखा तो कमर तक जल में यह बालक खड़ा हुआ खेल रहा था । यह समाचार सुनकर वहाँ ब्राह्मणी आ गई और अपने बालक को उठाकर छाती से लगा लिया । राजा ने ब्राह्मणी से पूछा हे साध्वी ! तेरा बालक अग्नि में जला क्यों नहीं ? तू ऐसा कौन-सा जप-पूजन या व्रत करती है जिसके प्रभाव से बालक जीवित है । ब्राह्मणी ने कहा–राजन् ! मैं कोई विद्या या मन्त्र आदि नहीं जानती हूँ, न कोई तप करती हूँ । मैं तो केवल दुखहर्ता गणेशजी का पूजन और व्रत करती हूँ । इसी व्रत के प्रभाव से तथा श्री गणेशजी की कृपा से मेरा पुत्र मुझे प्राप्त हो गया । राजा ने सारी प्रजा को इस व्रत के करने की आज्ञा दी, सारी प्रजा बड़ी श्रद्धा के साथ इस व्रत को करने लगी । कृष्णजी ने धर्मराज से कहा कि तुम भी इस व्रत को किया करो जिससे तुम्हारी सारी कामनाएं पूरी होवें और अपने राज्य को प्राप्त कर सुख का भोग करो । श्री युधिष्ठिर ने वैसा ही किया जिससे उनका राज्य प्राप्त हो गया ।

१२. फाल्गुनमास गणेश चौथ व्रत कथा

पार्वतीजी ने कहा हे वत्स ! फाल्गुन मास में चतुर्थी को कौन-सा व्रत और पूजन करना चाहिए सो बतलायें । गणेशजी ने कहा–हे मातेश्वरी ! फाल्गुन महीने की चतुर्थी को हरम्ब गणेश की पूजा और व्रत करना चाहिए । उस दिन हवन में गुलसरल की समिधाओं का प्रयोग करें । कनेर के फूल और खीर मिलाकर साकल्य बनावें उसको स्वाहा उच्चारण कर आहुति देवें । इसकी कथा सुनाता हूँ सो सुनो । सतयुग में युवनाश्व नामक राजा धर्म परायणता के साथ राज्य करता था । उसके राज्य में विष्णुशर्मा नामक एक विद्वान् रहता

था । उसके सात पुत्र थे । सातों पुत्र अपनी बहुओं के साथ अलग-अलग रहते थे । विष्णुशर्मा प्रतिदिन अलग-अलग पुत्रों के यहाँ भोजन कर जीवन बिताते थे । बहुयें अपने ससुर का आदर के स्थान पर तिरस्कार करती थीं । एक दिन फाल्गुन मास की चतुर्थी आई तो उस दिन गणेश चौथ का व्रत करके वह अपनी बड़ी पुत्र वधू के घर पर गया और बोला—मेरा गणेश चौथ का व्रत है, इसलिए पूजा का सामान दे दो । बड़ी बहू बोली—तुम्हारे व्यर्थ काम के लिए मुझे समय नहीं है इसी प्रकार छः बहुओं ने बारी-बारी से ससुर का अपमान किया अन्त में वह सबसे छोटी बहू के पास गया ओर गणेशजी के पूजन का सामान मांगा । बहू ने विनम्र भाव से कहा आप बैठिए मैं अभी पूजा की सामग्री आपको देती हूं । छोटी बहू पूजन का सामान लेकर आई और बहू ने श्वसुर के साथ मिलकर बड़ी श्रद्धा के साथ गणेश जी का पूजन किया छोटी बहू ने ससुर को आदरपूर्वक भोजन कराया और स्वयं भूखी रही । रात को विष्णुशर्मा को वमन हो गई और साथ ही दस्त भी होने लगे और शरीर मलमूत्र हो गया यह देखकर बहू ने अपने ससुर के वस्त्र एवं शरीर को जल से साफ किया और जागकर सारी रात ससुर की सेवा की । गणेशजी की कृपा से सवेरे ही श्वसुर की तबियत ठीक हो गई ।

गणेशजी की कृपा से छोटी बहू के घर में धन ही धन हो गया । दूसरी बहुओं ने जब छोटी बहू के घर में धन को ठाट देखा तो छोटी बहू से इसका कारण पूछा । छोटी बहू ने कहा कि मैंने फाल्गुन मास की चतुर्थी को गणेशजी का व्रत और पूजन किया । गणेशजी की कृपा का ही यह फल है । यह जानकर अन्य बहुओं ने भी यह व्रत किया और धन को प्राप्त किया । श्रीकृष्ण जी ने कहा कि हे राजन ! तुम भी यह व्रत करो जिससे तुम्हें भी उत्तम फल प्राप्त होवे । धर्मराज ने वैसे ही गणेशजी का व्रत किया जिससे उन्हें उनका राज्य प्राप्त हो गया ।

विघ्ननाशक गणपति स्तोत्र

परं धाम परं ब्रह्म परेशं परमीश्वरम् ।
विघ्ननिघ्नकरं शान्तं पुष्टं कान्तमनन्तकम् ॥
सुरासुरेन्द्रैः सिद्धेन्द्रैः स्तुतं स्तौमि परात्परम् ।
सुरपद्मदिनेशं च गणेशं मंगलायनम् ॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं विघ्नशोकहरं परम् ।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय सर्वविघ्नात् प्रमुच्यते ॥

अर्थ—जो परम धाम, परब्रह्म, परेश, परम ईश्वर, विघ्नों के विनाशक, शान्त, पुष्ट, मनोहर और अनन्त है । प्रधान-प्रधान सुर, असुर और सिद्ध जिनका स्तवन करते हैं । जो देवरूपी कमल के लिए सूर्य और मंगलों के लिए आश्रय स्थान हैं । उन परात्पर गणेश की मैं स्तुति करता हूँ ।

यह उत्तम स्तोत्र महान् पुण्यमय विघ्न और शोक को हरने वाले हैं । जो प्रातःकाल इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह सदा विघ्नों से मुक्त हो जाता है ।

पुत्र प्राप्ति के लिए
गणपति स्तोत्र

नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धिबुद्धियुताय च ।
सर्वप्रदाय देवाय पुत्रवृद्धिप्रदाय च ॥
गुरुदराय गुरवे गोप्त्रे गुह्यसिताय ते ।
गोप्याय गोपिताशेषभुवनाय चिदात्मने ॥
विश्वमूलाय भव्याय विश्वसृष्टिकराय ते ।
नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शुण्डिने ॥
एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः ।
प्रपन्नजनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने ॥
शरणं भव देवेश संतति सुदृढ़ां कुरु ।
भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक ॥
ते सर्वे तव पूजार्थे निरताः स्युर्वरो मतः ।
पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥

अर्थ—सिद्धि-बुद्धि सहित उन गणनाथ को नमस्कार है, जो पुत्रवृद्धि प्रदान करने वाले तथा सब-कुछ देने वाले देवता हैं । जो भारी पेट वाले (लम्बोदर), गुरु (ज्ञानदाता), गोप्ता (रक्षक), गुह्य (गूढ़स्वरूप) तथा सब ओर से गौर हैं । जिनका

स्वरूप और तत्व गोपनीय है तथा समस्त भुवनों के रक्षक हैं, उन चिदात्मा आप गणपति को नमस्कार है । जो विश्व के मूल कारण, कल्याण स्वरूप, संसार की सृष्टि करने वाले, सत्यरूप तथा शुण्डाकारी हैं । जिनके एक दाँत और सुन्दर मुख हैं, जो शरणागत, भक्तजनों के रक्षक तथा प्रणतजनों की पीड़ा का नाश करने वाले हैं, उन शुद्धस्वरूप आप गणपति को बारम्बार नमस्कार है । देवेश्वर ! आप मेरे लिए शरणदाता हो । मेरी संतान-परम्परा को सुदृढ़ करें । गणनायक ! मेरे कुल में जो पुत्र हो, वे सब आपकी पूजा के लिए सदा तत्पर हों । यह वर प्राप्त करना मुझे इष्ट है ।

यह पुत्रदायक स्तोत्र समस्त सिद्धियों को देने वाला है ।

लक्ष्मी प्राप्त करने के लिए गणपति स्तोत्र

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्वसौख्यप्रदायिने ।
दुष्टरिष्टविनाशाय पराय परमात्मने ॥
लम्बोदरं महावीर्यं नागयज्ञोपशोभितम् ।
अर्धचन्द्रधरं देवं विघ्नव्यूह विनाशनम् ॥
ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः ।

सर्वसिद्धिप्रदोऽसि त्वं सिद्धिबुद्धिप्रदोभव ॥
चिन्तितार्थप्रदस्त्वं हि सततं मोदकप्रियः ।
सिन्दूरारुणवस्त्रेश्च पूजितो वरदायकः ॥
इदं गणपतिस्तोत्र यः पठेद् भक्तिमान् नरः ।
तस्य देहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुञ्चति ॥

अर्थ—सम्पूर्ण सुख प्रदान करने वाले सच्चिदानन्द स्वरूप विघ्नराज गणेश को नमस्कार है । जो दुष्ट अरिष्टग्रहों का नाश करने वाले परात्पर परमात्मा हैं, उन गणपति को नमस्कार है । जो महापराक्रमी, लम्बोदर, सर्पमय, यज्ञोपवीत से सुशोभित अर्धचन्द्रधारी और विघ्न व्यूह का विनाश करने वाले हैं । उन गणपतिदेव की मैं वंदना करता हूँ । ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्ब को नमस्कार है । भगवन् ! आप सब सिद्धियों के दाता हैं । आप हमारे लिए सिद्धि-बुद्धिदायक हैं । आपको सदा ही मोदक प्रिय है । आप मन द्वारा चिन्तित अर्थ को देने वाले हैं । सिन्दूर और लाल वस्त्र से पूजित होकर आप सदा वर प्रदान करते हैं । जो मनुष्य भक्तिभाव से युक्त हो गणपति स्तोत्र का पाठ करता है, स्वयं लक्ष्मी उसके देह-गेह को नहीं छोड़ती ।

॥ श्री गणेश चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

जय गणपति सद्गुण सदन ।
करि वर बदन कृपाल ॥
विघ्न हरण मंगल करण ।
जय जय गिरिजालाल ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय गणपति गणराजू ।
मंगल भरण करण शुभ काजू ॥
जय गज बदन सदन सुख दाता ।
विश्व विनायक बुद्धि विधाता ॥
वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन ।
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ॥
राजत मणि मुक्तन उर माला ।
स्वर्ण मुकुट शिर नयनविशाला ॥
पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं ।
मोदक भोग सुगन्धित फूलं ॥
सुन्दर पीताम्बर तन साजित ।
चरण पादुका मुनि मन राजित ॥
धनि शिव सुवन षड़ानन भ्राता ।

गौरी ललन विश्व विख्याता॥
ऋद्धि सिद्धि ब चंवर सुधारे ।
मूषक वाहन सोहत द्वारे॥
कहौं जन्म शुभ कथा तुम्हारी ।
अति शुचि पावन मंगल कारी॥
एक समय गिरिराज कुमारी ।
पुत्र हेतु तप कीन्हों भारी॥
भयो यज्ञ जब पूर्णा अनूपा ।
तब पहुंच्यो तुम धरि द्विज रूपा॥
अतिथि जानि के गौरी सुखारी ।
बहु विधि सेवा करी तुम्हारी॥
अति प्रसन्न ह्वै तुम वर दीन्हा ।
मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा॥
मिलहिं पुत्र तुहि बुद्धि विशाला ।
बिना गर्भ धारण यहि काला॥
गण नायक गुण ज्ञान निधाना ।
पूजित प्रथम रूप भगवाना॥
अस कहि अन्तर्ध्यान रूप ह्वै ।
पलना पर बालक स्वरूप ह्वै॥
बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना ।
लखि मुख-सुख नहिं गौरी समाना॥
सकल मगन मुख मंगल गावहिं ।
नभ ते सुरन सुमन वर्षावहिं॥

शम्भु उमा बहुदान लुटावहिं ।
सुर मुनिजन सुत देखन आवहिं ।।
लखि अति आनन्द मंगल साजा ।
देखन भी आए शनि राजा ।।
निज अवगुण गुनि शनि मनमाहीं ।
बालक देखन चाहत नाहीं ।।
गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो ।
उत्सव मोर न शनि तुहि भायो ।।
कहन लगे शनि मन सकुचाई ।
का करिहौं शिशु मोहि दिखाई ।।
नहिं विश्वास उमा उर भयऊ ।
शनि सों बालक देखन कह्यउ ।।
पड़तहिं शनि दृग कोण प्रकाशा ।
बालक सिर उड़ि गयो अकाशा ।।
गिरिजागिरी विकल ह्वै धरणी ।
सो दुख दशा गयो नहिं बरणी ।।
हाहाकार मच्यो कैलाशा ।
शनि कीन्हों लखि सुत का नाशा ।।
तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाये ।
काटि चक्र सो गजशिर लाये ।।
बालक के धड़ ऊपर धारयो ।
प्राण मन्त्र पढ़ि शंकर डारयो ।।
नाम 'गणेश' शम्भु तब कीन्हें ।

प्रथम पूज्य बुद्धि निधि वर दीन्हें॥
बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा।
पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा॥
चले षडानन मरमि भुलाई।
रचे बैठि तुम बुद्धि उपाई॥
चरण मातु पितु के धर लीन्हें।
तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें॥
धनि गणेश कहि शिव हिय हर्ष्यो।
नभ ते सुरन सुमन बहुत वर्ष्यो॥
तुम्हारी महिमा बुद्धि बड़ाई।
शेष सहस मुख सके न गाई॥
मैं मतिहीना मलीन दुखारी।
करहुं कौन विधि विनय तुम्हारी॥
भजत 'राम सुन्दर' प्रभु दासा।
लग प्रयाग ककरा दुर्वासा॥
अब प्रभु दया दीन पर कीजे।
अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजे॥

॥ दोहा ॥

श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै धर ध्यान।
नित नव मंगल गृह बसै, लहै जगत सनमान॥
सम्बन्ध अपन सहस्त्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।
पूरण चालीसा भयो, मंगल मूर्ति गणेश॥

॥ इति श्री गणेश चालीसा ॥

श्री गणेश जी की आरती

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ ।
निर्विघ्न कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता थारी पार्वती पिता महादेवा ॥
धूप चढ़े बेल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डुवन का भोग लगे सन्त करे सेवा ॥
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता थारी पार्वती पिता महादेवा ॥
एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी ।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूषक की सवारी ॥
अन्धन को आंख देत कोढ़ियन को काया ।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता थारी पार्वती पिता महादेवा ॥

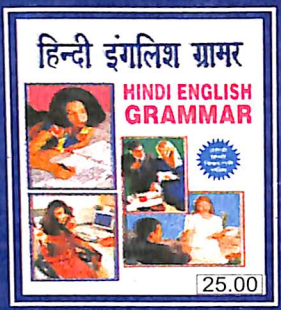

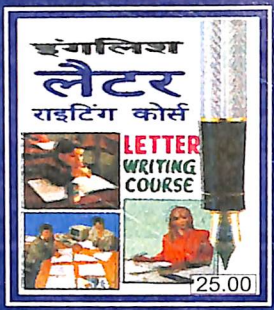

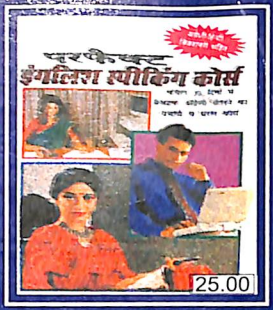

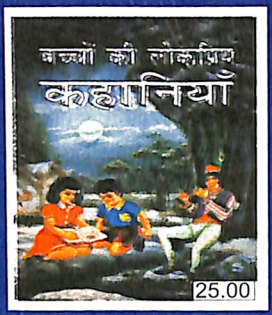

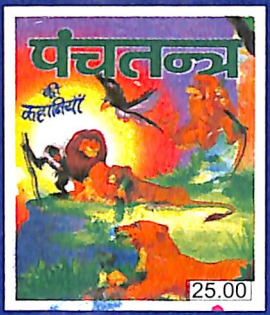

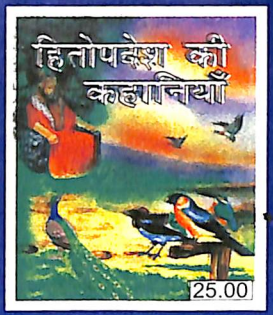

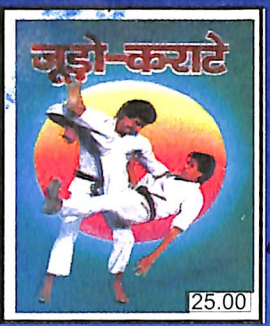

डाकखर्च 5.00 प्रति पुस्तक अतिरिक्त। चार पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 100.00 में भेजी जायेंगी।

निकटतम बुक-शाप से खरीदें ना मिलने पर वी.पी.पी. द्वारा हमसें मंगवाए।

आहूजा प्रकाशन

महावीर मार्किट, 1528-29, नई सड़क, दिल्ली-110006